श्री

तर्जुमा

"हिन्टस ऑन डिराइविंग"

मुअल्लिफ़ः

कपतान सी. मोरले नाइट साहब,
आर. ए.

हस्ब ईमा श्री श्री श्री १०५ श्री श्री महाराज कुमार श्री भूपाल सिंहजी साहब बहादुर उदयपुर-मेवाड़ राजपुताना—हर बख़्श इन-चार्ज दरबार व मेहमानख़ाने के वास्ते फ़वायद आम किया.

———:0:———

मिशन प्रेस अजमेर में छपा.

॥ श्री ॥

अर्पण पत्रिका.

हुजूर श्री श्री श्री १०५ श्री श्री महाराज कुमार श्री भोपाल सिंहजी साहब बहादुर, उदयपुर मेवाड़—इलमे अखलाक़ और "साइन्स" वग़ैरा की कुतब बीनी, फ़ौजी क़वायद, घोड़े के मुतासिक़ ज़ीन सवारी करतब चोकड़ी, टैन्डम, हांकने और बड़ी शिकार का दिली शौक़ रखते हैं—खास दस्ते मुबारक से छोटी उमर में ही सोनेरी शेर, तेंदुवे, सांभर वग़ैरा के शिकार हो चुके हैं, और नीज़ मुआमलाते रियासत, महकमेजात, कारखानेजात वग़ैरा में खास तवज्जो फ़रमाते हैं—हुजूर के औसाफ़ बयान करने में यह नाचीज़ कि जिसको पचीस साल से क़दमों की खिदमत का ऐज़ाज़ हासिल है, क़लम को आजिज़ पाकर महान कवी फ़तह

करनजी के एक दोहरे पर ही इक्तिफ़ा करता है।

॥ दोहा ॥

नीति निपुन ग्राहक सुगन वय लघू बुद्धि विशाल।
महाराज के यह कुमर सुव-भूषण भूपाल॥

चूंकि हुज़ूर बहमै सिफ़ात् मौसूफ़ हैं—इसलिये कमतरीन भी अपने को ख़ुश क़िस्मत समझकर यह किताब, तरजुमा "हिंट्स आन डिराविंग," व अदब दस्त बस्ता पेश कश करता है।

खाकसार हरबख्श.

॥ श्री ॥

दीबाचा—अज़ तरफ़ मुतरज्जिम.

—:o:—

सब से पहले मैं श्री श्री श्री श्री श्री १०८ श्री श्री श्री आर्य कुल कमल दिवाकर हिन्दू सूर्य महाराना फ़तह सिंहजी साहब बहादुर वालये उदयपुर मेवाड़ को हमेशा तरक़्क़ीये उम्र और इक़्बाल के लिये दस्त बदुआ हूं जिनके अहद में यह अहक़र अच्छे अच्छे नामवर उसतादों के बग्गी हांकने और घोड़ों को सिखाने के क़ायदों को किसी क़दर समझने के क़ाबिल हुवा, और जिनके औसाफ़ हमीदा बयान करना मेरे लिये छोटा मुंह बड़ी बात है, लेकिन महान कवी फ़तह करनजी के कि जो मेरे उसताद हैं एक दोहरे को नाज़रीन मुश्ते नमूना अज़ खरवारे का मिसदाक़ तसव्वुर फ़रमावें—

॥ दोहरा ॥

बणौ रीभ थोड़ो घमंड चित सुध सरलौ चाल।
दीन सहायक काछ दृढ महाराणा फ़तमाल॥

"हिन्टस आन डिराविंग" कि जिसका यह तरजुमा है, कप्तान मोरले नाइट साहब आर. ए. की तसनीफ़ है; फ़न्ने हांकने में साहब ममदूह ने दरया को कूजे में बंद किया है—जहां तक मैं खयाल करता हूं, कोई दक़ीक़ा बाक़ी नहीं रखा, मुझको इस फ़न सीखने का शौक़ बचपन से है, और मुख़तलिफ़ साहिबों से सीखता भी रहा; क़रीब क़रीब तीन सौ घोड़े इस अहक़र के हाथ से निकले. घोड़ों की शुरू तरबियत में कप्तान हे साहब की तसनीफ़ "हार्स बिरेकिंग" ने कामयाबी के साथ बहुत मदद दी—मगर हांकने के क़ायदों से उस वक़्त पूरे तौर से वाक़िफ़ न होने के सबब अकसर घोड़ों की शायस्तगी क़ायम रखने में बहुत दिक़्क़तें पेश आईं, यहां तक कि बाज़ घोड़े काम देने के क़ाबिल

नहीं समझे गये लेकिन अब मुतवातिर तजरुबों और नामी उस्तादों से सीखने से मालूम हुवा कि दर असल हांकने के क़ायदों के अमल दरामद में हमारी ही तरफ़ से फ़रोगुज़ाश्त रही, वरना जानवर का कोई क़सूर साबित नहीं हुवा; ज़ियादातर ऐसेही लोग देखने में आये जिन्हों ने अपने अपने मुहावरे के मुवाफ़िक़ अपने ख़ास क़ायदे मुक़र्रर किये हैं, जिनके अमल दरामद से वह लोग ख़ुद ही ना-कामयाब होते हैं—ऐसी हालत में मेरा इतमीनान न होना तअ़ाजुब नहीं है, ग़रज़ मैं किसी कामिल उस्ताद की तलाश में ही रहा, "जीइन्दा याबिन्दा"-श्री श्री श्री १०५ श्री श्री महाराज कुमार श्री भोपाल सिंह जी साहब बहादुर ने यह बेश बहा किताब अ़ता फ़रमाई और हस्ब ईमा मैं ने इसका तरजुमा उरदू ज़बान में किया क्योंकि मैंने बहुत अरसे तक ख़ूब तलाश

किया मगर कोई किताब हिन्दुस्तानी ज़बान में बग्गी हांकने के क़ायदों की नहीं मिली चूंकि यह फ़न भी क़दीम है—मगर फ़ी ज़मानः इसकी बहुत ज़रूरत है—मैंने इस किताब के क़ायदों का पाबंद रहकर तीस साल के तजरुबे के बाद भी जो जो नुक़्स मुझ में रह गये थे पूरे करने की कोशिश की-हुज़ूरे आली वक़्तन फ़वक़्तन मुझको घोड़े भी दुरुस्त करने के लिये बख़्शते रहे जिससे मैंने न सिर्फ़ अपना फ़र्ज़ ही अदा किया बल्कि अपना महावरा क़ायम रख कर मैंने हत्तुल मक़दूर तरक़्क़ी की—मैं हुज़ूर की तरक़्क़ीये उम्र और इक़बाल के हक़ में ता ज़ीस्त दिलोजान से दुआगो रहूंगा कि मेरे बाद भी इस किताब के सिवा जब तक कि यह मौजूद रहेगी मुझको याद किये जाने का और कोई ज़रिया न होगा क्योंकि कुल अज़ीज़ मुझे हमेशा के लिये तनहा और बे तोशा छोड़गये हैं-अब मैं

दुआई,-या शैर हवाले क़लम करके इस मज़मून को मुख़्तसिर करता हूं।

॥ शैर ॥

इलाही वख़्ते तो बेहार बादा।
तुरा दौलत हमेशा यार बादा॥

मेरी तहसील भी महदूद है—इसलिये जनाब जी. सी. ई. वेकफ़ील्ड साहब बहादुर मोहतमिम हद्बस्त और सुपर-इंटेन्डेन्ट आबपाशी मेवाड़ ने, कि जो अंगरेजी में तो अहले ज़बान हैं ही मगर हिन्दी, उर्दू, ज़ीन, सवारी, बग्गी हांकना घोड़ों के मुआलजे और शनाख़्त वग़ैरा में बहुत बड़ा दख़ल रखते हैं—शुरू से आखिर तक इस किताब के तरजुमे में मदद देने की तकलीफ़ गवारा की—और महान कवी फ़तह करणजी जो संस्कृत के बड़े भारी पंडित और कवी हैं, ऊंट के फेरने में मेरे उस्ताद हैं, इन्होंने भी घोड़ों के मुताल्लिक़ बहुत से नुकते बतलाये, आप घोड़ों में भी खूब समझते हैं और शह-सवार भी हैं—मैं परमेश्वर से दुआ मांगता हूं कि मेरे मुरब्बियों और

मोहसिनों को तरक्कीयें उम्र और दौलत अता करे—

मैं उम्मेद रखता हूं कि नाज़रीन मेरे मज़मून को ख़ुशामदाना या ख़ुद की तारीफ़ाना लिबास में समझ कर नज़र अंदाज़ न फ़रमावें क्योंकि मैंने अमरे वाक़ई की सीधी और पुख़्ता सड़क को नहीं छोड़ा है—साहबे कमाल और अहले फ़न से अरज़ परदाज़ हूं कि जहां ग़लती पावें इसला फ़रमावें और कोई नये क़ायदे महरबानी फ़रमा कर मुझे लिखें (क्योंकि हनोज़ मेरे सीखने के लिये बहुत बाक़ी है, अगर उमर ने वफ़ा की) ताकि मुझको ग़लतियां दुरस्त करने और नये क़ायदे दरज करने का दूसरी तालीफ़ में मौक़ा मिले, उम्मेद कि नाज़रीन इस किताब को ख़रीदारी में मदद देकर बहुत से मज़मून घोड़ों के मुताल्लिक़ जोकि मैंने जमा किये हैं, दूसरे नुसख़े में तालीफ़ करने की हिम्मत दिलावेंगे।

तरजुमा सारटीफ़िकेट.

———:o:———

यह किताब हुज़ूरे पुरनूर महा-राजकुमार साहब बहादुर उदयपुर (मेवाड़) की तरफ़ से हरबख़्श को उस कोशिश के सिले में इनाम दी गई है जोकि उसने एक जोड़ी अरबी घोड़ों के सिखलाने और उनके हांकने में ज़ाहिर की.

यह एक ऐसा काम था कि जिसके बसहूलियत होने की उम्मेद न थी लेकिन हरबख़्श ने इस में निहायत आसानी के साथ कामयाबी हासिल की.

(ह:) फ़तहलाल चूंडावत,

उदयपुर:
पहली मार्च १९०६ ई.

अतालीक हुज़ूरे पुरनूर,
महाराज कुमार साहिब बहादुर.

बाबू हरबख्श ने—अलावा अपनी खिदमाते मनसबी के यहां सरकारी पायगाह का बहुत काम किया—एक जोड़ी अरब नर घोड़ों की इसने बग्गी में निकाली—जिनमें से एक घोड़ा बड़ा लड़ाकू था—और दूसरे घोड़े जो बग्गी में ऐब करते थे-उनको भी अच्छी तरह दुरुस्त किये—सात आठ आदमियों को बाक़ायदा जोड़ी—चोकड़ी हांकना सिखलाया—जो अब उमदा काम दे रहे हैं—सरकारी घोड़ों के अलावा इसने बहुत से सरदार उमराव साहब लोगों के घोड़े घोड़ियां—जोड़ी इक्के में निकालीं—जो उमदा काम देते हैं॥

यह शख्स बड़ा ईमानदार और मेहनती है—अपने काम को जानो दिल से अंजाम देता है॥

इस रियासत में यह शख्स पच्चीस साल का मुलाज़िम है—बारह साल से

अफ़सरे सरबराह साहब लोगों के काम को बरज़ामंदी अंजाम देने से इसने उमदा २ सनदें हासिल कीं—हिज़ रायल हाईनेस प्रिन्स आफ़ वेल्स ने इसको एक घड़ी अता फ़रमाई—और जो साहब लोग महमाने रियासत हुए—इसके इन्तिज़ाम पर अपनी खुशनूदियां ज़ाहिर कीं—फ़क़त॥

बमूजिब हुक्म हुज़ूरे पुरनूर
जनाब महाराज कुमार
साहब बहादुर,
उदयपुर मेवाड़.

द: फ़तहलाल उदावत,

उदयपुर:
ता. १ जुलाई सन् १९०८ ई.

प्राइवेट सेक्रेटरी.

इत्तलाह चिट्ठी मेजर ए. एफ़. पिनहे साहब सी. आई. ई. रज़ीडेंट

मेवाड़-उदयपुर-वाक़ै २७ अगस्त सन् १९०६ ई.

हर बख़्श हर तरह की लियाक़त रखता है—घोड़ों को सिखा सकता है—और सब तरह के काम कर सकता है॥

द: ए. एफ़. पिनहे, मेजर.

उदयपुर, १८ जनवरी सन् १९०४ ई.

अतिये जनाब कप्तान सी. ट्रेञ्च साहब बहादुर क़ायम मुक़ाम रेज़ीडेन्ट मेवाड़, बनाम बाबू हरबख़्श—कि ज़िसने मुझको चौकड़ी हांकना जिस क़दर कि मैं जानता हूं सिखाने में बहुत तकलीफ़ उठाई—मैं ख़याल करता हूं कि बाबू हरबख़्श के सिवा आज तक मैंने ऐसा आदमी नहीं देखा जो घोड़े हांकने और बग्गी के लिये घोड़े सिखाने में सच्ची मोहब्बत रखता हो—बस्तसन दूसरा अमर याती घोड़े सिखाने के

काम के लिये उसकी दो सिफ़तें इत्तफ़ाक़ ख़ास, और दादे इलाही उसको मौज़ूं करती हैं.

उदयपुर :
नवम्बर १६, सन् १९०७ ई. } द: आर. सी. ट्रेञ्च.

उदयपुर-चित्तोड़ रेलवे,
दफ़तर मैनेजर साहब
जून ९ सन् १९०८.

मैं बाबू हरबख़्श के बग्गी हांकने और उमदा तौर से घोड़ों को संभालने की लियाक़त की बाबत अपनी ख़ुश-नूदी बयान करने में ऐन ख़ुशी समझता हूं॥

हाल में उसने एक घोड़ा मेरे लिये बग्गी का तैयार किया—जो एक रूखा था-और मुड़ना बिलकुल नहीं जानता था—मुझे कामिल यक़ीन था—कि कम से कम तीन माह में यह घोड़ा

तैयार होगा—लेकिन हर बख्श ने तीन हफ़ते में ही जैसा मैं चाहता था—घोड़े को बनाकर मुझे वापिस कर दिया॥

चूंकि मुझे इस फ़न में ज़ियादा मदाखलत नहीं है—इसलिये जिस खूबी से वह चोकड़ी हांकता है—मैं उसकी पूरे तौर से क़दर नहीं कर सकता हूं—लेकिन इतना कह सकता हूं कि मैंने उसको बारहा चोकड़ी हांकते देखा—और कई दफ़ा उसके साथ कोच बक्स पर बैठा—और जिस सहू-लियत से घोड़े उसके हाथ में काम देते थे—देखने से फ़रहत हासिल होती थी॥

जी. एल. वाकर,

मैनेजर यू. पी. रेलवे.

मेहरबान मन,

मेरी घोड़ी जो आप ने बग्गी में निकाली—उसका मैं मशकूर हूं—यह

घोड़ी बग्गी में पहले कभी नहीं चली थी—और इसके मिज़ाज से मैंने ख़याल किया था—कि इसको बग्गी में निकालना आसान काम नहीं है—मगर मैं उस को इस सहूलियत के साथ बग्गी में काम देते देखकर बहुत मुताज्जुब हुवा—मैं यह भी जानता हूं—आपने सेल-कार्ट के कई बे क़ाबू—और बद मिज़ाज घोड़ों को दुरस्त किया—मैं उन साहबों को आपके लिये ज़ोर के साथ सिफ़ा-रिश कर सकता हूं—जिनको एक ख़बर-दार और दूर अंदेश ऐसे शख़्स की ज़रूरत होवे—जो बग्गी के लिये घोड़े बना सकता हो॥

आप का दोस्त,

ए. एफ़. पीयर्स,

हेड क्लार्क रेज़ीडेण्सी मेवाड़.

नक़ल.

बाबूजी श्री हरबख़्श जी.

हमारे ठिकाने में तुम्हारा काई

दिनों से आना जाना है—तुमने हमारे कई घोड़ा गाड़ी के घोड़े बहुत थोड़े अरसे में इतनी होशयारी और आसानी के साथ तैयार करदिये कि वे आज दिन तक बहुत उम्दगी के साथ काम देते हैं—इसके सिवाय तुमने हमारे यहां के दो आदमियों को घोड़ा गाड़ी हांकना भी बहुत जल्दी—क़ायदे के साथ सिखला दिया और वे दोनों आदमी हमारे यहां बहुत अच्छी तरह गाड़ी हांकते हैं—मुझको अच्छी तरह यक़ीन है कि तुम्हारी बनाई हुई किताब सरदारों और आम लोगों को बहुत मुफ़ीद होगी-और घोड़ा गाड़ी चलाना सिखलानेके इल्म को जानना चाहने वाले तुम्हारी किताब की ज़रूर क़दर करेंगे—ता: ९ जून सन् १९०८ ई. मिती जेठ सुदी १० संवत् १९६४.

द: राव नाहर सिंह,

बेदला, मेवाड़.

नक़ल.

बाबूजी श्री हरबख़्श जी योग—

मुझको तुम से बहुत अरसे से वाक़फ़ियत है—यहां के ठिकाणे के कई घोड़े गाड़ी में निकालने के वास्ते भेज तुमने ऐसे जल्दी—और उम्दगी से घोड़ों को तालीम दी—कि वह घोड़े ही दिनों में ऐसे उम्दगी से चलने लगे—कि जैसे कोई मुद्दत से साफ़ किये जावें—उस माफ़िक उम्दगी से थोड़े अरसे में तुम्हारे कमाये हुए घोड़े नोकरी देने लग गये—इसके अलावा तुमने सवारी के घोड़े भी दुरुस्त करने में ऐसी उमदा तरकीवों से मदद दी—कि वह भी बहुत मुफ़ीद हुई—यहां के चाबक सवारों को और यहां के कोच-वानों को जो तुमने अज़-सरेनो गाड़ी चलाना सिखाया वह ऐसे उमदा क़ायदे से सिखाया कि वह थोड़े ही अरसे में बहुत होशयार होगये—मुझ

को खुद्को गाड़ी हांकने का शौक़ हुवा-और मैं तुमसे सीखा—तो तुमने ऐसे अच्छे क़ायदे से सिखाया—कि मैं थोड़े दिनों में बग्गी हांकना सीख गया-तुमने जो ऊपर के काम किये—उससे मैं निहायत ही खुश हूं—तुम्हारे बराबर इस काम का होशयार आदमी आसानी से नहीं मिल सकता—ताः ९ जून १९०८ ई.

द: राजसिंह,

बेदला, मेवाड़.

॥ श्री ॥

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

सफ़ा

तस्वीरों की फ़ेहरिस्त

—:o:—

तसवीर नंबर १.—घोड़े के ऊपर इक्के का सामान.

ज़रूरी और मुख़्तसिर हिदायतें जो नामी उस्तादों की किताबों से इन्तख़ाब की गई हैं :—

---

(१) घोड़े की उमर और जिस्मानी ताक़त उस काम के लिये जो तुम उससे लेना चाहते हो मौज़ू होनी चाहिये, बहुत सी ख़राबियों का ज़ियादातर पहला सबब यही होता है।

(२) सामान घोड़े के बैठता हुवा, और सही लगा हुवा होवे; इस क़ायदे के नज़र अंदाज़ करने से भी घोड़े में ऐब पड़ जाते हैं।

(३) दहाना या कज़ई—इसके लिये कोई ख़ास क़ायदा नहीं है, जो और जिस तरह घोड़े के मूंह के लिये मौज़ूं हो लगाया जावे।

(४) नये और बग़ैर सिखाये घोड़े का सब से पहले मूंह बनाओ यानी रास के इशारे को समझे और उसकी

तामील करे।

(५) सिखाये हुए घोड़े पहले पहल अगर तुमको हांकने को मिलें तो किसी तरह पहले उनके मूंह से वाकिफ़ हो लो फिर काम लेने का इरादा करो।

(६) कैंची की रासें दुरुस्त लगाना बहुत मुशकिल है—लेकिन सीखना मुनासिब है—इसकी बाबत हिदायतें किताब में देखो।

(७) हांकते वक्त इस अमर पर पूरा ख़्याल रखा जावे कि शुरू में चलाते वक्त घोड़ों का सर न उठाया जावे घोड़े के मूंह को थोड़ा इशारा देकर हाथ को ढीला कर दिया जावे, वरना घोड़े अड़ने लगेंगे।

(८) घोड़े के मूंह पर ज़रूरत से ज़ियादा ज़ोर न दिया जावे—इससे घोड़े मूंह ज़ोर होजाते हैं, हमेशा बांयें हाथ को ढील मसका से काम लो।

(९) दौड़ या पहाड़ की उतराई में

पहुंचने से पहले खलमन चौकड़ी में अगल के घोड़ों की रासें घटा कर घोड़ों को आहिस्ता करलेना ज़रूरी समझो।

(१०) मुश्तरी को खसमल घोड़े सि- खाते वक्त हमेशा सबर और इस्तक़्लाल से काम लेना चाहिये।

(११) चमकने वाले घोड़े को दिलासा दो, मारो मत, इससे और ज़ियादा चमकने का आदी होजावेगा।

(१२) सवारियां उतरते और चढ़ते वक्त घोड़ों के मूंह पर रास का इशारा बिलकुल नहीं होना चाहिये।

(१३) एक हाथ से हांकना चाहिये।

(१४) ढीली रासों से मत हांको—ब मुक़ाबले ढीली रासों के तंग रासें रखना ही बेहतर है।

(१५) चौकड़ी में अगल के घोड़ों के जोत सिवा पहाड़ की चढाई या रेतीले मक़ाम के तने हुए न रहें, यानी अगल के घोड़ों पर दायमी खिंचाव न रहे—

यह हर तरह मुफ़ीद है।

(१६) सुवतदी को, घोड़े के मिज़ाज, सामान और गाड़ी से खूब वाक़िफ़ होना चाहिये—यानी सामान में हरएक चीज़ का नाम—गाड़ी में हरएक हिस्से से वक़फ़ियत होवे।

(१७) गाड़ी खड़ी रहने की हालत में साईस को घोड़ों के सामने खड़ा रहना चाहिये।

(१८) चौकड़ी खड़ी रहने की हालत में अगर तुम्हारे पास दो साईस होवें तो—एक अगल की जोड़ी के सामने खड़ा रहे—दूसरा साईस धुर की जोड़ी के सर के पास बहार की तरफ़ खड़ा रहे, अगर एक ही साईस है—तो धुर की जोड़ी के सर के पास बाहर की तरफ़ खड़ा रहे, दहने हाथ से अगल की रासें थामे रहे, और बांयें हाथ से धुर की जोड़ी के रोकने के लिये हर वक़्त तैयार रहे।

(१९) कोचवान को रासें हाथ में लिये बग़ैर गाड़ी पर नहीं चढ़ना चाहिये।

(२०) कोचवान को जब तक गाड़ी हांकें, चाबुक को दहने हाथ से जुदा नहीं करना चाहिये।

(२१) हांकते वक़्त चाबुक को दहने हाथ में हर वक़्त रखना चाहिये—बग़ैर चाबुक के हांकना मना है।

॥श्री एकलंगजी॥ ॥श्री रामजी॥

॥श्री गणेशायनमः॥

पहली फ़सल

सामान के बयान में.

येह उनही लोगों का क़ौल है जो ना तजुरबेकार हैं कि चोकड़ी में घोड़े ख़ुद बख़ुद काम देते हैं—इनके हांकने में ज़्यादा कारीगरी नहीं है—येह उनकी सख़्त ग़लती है—और उस शख़्स को जो सीखने का शायक़ है—पहले एक घोड़े के हांकने में कमाल हासिल करे-बाद जोड़ी हांकने की तरफ़ तवज्जो करे-जोड़ी हांकने में इस अमर का ख़याल रहे—कि दोनों घोड़े बराबर चलें-और हर एक घोड़ा अपने अपने हिस्से का

काम इस तरह अंजाम दे—कि कोच-वान को ज़ुरूरत से ज़्यादः मशक़्क़त न करनी पड़े—इस कमाल को पहोंचने के लिये इन बातों पर ख़ास तवज्जो होनी चाहिये, कि घोड़ों के मुनासिब दहाने लगे हों—दुरस्त जुड़े हों—बम कश बहुत तंग न खिंचे हों—और सामान ठीक बैठता हुवा हो॥

सामान लगाना हंसला

शुरू में सब से पहले येही ज़ुरूरत है—कि सामान घोड़े पर दुरस्त बैठता हुवा होना चाहिये—जिस में हंसला एक मुक़द्दम चीज़ है—येह घोड़े के कन्धे पर ठीक जम जावे—और दोनों तर्फ़ हंसले और गरदन के बीच में उंगलियां और नीचे की तर्फ़ गरदन और हंसले के बीच में हथेली आसानी से जा सके—हंसला डालने से पहले घुटने से दबा कर चोड़ा कर लेना चाहिये, ताकि सिरके ऊपर से डालने में घोड़े की आंखों को तकलीफ़

न पहोंचे—अगर घोड़े के कन्धे छिल जावें—तो बहुत सा मीठा तेल मलना चाहिये, इस इलाज से जिल्द सख्त होने और बाल उड़ने से महफ़ूज़ रहेगी—नमक का पानी लगाना बिलकुल मना है॥

कंधे छिल जाना

हंसले की कबानियां खानों में बराबर बैठना चाहिये—वरना जोड़ी से पहाड़ की उतराई या एक लख़्त रोकने में उनके बाहर निकल आने का अंदेशा है—इस से महफ़ूज़ रहने के लिये एक तसमा कबानियों की जंजीर (आमली) और हंसले से बांध देना चाहिये॥

हंसले की कबानियां

जोड़ी में हंसले की कबानी के तस्मे इस तरह लगाना चाहिये कि इनके मूंह अन्दर की तर्फ़ रहें॥

कबानियों के तसमें

जोत इतने लंबे होना चाहिये—कि खिंचाव के वक्त पुश्तंग चाल के बीच में रहे—इस से खिंचाव का ज़ोर सिर्फ़ पुश्तंग पर ही न रहेगा—अहतयात रहे

जोत

कि चोगियां बमों के डाड़े से आगे को रहें वरना घोड़े की रानों पर गाड़ी चली जाने से सख़्त हादिसे का अंदेशा है॥

रासें — रासें ७/८ इंच से सवा इंच तक कोचवान की उंगलियों की लंबाई के मुवाफ़िक़ चोड़ी होना चाहिये—लेकिन आम तोर पर एक इंच चोड़ी काफ़ी होंगी—रासें बहुत दबीज़ नहीं वरने उंगलियों में बहुत सख़्त रहेंगी और इसी तरह बहुत पतली भी नहीं वरना बरसात में भीग कर हद से ज़्यादा मुलायम हो जावेंगी॥

पुश्तंग — दो पहियों की गाड़ी में पुश्तंग इतना लंबा रहे कि बम ज़मीन के मुतवाज़ी रहें—किसी क़दर वज़न बमों पर रहना चाहिये—बम आसमान की तर्फ़ उठे हुये बद नुमा मालूम होते हैं और कुल वज़न बारकश पर पड़ जाता है—येह याद रखना चाहिये कि बमों के नीचे झुके

रहने से गाड़ी का बैलैन्स (तोल) हमेशा बदल सकता है यह तबद्दुल अकसर उस वक्त कार आमद होगा जब कि गाड़ी में चार सवारियां हों—इस लिये कि दो पइयों की गाड़ियां ऐसी कम होती हैं—जो चार सवारियां बैठने पर भी तुल जावें वजे इसकी ये है कि वज़न अन क़रीब बार कश पर रहता है—ऐसी हालत में बहुत कम गाड़ी के मालिक उनके दोस्तों की तकलीफ़ को समझ सकेंगे जो उन के पीछे बैठे हैं क्योंकि ख़ुद उनको पीछे बैठने का काम कम पड़ता है॥

बम और गाड़ी का बैलैन्स

बारकश बहुत ढीला नहीं रहना चाहिये—इतना ढीला रहे कि बम खेलते हुये रहें—मगर इतना तंग भी रहे कि बमों को बहुत ऊंचा न उठने देवे॥

बारकश

चाल और दुमची अच्छी तरह कसी हुई रहना चाहिये जब कि किसी ऊंचे पहाड़ से उतरना है—और रान पट्टी

चाल का तंग

नहीं है—वरना चाल के आगे की तर्फ़ सरकने से घोड़े का सदू दोनों तर्फ़ से कट जावेगा जो बहुत तकलीफ़ देता है और मुश्किल से अच्छा होता है—चाल के आगे की तर्फ़ सरक जाने से घोड़े की बग़लें भी कट जाती हैं—चाल आगे को न सरकने की ग़रज़ से बाज़ घोड़ों के तंग दोनों तर्फ़ से बमों के बांध देते हैं-यह तरकीब "हैनसम" गाड़ी में लंधन में अकसर काम आती है—चाल में अच्छी तरह भरती होना चाहिये खुसूसन ऊंचे सदू वाले घोड़े के लिये॥

विलिंकर्ज़ (अंधेरियां)

विलिंकर्ज़ (अंधेरियां जो आंख के ऊपर रहती हैं) ऐसी बैठना चाहिये कि घोड़े की आंखें उनके बीच में आजावें और सर दिवाली इतनी कसी हुई हो कि दहाने पर ज़ोर पड़ने से अंधेरियां बाहर की तर्फ़ न फैल जावें—जिस से घोड़ा पीछे को देख सके और ऐसी तंग

भी न हों कि आंखों को लगें इस तर्फ़ लोगों की बहुत ही कम तवज्जो होती है मगर इस से घोड़े के आराम में बहुत खलल पड़ता है और चलने का ढंग बिगड़ता जाता है॥

घोड़े का आराम चलने में जान लेना

गल तसमा बहुत तंग न हो अगर ऐसा हुवा तो घोड़े का गला घुट जावेगा तसमे और गले के दरमियान तीन उंगलियां आ सकें॥

गल तसमा

मोहरा इतना कुशादः रहे कि दो उंगलियां घोड़े के जबड़े और मोहरे के बीच में आ सकें॥

मोहरा

दहाना लगाना मामूली और मुहावरे की बात है—रासें ऊपर नीचे खानों में बदलनी चाहिये ता वक़्ते कि घोड़े के मुंह के लिये मोज़ूं मालूम हों—ताहम कुल बातें एक ही कमाले सुबुक दस्ती पर मुनहसिर हैं—इस ना मालूम जोहर में वह हम दर्दी जो घोड़े और

सुबक दसती

हांकने वाले के दरमियान में होना ज़रूरी है महमूल है अगरचे येह दादे इलाही है न तासीरे तरबियत ताहम मुहावरे और तालीम से किसी क़दर तरक़्क़ी हो सकती है, मुराद सुबक दसती से ये है—कि घोड़े के मूंह पर ज़ुरूरत से ज़्यादः और वे मौक़ा ज़ोर हरगिज़ न दिया जावे आम क़ायदा दहाना लगाने का ये है—कि घोड़े के मूंह में नेशों से क़रीब एक इंच के ऊपर रहे॥

दहाना लगाना

ज़ेरकड़ी

ज़ेरकड़ी वहुत तंग न हो—दो उंग-लियों का फ़ासला घोड़े के जवड़े के दर-मियान रहना ज़ुरूरी है—अगर घोड़ा मूंह ज़ोर हो है—तो वाज़ ना वाक़िफ़ साईस ज़ेरकड़ी हत्तुल मक़दूर तंग कर देते हैं—जिस से घोड़ा यातो अड़ने लगता है या और ज़्यादः खैंचने लगता है और जवड़ा भी कट जाता है—इस से वचाने के लिये ज़ेरकड़ी पर चमड़ा

लगाना चाहिये जो ज़ख़्म पर असर न करेगा—अगर घोड़ा अन्दर की बाग चढ़ता होवे तो बाहर की तर्फ़ की रास दहाने में एक घर नीचे कर देने से घोड़ा सीधा चलने लगेगा—और इसी तरह अगर घोड़ा बाहर की बाग चढ़ता हो तो इस के खिलाफ़ अमल में लावो—बाज़ घोड़े तेज़ दहाने पर ज़ोर देने लगते हैं क़ज़ई पर नहीं और बाज़ इसके खिलाफ़—दोहरा कड़ी की क़ज़ई रबड़ या चमड़े से मढ़ी हुई मुलायम मूंह के घोड़े के लिये बहुत मुफ़ीद है॥

नेट जाली

जाली से भी मूंहज़ोर घोड़ा अमन रुक जाता है—मगर इसमें शक है कि यह हमेशा के लिये असर पिज़ीर है या नहीं इसलिये इसका इस्तैमाल गाहे गाहे छोड़ देना बेहतर होगा॥

गोल बाग

अगर घोड़ा अपना सिर नीचे की तर्फ़ लेजाकर खेंचता हो—तो गोल

बाग के इस्तैमाल से यह हरकत मौकूफ़ होजावेगी—लेकिन यह बहुत तंग न होवे—बहुत से घोड़े ऐसे होते हैं कि जिनका हांकना बग़ैर गोल बाग के गैर मुमकिन है—क्योंकि गोल बाग से इनका सिर मुनासिब जगह पर क़ायम रहता है जिस से हांकने वाले के हाथ पर वज़न नहीं पड़ता है—जब किसी बच्चे या लात मारने वाले घोड़े को हांकना हो—तो ढीली गोल बाग हमेशा लगाना मुनासिब होगा—जिस से घोड़ा टांगों में सिर डालकर वे क़ाबू न हो सकेगा—अमेरिका वालों की गोल बाग जो चाल के हुक से शुरू होकर और कानों के बीच सिर दौवाली की कड़ी में होकर क़ज़ई में लगादी जाती है—यह मूंह ज़ोर घोड़े के लिये मुफ़ीद है—गोल बाग के सही लगाने के लिये महावरा दरकार है क्योंकि जिस वक़्त घोड़ा खड़ा

है यह बहुत तंग मालूम होती है और दर असल नहीं होती—बाज़ वक़्त किसी मूंह ज़ोर घोड़े को ज़ियादातर चौकड़ी में बड़ा लिवरपूल दहाना उसके मूंह में लटका कर और रासें क़ज़ई में लगा कर हांक सकते हैं—ज़रूरत के वक़्त गोल बाग भी इसी क़ज़ई में लगादी जाती है॥

मूंह ज़ोर घोड़े के दहाना लगाना

ज़ेरबंद उस घोड़े के लिये ज़ियादा कारआमद होगा—जो आसमान की तर्फ़ देखने के आदी होने से खेंचता है॥

बाज़ घोड़े दहाने की ताड़ियों को होटों से पकड़ कर मूंह ज़ोरी करते हैं इसके लिये कोहनीदार दहाने जो ताड़ियों के पीछे की तर्फ़ खम देकर लिवरपूल दहाने में तरमीम की गई है लगा देना काम देगा—क्योंकि ताड़ियां दूर होजाने से घोड़े का मूंह और ज़बान उन तक नहीं पहुंच सकती हैं—

लोग इस को बदनुमा जानकर काम में कम लाते हैं॥

रबर से मढ़े हुये दहाने ख़ुसूसन डबल नहारी वाले मूंह ज़ोर घोड़े के लिये बहुत कारआमद हैं क्योंकि इन का असर ग़ैर मामूली जगह पड़ने लगता है॥

ज़रूरत के वक़्त दोहरा नहारी का दहाना आसानी से इस तरह बन सकता है—कि एक तसमा मामूली दहाने के ऊपर दोनों तर्फ़ नहारी की बराबर सी दिया जावे॥

सख़्त मूंह ज़ोर घोड़ा भी हर दहा-ने का आदी हो सकता है— इस का इलाज ये है कि दहाने हमेशा बदलते रहना चाहिये॥

हर एक घोड़े के मूंह के लिये अलग अलग क़ायदा

दर असल हर घोड़े के मूंह के लिये अलग २ क़ायदा है—बशरते कि मालूम हो सकै—मगर इसके दरयाफ़्त करने के

लिये अज़ हद तकलीफ़ उठाना भी बेह-
तर होगा—अगरचे पूरी कामयाबी
हासिल करने के पेशतर बहुत सबर
और तजुरबा दरकार है और उस शख़्स
को जिसको बहुतसे घोड़े हांकना पड़ता
है—मुख़्तलिफ़ क़िस्म के दहाने मोजूद
रखना चाहिये॥

ज़ेरबंद उस घोड़े के लिये कार-
आमद है जो अपना सिर ऊंचा रखता
है—या जो अलफ़ होता है—इस को
इतना ढीला लगावो कि घोड़े की नाक
मदू की सीध में रहे—और अमूमन
मोहरे के लगाया जाता है—मगर दहा-
ने में भी लगाया जा सकता है—ऐसी
हालत में निस्फ़ चांद या बग़ैर जोड़
की क़ज़ई लगाना बेहतर होगा इस से
घोड़े के कल्ले कट जाने से महफ़ूज़ रहेंगे॥

ज़ेरबंद

गोल चमड़े के टुकड़े जिन को 'चीक
लैदर' यानी गाल पर लगाने का चमड़ा,

चीक लैदर

कहते हैं मामूली दहाने में इसी काम के लिये बहुत कार आमद हैं—इन से घोड़े के कल्ले दहाने की ताड़ियों से नुच जाने से बचे रहते हैं—और किसी क़दर घोड़ा होटों से ताड़ियों को पकड़ने से भी रुकता है॥

चमड़ा रखा — उस घोड़े के लिये जो एक रुखा है चंद बिरंजियां इस चमड़े के अन्दर की तर्फ़ लगा देना बहुत काम देगा—फिर उस तर्फ़ अपना सिर नहीं झुका सकेगा–इन चमड़ों में एक गोल सूराख़, जिस में दहाने की बीच की ताड़ी आ सके, होता है—और इसी छेद से एक ग़िलाफ़ बाहर की तर्फ़ होता है—जिस से लगाने और निकालने में आसानी होती है॥

पुश्तंग पट्टी — पुश्तंग पट्टी भी इक्के और जोड़ी में काम देती है—इक्के में एक बम में लगा दुमची के तसमें के खाने में से निकाल कर दूसरी तर्फ़ बम में लगादी

जाती है—जोड़ी में दो तसमों की ज़रूरत होगी—येह चाल में लगाये जाते हैं—जहां से दुमची की सीध में बारह सिंगे से बांध दिये जाते हैं—और बीच में एक तसमा घोड़े की कमर के ऊपर होके दोनों तर्फ़ इन तसमों में लगा दिया जाता है—पुश्तंग पट्टी इतनी ढीली रहे कि घोड़ा आसानी से हरकत कर सके और पोइया होने में घोड़े की कमर को न लगे कि जिस से वह लात मारने लगे चार इंच का फ़ासला घोड़े की पीठ और तसमे में रहना बेहतर है॥

रान पट्टी लगाना

पहाड़ी मुल्क में रान पट्टी की भी ज़रूरत है ख़ुसूसन दो पहियों की गाड़ी में—जबकि ब्रेक काम नहीं देता है—यह तसमा करीब एक फ़ुट के दुम के जोड़ से नीचे रहना चाहिये और चार से छः इंच तक खेलता हुवा रहे जब कि घोड़ा चल रहा है॥

तीन क़िस्म की रान पट्टी

तीन क़िस्म की रान पट्टी टम् टम् में काम देती है :—

१—एक तर्फ़ की चोंगी से शुरू होकर और घोड़े के पछाड़ी घूम कर दूसरी तर्फ़ की चोंगी में लगादी जाती है॥

२—बमों के खानों में दोनों तर्फ़ कस दिये जाते हैं—येह खाने बमों में डाड़े के और गाड़ी के बीच में होते हैं॥

३—एक चोड़ा तसमा गाड़ी से छै से आठ इंच के फ़ासले पर बमों में कस के बांध दिया जाता है—जो हमेशा काम देने के लिये तय्यार रहता है—घटाने बढ़ाने की ज़रूरत नहीं होती—खुशनुमा होता है—और बहुत काम देता है—

बिराउन साहब का पेटन्ट.

इस को बिराउन्स पेटन्ट कहते हैं—पहली क़िस्म दूसरी क़िस्म से अच्छी है—क्योंकि इसके लिये

बमों में फ़ालतू खाने बनाने की ज़रूरत नहीं होती—कि जिस से वे कमज़ोर हो जावें—और बमों का रंग भी न उड़े॥

घोड़े की जिल्द रान पट्टी से छिल जाना

अगर रान पट्टी से घोड़े की जिल्द घिसने लगे तो ज़ियादा नुक़सान से बचने के लिये भेड़ का चमड़ा मये बालों के तसमे में लगा दिया जावे—इस तरह कि बाल घोड़े के जिस्म की तरफ़ रहें॥

दुमची

दुमची लगाने में भी चार इंच का फ़ासला घोड़े की पीठ और दुमची में रहना चाहिये—जब कि चाल अपनी जगह पर हो—होशयार रहो कि दुम के सब बाल दुमची में होके निकल आवें॥

सीनाबंद

सीनाबंद भी हंसले की एवज़ काम दे सकता है—जब कि हंसले से घोड़े की गरदन नुच रही हो—इस तरकीब से कई माप के हंसले मुख़्तलिफ़ घोड़ों के लिये रखने की ज़रूरत भी रफ़ा हो

जाती है—और दूसरा फ़ायदः ये है कि जोड़ी में ब्रीचिंग याने रान पट्टी को अच्छी तरह काम में ला सकते हैं—सीनाबंद मज़बूत चमड़े का तीन इंच चौड़ा बनाना चाहिये—और अंदर की तर्फ़ ऐसी भरती होना चाहिये कि उन के सख़्त किनारे घोड़े की जिल्द पर न चुभें—जोड़ी के सामान के लिये एक कड़ी सीनाबंद के बीच में बम कशों के लिये लगाना चाहिये—सीनाबंद में एक और हलका तसमा जो घोड़े की गरदन के ऊपर होके आता है लगा रहता है-और रान पट्टी भी ऐसे ही तसमे से जो पुट्ठे के ऊपर होके आता है लगाई जाती है—दुमची भी लगा सकते हैं—मगर ज़रूरत नहीं है—सीनाबंद सीने से चिपका हुवा रहना चाहिये—और शाने की नोकों से ऊपर रहे—सीनाबंद बहुत संभाल के लगाना चाहिये—उन

को नीचा रखने की अकसर ग़लती होती है—सीनाबंद के अखीर में दोनों तर्फ़ बकसुवे होते हैं—जिन में जोत और रान पट्टी लगाई जाती हैं—अलबत्ता जितना काम घोड़ा हंसले से दे सकता है—सीनाबंद से नहीं॥

चाबुक

चाबुक हत्तुल इमकान हलका और बा क़ायदा बना हुवा होना चाहिये—चाबुक की सर डंडी से निस्फ़ होना बेहतर होगा—सरका पाना हमेशा चमड़े का होना चाहिये—यह बरसात में ठीक रहता है—चाबुक को कोने में या दीवार के सहारे हरगिज़ नहीं खड़ा करना चाहिये—क्योंकि बहुत जल्द उसी तर्फ़ मुड़ जाता है—चाबुक हमेशा दीवार में कील से लटकाना चाहिये॥

चाबुक हमेशा लटकता रहे

पेशतर इसके कि सामान का बयान खतम किया जावे—इसकी ज़ेबायश और सफ़ाई की बाबत ज़िकर करना

फ़ज़ूल न होगा—तसमे घोड़े के जिस्म के मूजब छोटे कर देना चाहिये—और जरूरत से ज़ियादः लंबे नहीं रहना चाहिये—तसमे ज़ियादा बाहर न लटकते रहें—इसके रोकने के लिये तसमों के खाने तंग रखना चाहिये—और ऐसे लगे हुए हों कि तसमों के सिरों से एक या दो इंच ही दूर रहें—किसी चीज़ पर इतनी जल्द नज़र नहीं पड़ती—या कोई चीज़ ऐसी बदनुमा नहीं मालूम होती—जैसे एक एक फ़ुट ज़ात खानों से बाहर लटक रहे हों—या बारकश घोड़े के नीचे लटकता हो॥

सामान अच्छे कारीगर की दुकान से खरीदना चाहिये—ससता और भद्दा बना हुवा सामान देरपा नहीं होता॥

फ़सल दूसरी

एक घोड़े के हांकने के बयान में.

चलने से पेशतर हमेशा चहारों तरफ़ खूब देखलो—कि सब सामान सही लगा हुवा है—फिर घोड़े के बाहर की तरफ़ जाकर दहने हाथ में रासें ले लो—इस तरह कि अंदर की रास पहली उंगली के नीचे और बाहर की रास तीसरी उंगली के नीचे रहे—अब गाड़ी में चढ़ कर फ़ौरन बैठ जावो—फिर दहने हाथ से रासें बायें हाथ में ले लो-कि अंदर की रास पहली उंगली पर और बाहर की रास बीच की उंगली के नीचे रहै—इस तरह दो उंगलियां रासों के बीच में रहेंगी (तसवीर नं: २ देखो,

चलान

टम टम बैठना

रासें पकड़

दो उंगलियां वीच में रहने से कलाई को घोड़े के मूंह पर खेलने के लिये वनिसवत एक उंगली वीच में रखने के ज़ियादा गुंजायश मिलेगी—अंगूठा दहनी तरफ़
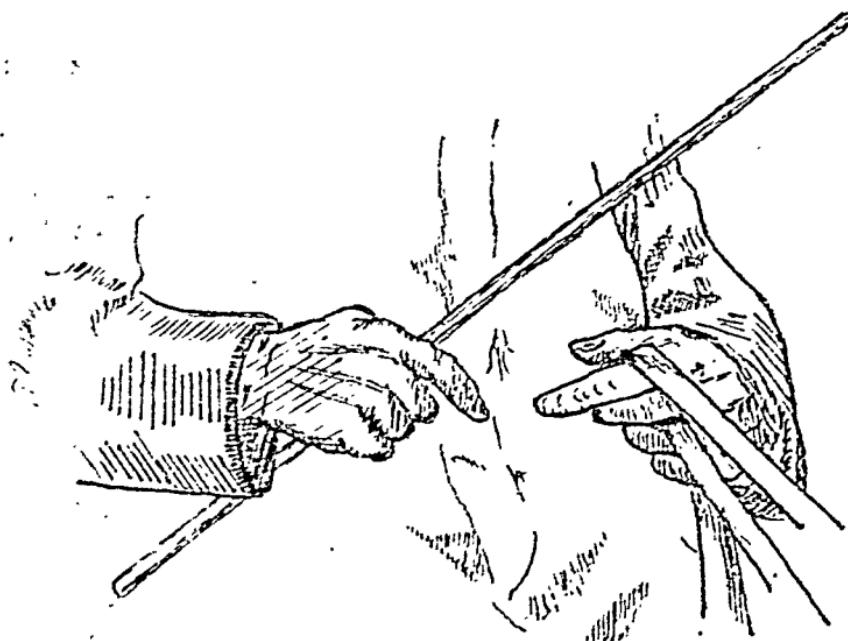
तसवीर नं: २, इक्के का सामान; हाथोंके रखनेका तरीक़ा

सीधा रहे और ऊपर की उंगली अच्छी तरह वाहर निकली हुई दहनी तरफ़ पीछे को झुकी रहने से अंदर की रास टखने के क़रीव रहेगी—और हाथ

की पुश्त ही ऊपर नीचे करने से घोड़े को दहने बायें सड़क पर मोड़ सकते हैं॥

सीधे बैठो—हांकने वाला रासों पर झुका हुवा बहुत ही बदनुमा मालूम होता है॥

सीधे बैठ

आखरिश चाबुक दहने हाथ में उस जगह थामों जहां इस का वज़न बराबर तुल जावे—अब तुम चलने को तय्यार हो—फिर घोड़े के मूंह पर धीरे से इशारा देकर और कुछ कह कर चलावो—अगर घोड़ा न चले तो आहिस्ता से चाबुक छुवा दो॥

शुरु में कैसे चलाना

जब घोड़ा चलदे तो किसी क़दर हाथ फ़ौरन ढीला करदो—येह अहतयात न रखने से ही घोड़ा अड़ने लगता है॥

कोहनियां बग़लों के नज़दीक रहें—और इनकी नोकें कूले की हड्डी के जोड़ से छूती हुई रहें—कलाई खूब मुड़ी

कोहनियां बग़लों के नज़दीक रहना चाहि

रहे—ताकि तुम बग़ैर किसी झटके के घोड़े के मुंह पर क़ाबू रख सको—यह निहायत ज़रूरी अमर है॥

हाथ के आगे का हिस्सा आड़ा रहे

हाथ का आगे का हिस्सा कोहनी के नीचे से आडा रहे—और उंगलियां जिस के बीच में दो इंच से चार इंच के फ़ासले तक और उंगलियों के रखने सामने रहना चाहिये॥

अंगूठे से रासें नहीं दबाना चाहिये—(अलावा इसके कि घोड़े को बायें दहने आंटी बनाकर मोड़ना मंज़ूर होवे) (तसवीर नं: २३) उस वक़्त तुम्हारा दहना हाथ दूसरी रास को घटाकर घोड़े को

मोड़ना

एक दम मुड़ने से रोकने के लिये—या न मुड़ने की हालत में चाबुक से काम लेकर मोड़ने के लिये खाली है॥

नीचे की उंगलियों से रासें पकड़ना चाहिये

जिन उंगलियों से रासें पकड़ना चाहिये (ऐसी मज़बूती से कि न सरकें) नीचे की तीनों उंगलियां हैं ऊपर की

उंगली जैसी तसवीर नं: २ में है रखना चाहिये॥

बाहर की रास दहने और बांये हाथ के बीच में ढीली न रहे (तसवीर नं: ३) क्योंकि उस वक्त चाबुक काम में

दहने हाथ में रास होने की हालत में उस हाथ से चाबुक मत मारो

तसवीर नं: ३, इक्के का सामान—दहना हाथ गलत जगह.
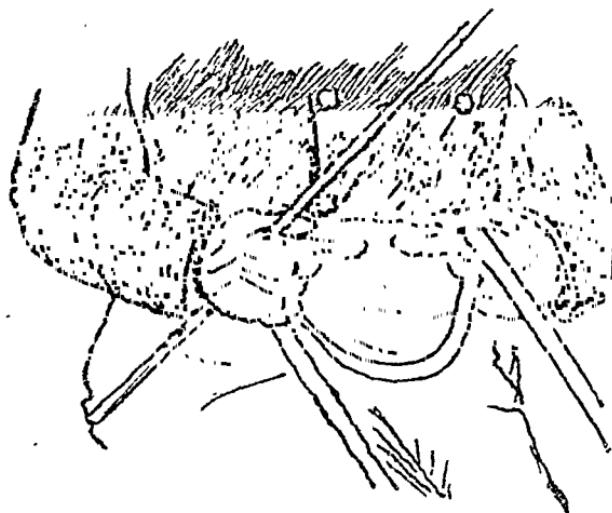
नहीं ला सकते हो—याद रहे कि जब दहने हाथ में रास है—घोड़े को चाबुक हरग़िज़ मत मारो॥

इस का सबब ज़ाहर है कि दहने हाथ में बाहर की रास होने की हालत में चाबुक मारने से बाहर की रास ढीली हो जावेगी—और फ़ौरन घोड़ा बांयें को पलट पड़ेगा॥

बांये हाथ में रासें सरकने न पावें.

सीखने वाले के पूरे तौर से यह बात ज़हन नशीन होना चाहिये कि उसका दहना हाथ खुवाह रासों पर हो या न हो दोनों रासें हमेशा बराबर रहें—और सरकने न पावें॥

किसी हालत में बाहर की रास बायें हाथ से दहने हाथ में नहीं लेना चाहिये-यह निहायत ज़रूरी और मुक़द्दम हांकने का क़ानून है-कि बायें हाथ में रासें ऐसी बराबर पकड़ी हुई हों-कि घोड़ा सीधा चले और उसी क़दर लंबी बनी रहें—खुवाह दहना हाथ किसी रास पर हो या न हो॥

जो कोचवान दोनों हाथों से रासें पकड़ कर हांकता है—अपने काम से

बिलकुल ना वाक़िफ़ है—और ताहम ऐसी ग़लती आम तौर पर लंधन में भी देखी जाती है॥

बिला ज़रूरत घोड़े को चाबुक हरगिज़ मत मारो—और मूंह पर झटका मत दो—मगर किसी ग़लती की सज़ा पर—मसलन जो घोड़ा लात मारना चाहे—उसको झटका देना मुफ़ीद होगा बशरते कि वक़्त पर दिया जावे—ख़ास कर अगर एक चाबुक का भी तेज़ हाथ उसके कानों पर लगाया जावे॥

घोड़े के मूंह पर झटका मत दो

चमकने वाले घोड़े के हरगिज़ चाबुक मत मारो—इस से सिर्फ़ घोड़ा डरेगा और चिमकने का आदी हो जावेगा—येह उसके डरपोक होने का सबब है—न कि बदीका. घोड़े को मूंह से दिलासा देकर बढावो—इसलिये कि मालिक की आवाज़ के बराबर और किसी चीज़ को घोड़ा ऐसा अल्द नहीं

चमकने वाले को मत मारो

घोड़े से बोलो

पहचान ने लगता है॥

चलाने या तेज़ करने के लिये घोड़े की पीठ पर रासें मत मारो॥

एकसां क़दम होना चाहिये

एकसां और जमी हुई चाल से हांकना सीखो—फ़ी घंटा आठ मील से नो मील तक की औसत मुनासिब मालूम होगी—कभी घन्टे के छः मील और कभी घन्टे के दस मील की चाल से मत हांको—मुतवातिर चाल बदलते रहने से घोड़ा बहुत ही थक जाता है—अगर

शुरु में आहिस्ता चलाओ

लंबा सफ़र दर पेश होवे तो शुरू में घोड़े को आहिस्ता हांकना चाहिये॥

एक दफ़ः चल देने के बाद अपने सामने ख़ूब ग़ौर से देखते रहो कि दूसरे गाड़ी वाले क्या करते हैं—ताकि तुम को घोड़ा एक दम न रोकना पड़े—दूर से ही देख लेना चाहिये—कि तुम किसी जगह बीच में से निकल सकते हो या नहीं—अगर गुज़रना ना मुमकिन

मालूम होवे—तो फ़ौरन घोड़े को आहिसता करना शुरू करदो॥

फूटती हुई चाल ख़राब

यकायक घोड़े को तेज़ करना या रोकना नहीं चाहिये—इस से सवारियों के आराम में ख़लल और घोड़े को बहुत तकान होता है॥

रार्स घटाना

मुबतदी को जब कि किसी तंग मुक़ाम से गुज़र जाने का यक़ीन नहीं हो एक दम आहिस्ता होजाना बेहतर होगा बनिसबत इसके कि तेज़ रफ़तार से उस मक़ाम पर पहोंच कर एक लख़्त घोड़े को रोकना पड़े और वह शायद रुकै भी नहीं—जो आख़री वक़्त पर रोकना हमेशा मुमकिन भी नहीं होता और मूजबे हादिसा होजाता है—क़ायदा है कि यकायक रोकने की ज़रूरत पड़ने पर हाथों को ऊंचा लेजा कर रासों को तंग करते हैं—मगर दरहक़ीक़त यह बदनुमा मालूम होता है—सही

क़ायदा अमल करने का ये है—कि दहने हाथ की ऊपर की उंगली और अंगूठे से बाएं हाथ के पीछे से रासें पकड़ कर जितनी ज़रूरत होवे खेंचलो (तसवीर नंः ४)
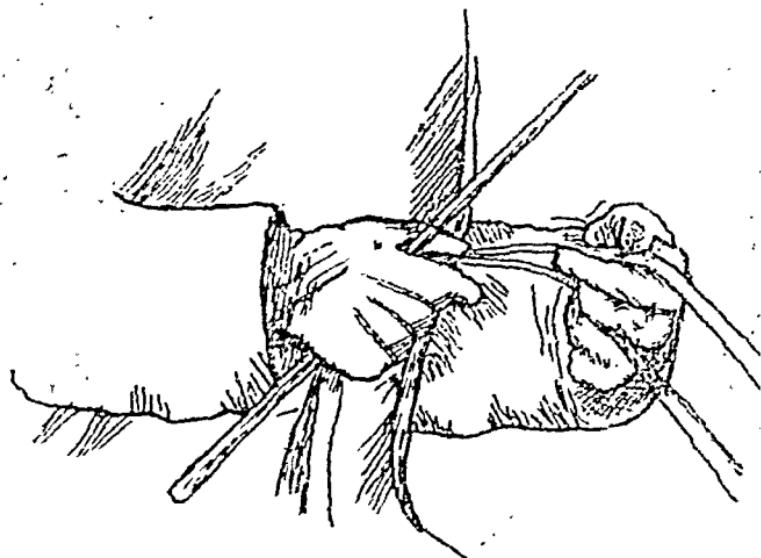
तसवीर नंः ४—रासें घटाना.

ऐसे मौक़ों पर व मुक़ाबले रासें लंबी रखने के छोटी रखना ही बेहतर होगा—अगर रासों को थोड़ा ही कम करने की ज़रूरत होवे तो सिर्फ़ दहने हाथ की

बाएं हाथ के आगे रख कर रासे खेंचलो और बाएं हाथ को दहने हाथ की तर्फ़ सरका लो तसवीर नंः ५.

पिछली गाड़ी को इशारा

शहर में हांकने के वक़्त यह क़ायदा है—कि चाबुक की डंडी को एक या दो मर्तबा घुमाने से पिछली गाड़ी के कोचवान को ज़ाहर होगा कि तुम गाड़ी को आहिस्ता करने को या घुमाव पर मोड़ने को हो॥

मोड़ पर होशयारी से घुमावो,

मोड़ पर पहोंचने से पहले रफ़तार को हमेशा क़ाबू में कर लेना चाहिये, ख़ुसूसन शहरों में कि जहां रासते फ़िसलने हो जाते हैं—और अकसर मोड़ पर पत्थर लगे होते हैं—मोड़ पर ग़ाफ़िल रहने से रोज़ाना कई हादिसे वाक़ै होते हैं—यह हिदायत फ़ज़ूल मालूम होती है—मगर सुवतदी को मालूम होगा कि तंग मोड़ पर सीखे हुये घोड़ों को भी एकसां घुमाने में अज़ हद अहतियात

और होशयारी की ज़रूरत है॥

अड़ने वाले घोड़े को चलाना

आखिर में यह अमर भी बता देने के क़ाबिल है—कि जो घोड़ा अड़ना चाहे—उसको रास से एक तरफ़ मोड़

तसवीर नं: ५—बाएं हाथ को दहनी तर्फ़ लेजाकर हाथ घटाना.
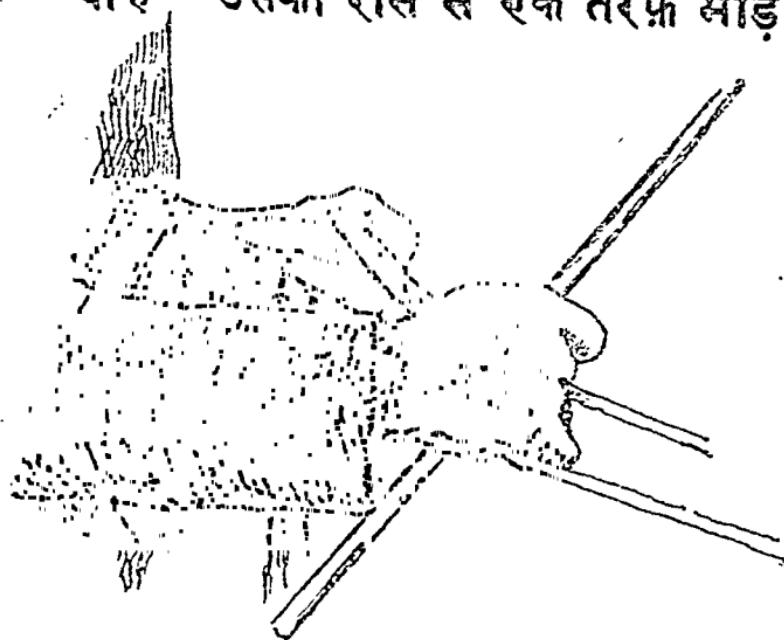
कर चला सकते हैं—ब सूरत ना कामी किसी आदमी के धक्के से बढ़ा दो—इस की वजे ये है कि घोड़ा ज़ोर पढ़ने से पहले चला दिया जाता है॥

दस्ताने बैठाना

दस्तानों का बैठाना मुबतदी को खफ़ीफ़ बात मालूम होगी मगर होश-यार कोचवान ऐसा नहीं समझेगा॥

तंग दस्ताने पहनके हांकने वाले
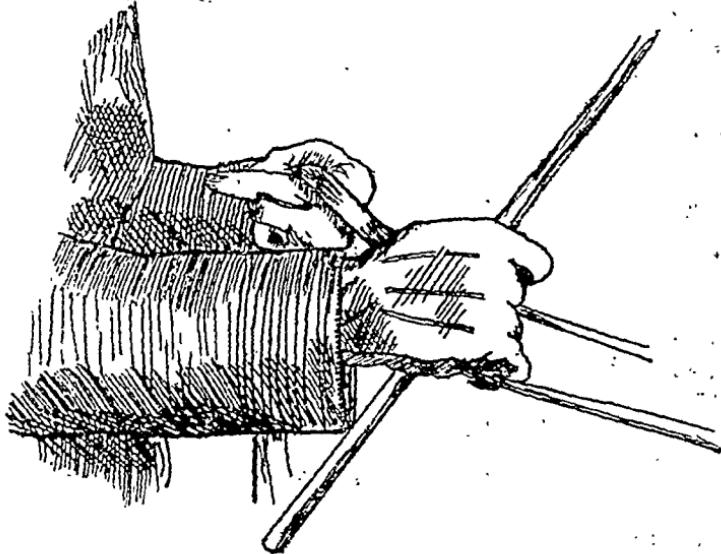
तसवीर नं: ५ बाएं हाथ को दहनी तर्फ़ लेजाकर रास घटाना.

का हाथ बहुत जल्द अकड़ जावेगा—उसकी कुल ताक़त हाथ बंद करने और दस्तानों से कुश्ती लड़ने की कोशिश में ज़ाया होजाती है—न कि रासें

मज़बूत पकड़ने में—दर असल बहुत बड़े मिल भी नहीं सकते हैं॥

दसताने कुत्ते के चमड़े के होना चाहिये और नये होने की हालत में एक एक इंच उंगलियों से लंबे और ढीले भी होना चाहिये और कलाई और हथेली की जगह भी बहुत ढीले रहें—सिर्फ़ एक दो दफ़ः पसीनों से गीले होजाने से सुकड़ कर ठीक हो जावेंगे॥

दसतानों की पुश्त पर दो तीन गोल छेद कर देने से हाथ ठंडे रहेंगे॥

चमड़ा सख़्त और मज़बूत हो—मगर ज़ियादः दबीज़ न हो-अंदर से दसताने दोहरा होजाने से हांकने के लिये मौज़ू न रहेंगे—ख़ुसूसन चोकड़ी में॥

ऊनी दस्ताने

ऊनी दसताने भी हमेशा साथ रखने चाहिये बारिश के मौसम में यह बहुत काम के हैं—और उनमें से

रासें नहीं फ़िसलती हैं॥

बग़ैर पैर ढाकने वाले कपड़े के हांकने को मत बैठो—गरमी के मोसम में हलका सूती कपड़ा काम में आ सकता है मगर सर्दी के मोसम के लिये गर्म और मोटा कम्मल रखना मुनासिब होगा॥

पैर ढकने की चीज़ (रग)

दो पहियों की गाड़ी में टम टम (डाग कार्ट) बहुत हलकी हर काम के लिये होती है—और इसी लिये आम लोगों में कार आमद है—इस लिये चंद हिदायतें ऐसी गाड़ी पसंद करने या बनाने की बाबत लिखना उन शख्सों के लिये ग़ालिबन मुफ़ीद होगा जिन को इसका तजुरबा नहीं है—कि गाड़ी खरीदने के वक़्त किसी पेशेवर आदमी से सलाह लेना ज़रूरी है—क्योंकि कोई शख्स बग़ैर तजुरबे के गाड़ी की साख्त या माल का कुसूर नहीं जान सकता है॥

टम टम बनाने की हिदायतें

पय्यों की ऊंचाई

१५-२ की ऊंचाई के घोड़े के लिये मरक़ूमा तफ़सील ज़ैल गाड़ी बनाना चाहिये पइये मुनासिब ऊंचे होना चाहिये यानी पांच फ़ीट तक इसलिये कि ऊंचे नीचे रासतों में ऊंचे पइयों की गाड़ी को बनिसबत छोटे पइयों की गाड़ी के घोड़ा ज़ियादा आसानी से खेंच सकता है॥

गाड़ी की लीक

पांच फ़ीट से सवा पांच फ़ीट तक चौड़ी पइयों की लीक होना चाहिये जिस से गाड़ी में गुंजायश बहुत रहती है—और उलट जाने का खौफ़ भी कम रहता है॥

ख़मदार बम

ख़मदार बम मुख़्तलिफ़ ऊंचाई के घोड़ों के लिये बहुत काम के हैं—इन को गाड़ी के आगे की तर्फ़ कस देना चाहिये और पीछे को इस तरह लगाये जावें कि ऊंचे नीचे होने के क़ाबिल रहें ऐसी बनी हुई गाड़ी में १४-२ की ऊंचाई से १६ हाथ की ऊंचाई तक का घोड़ा आसानी से काम दे सकता है॥

गाड़ी का ठाठ (जिस्म) हत्तुल इमकान चौड़ा होना चाहिये क्योंकि तंग जगह में भिच के बैठने में बहुत तकलीफ़ होती है—गाड़ी के ठाठ और धुरे में जहां तक हो सके कम फ़ासला रहना चाहिये ऐसी गाड़ी में बहुत ही आराम मिलता है—और महफ़ूज़ भी रहती है॥

गाड़ी का ठाठ और नीचा होना चाहिये

गाड़ी का ठाठ एक जगह कसा हुवा बनिसबत बमों पर आगे पीछे सरकने वाले के बेहतर होता है किस लिये कि घोड़ा गाड़ी से एकही फ़ासले पर रहता है—और गाड़ी हलकी भी बन सकती है॥

गाड़ी की बैठक इतनी नीची होना चाहिये कि हांकने वाले को पादान की ज़रूरत न होवे—और वह नीम इस-तादा भी न मालूम हो और खानों में ऐसी बैठी हुई हों—कि घोड़े के गिर जाने पर भी बाहर न निकल सकें—

बैठकें

सिर्फ़ बैठक ही के निकल जाने से सख़्त वाक़े पेश आये हैं और कई आदमी गिर पड़े हैं—इस के सिवा बैठकों के गाड़ी की बग़लों के सिरे से किसी क़दर नीची रहने से और ज़ियादा आराम मिलता है—सामने और पीछे की बैठकें इस तरह लगाई जावें कि ख़्वाह एक या च्यार सवारियां होवें—गाड़ी बराबर तुली रहे यह बात इस तरह हासिल हो सकती है—कि बैठकें इस तरीक़े से बनाई जावें—कि जब दो से ज़ियादा सवारियां होवें तो उन को आगे पीछे सरका सकें

हीथ साहब का पेटन्ट

मेरे ख़याल में "हीथ" साहब का "पेटन्ट" इस काम के लिये उमदा, आसान, और मौसिर है॥

सरकता हुवा पादान ज़रूरी है

अगर बैठकें सरकती हुई हों तो कोचवान के लिये पादान भी सरकता हुवा चाहिये और यह गाड़ी के होदे में छः छः छेद दोनों तर्फ़ कर देने से

पादान उस में बैठ सकता है—पादान के लिये मामूली तख़्ता होना चाहिये जो रबर से मढ़ा हुवा होवे कि पांव न फिसलें और आगे को तर्फ़ थोड़ा सा ऊंचा रहे ताकि पांव टांगों को गुणयां में रहे (बार फुट रैस्ट) यानी डंडे वाला पादान निहायत ख़तरनाक है—गाड़ी से उतरते वक्त इस में पांव जल्दी अटक जाता है लंप पइये और गाड़ी के बीच में लगाना चाहिये—अहतयात रहे कि उन के लिये काफ़ी गुंजायश हो इस लिये कि अगर वह किसी हादिसे से झुक भी जावें—तो पइयों से न लगें येह जगह लंपों के लिये टैनडम हांकने में भी बहुत मौज़ूं है—दूसरी जगह लगाने से चाबुक को सर हर वक्त अटकने से बाइसे तकलीफ़ हो जाता है॥

बार फुटरैस्ट

लंप की जगह

गाड़ी के खिंचाव का उमदा तरीक़ा यह है—कि वह बेलन जिस में जोत

जोत उमदा तौर से लगाना

तसवीर नं ६ टम टम.

लगाये जाते हैं—याने "सुविंगलटिरी" इसके बीच में से दो जंजीरें लगाकर दोनों तर्फ़ धुरे में पइयों के अंदर की तर्फ़ कसदी जाती है॥

सुविंगलटिरी (वेलन)

"सुविंगलटिरी" गाड़ी के सामने दो तसमों से लोहे के रकाब में लगाया जाता है—यह तसमें बहुत मज़बूत होने चाहियें—अगर यह टूट गये तो घोड़े की फ़ौंचों पर गाड़ी गिर कर बाइसे नुक़सान होगा॥

ज़ंजीरें ज़्यादा लंबी न हों

जंजीरें ज़ियादा लंबी न हों—खिंचाव जंजीरों पर ही रहे—तसमों पर न रहे—जैसा कि आम तौर पर देखा गया है—ऐसी हालत में "सुविंगल टिरी" लगाना फ़ज़ूल है-"सुविंगलटिरी" के लगाने से जंजीरों के ज़रिये से खिंचाव ठेट धुरे पर पड़ता है—और इस तरह खिंचाव का अच्छा मौक़ा मिलता है—अलावा इसके घोड़े के कन्धों पर

सुविंगलटिरी का फ़ायदा

हंसता खेलता रहता है—और बमुक़ाबले मामूली तरकीब के छिल जाने से महफ़ूज़ रहता है॥
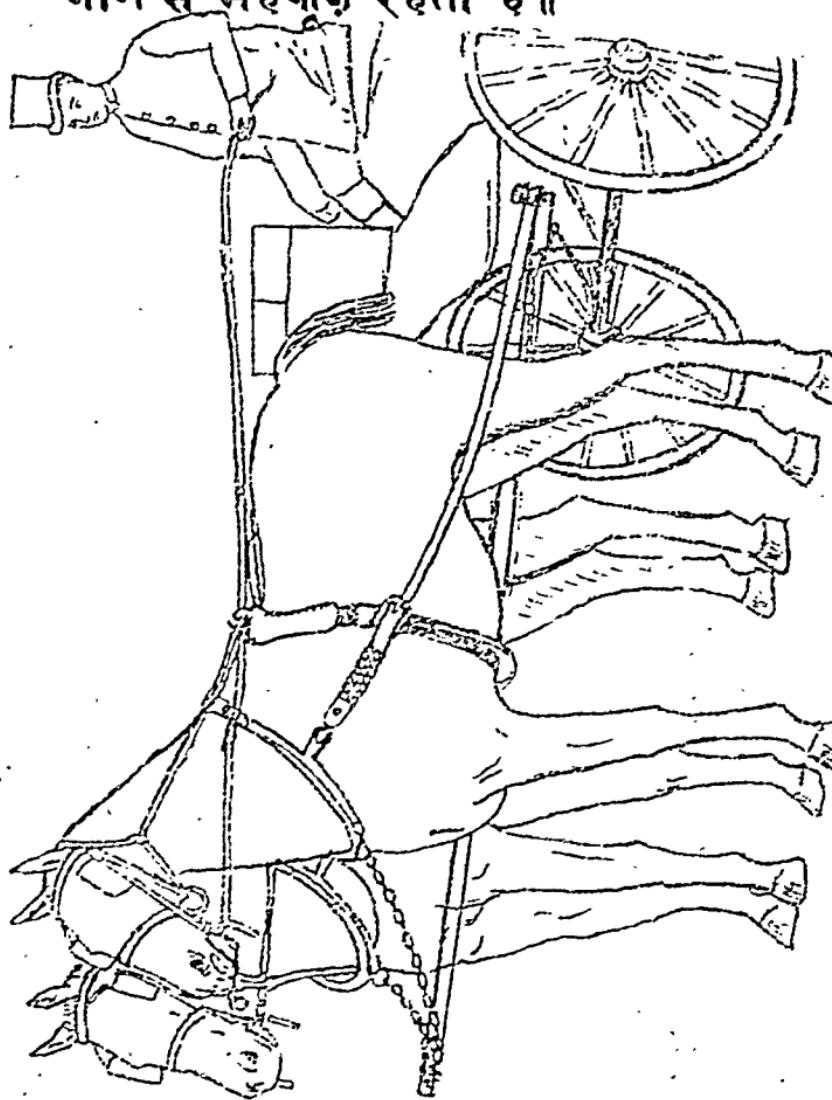
तस्वीर नं: ७ जोड़ी का सामान.

फ़सल तीसरी

जोड़ी हांकने के बयान में.

उमदा जोड़ी हांकना-यानी कैसेही दो घोड़ों को लगाना और हांकना ऐसा आसान काम नहीं है—जैसा कि ना-वाक़िफ़ आदमी को देखने से मालूम होता है—अच्छे चलने वाली, उमदा जमी हुई, और दुरुस्त जुती हुई जोड़ी को हांकना ऐसा आसान काम है कि एक मुबतदी भी कामयाबी के साथ हांक सकता है—लेकिन जिस वक़्त मुख़्तलिफ़ मिज़ाज के और ना-वाक़िफ़ घोड़े हांकना हैं—तो यह और ही काम है॥

बारकश

जोड़ी का सामान भी इक्के के सामान के मूजब लगाया जाता है—अलावा बारकश के कि वह इतने ढीले

रहें कि तीन उंगलियां बारकश और तंग के दरमियान में आ सकें—मान लो कि घोड़ों पर सामान लगा दिया गया है—ठीक बैठता है—और गाड़ी में जोड़ने के लिये असतबल में तैयार खड़े हैं—उनको बाहर लाने के लिये मुन्दरजे ज़ैल क़ायदे हैं॥

घोड़े को असतबल से बाहर निकालना

दोनों जोत उसकी कमर पर इधर उधर डाल देना चाहिये—घोड़े को मोहरे पकड़ कर बाहर लावो—क़जई या दहाना मत पकड़ो वरना साइस से अनजान में घोड़े के मूंह में झटका लग जाने से बुरा मान कर वापिस असतबल में भाग जावेगा—या खड़ा आकर उलटा गिर पड़ेगा असतबल से बाहर लाने के वक़्त बड़ी होशयारी चाहिये—अक-सर ओक़ात उसके पूठे की हड्डी दिवार से रगड़ कर छिल जाती है—जो बाइसे लंग होजाता है— इसके अलावा अस-

तबल से दौड़के निकलने की बुरी आदत पड़ जाती है॥

बम को बराबर लगाना

घोड़ों को होशियारी से बम के पास लावो—कि बम या बारहसिंगे के न लगने पावें और फ़ौरन बम की जंजीरों को हलके की कड़ी में डाल दो—जिस से वह बारहसिंगे पर पीछे को न हट सकेंगे—अव्वल बाहर का जोत बारह सिंगे की खूंटी में डाल कर बाद में भीतर का जोत लगावो—अनजान या लात मारने वाले घोड़े का जितना जल्द भीतर का जोत लगाया जावे बेहतर होगा—क्योंकि यह काम करने के लिये ठीक उसके पीछे जाना पड़ता है—अगर एकही घोड़ा लात मारता है—तो इस खतरे से बचने के लिये उसको पहले जोत देना चाहिये—और खोलने के वक्त इसके खिलाफ़ उसको पीछे खोलना चाहिये बमकश बहुत तंग मत रखो—

बमकश खेंचना

इस से घोड़ों को तकलीफ़ होती है—अगर बम भारी है—और जंजीरें भी तंग खैंच दी गई हैं—इस हालत में यह वज़न हर वक्त उनकी गरदन पर रहेगा—ज़ियादा तर चोकड़ी में—जंजीरों के हुक के सिर नीचे की तर्फ़ रहें—वरना दहाने की ताड़ी उस में अटक जावेगी॥

बमकश

मामूली काम के लिये चमड़े के बमकश बजाय जंजीरों के अमूमन काम में आते हैं—उनको इतना साफ़ नहीं करना पड़ता है—और तकलीफ़ भी कम होती है—यह मज़बूत चमड़े के बनाना चाहिये—और सलाद का तेल या मोम रोग़न लगाकर नर्म रखना चाहिये—वरना सड़कर ख़तरनाक हो जावेंगे॥

कैंची की रास सही लगाना

कैंची की रासों को सही लगाना बड़ी होशयारी का काम है—यह ऐसी लगाई जावें कि घोड़ों के मूंह पर दोनों

तर्फ़ बराबर दबाव रहे—और इस तरह कि दोनों घोड़े सीधे जावें—और जोतों पर उनका ज़ोर बराबर रहे—(तसवीर
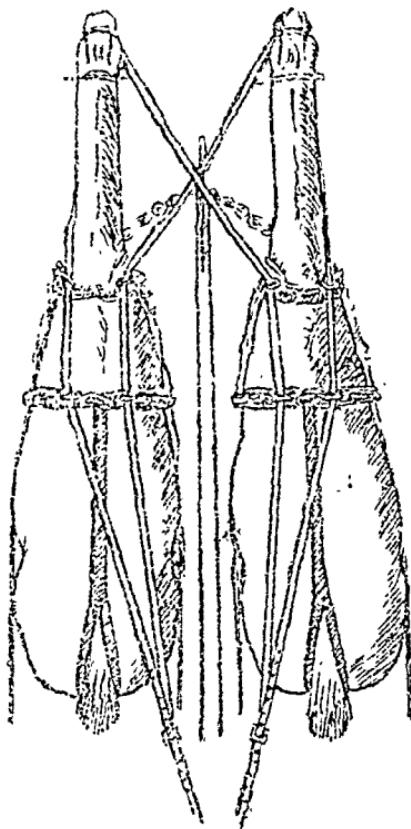
तसवीर नं: ८ कैंची की रासें सही लगी हैं—घोड़े के सिर सीधे हैं.

नं: ८) इसी ग़र्ज़ से बाहर की रासों पर ऊपर नीचे बहुत से छेद होते हैं—जिन

में हस्ब ज़रूरत कैंची की रासें लगा सकते हैं—इस तरह रासों को छोटा बड़ा करके कैसेही घोड़े के मूंह के लिये मोज़ूं कर सकते हैं॥

एक तर्फ़ सर रखने से घोड़े को रोकना

मसलन अंदर का घोड़ा अपने सिर को अंदर की तर्फ़ ही रखता है—तो बाहर वाले घोड़े की कैंची की रास ऊपर खेंचने से घोड़े का मूंह सीधा हो जावेगा—यह भी ख़्याल रहे कि अगर कैंची की रास ढीली की जावेगी तो इसी तर्फ़ की बाहर की रास भी तंग हो जावेगी. जिस से वह घोड़ा दूसरे घोड़े से पीछे हटता हुवा रहेगा॥

अलहदा २ सिर रखने वाले घोड़ों से सीधा खिंचवाना

मसलन हमारे पास दो घोड़े ज़ाहरा एकसां हैं—मगर अंदर का घोड़ा अपना सिर सामने बढ़ा हुवा रखता है—और मूंह का (मुलायम) है और बाहर का घोड़ा मूंह का सख़्त है—और सिर अपना छाती की तर्फ़ रखता है—ऐसी जोड़ी

स जोतों पर बराबर ज़ोर लेने के लिये
ज़ाहर है कि अंदर के घोड़े की रासें
बमुक़ाबले बाहर के घोड़े के लंबी कर
देना चाहिये—अगर दोनों कैंची की रासें
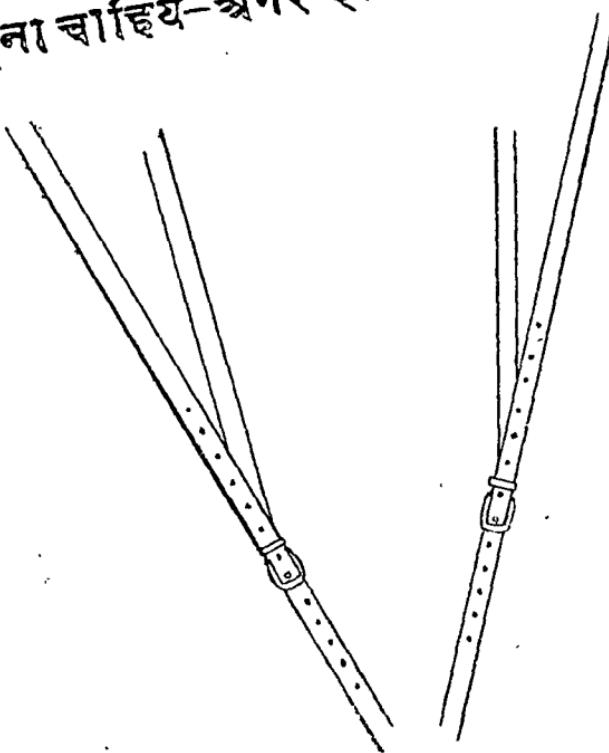
तसवीर नं: ९, कैंची की रास बराबर लंबी है.

बराबर लंबी रखकर बीच के सूराख
लगाई गई हों बकसवे के दोनों
तीन २ चार २ छेद और होंगे—

रासें ढीली या तंग की जा सकती हैं— (तसवीर नं: ९) ऐसी हालत में बाहर की रास की कैंची की रास दो घर ढीली
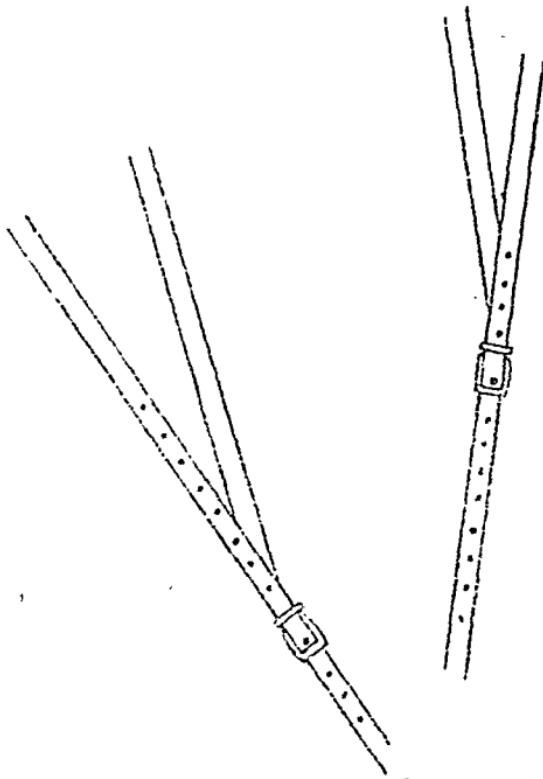
तसवीर नं: १०, बाहर की तर्फ़ की कैंची की रास उस घोड़े के लिये मोज़ूं है—जो मूंह पर पसरता है—अंदर की कैंची की रास उस घोड़े के लिये मोज़ूं है—जो सिर छाती के पास ले जाता है.

करनी चाहिये—और दोही घर अंदर की कैंची की रास तंग करना चाहिये—

(तसवीर नं: १०) फिर अंदर के घोड़े का नर्म मूंह है—तो दहाने में उसकी रास ऊपर ही ऊपर के घर में लगाना चाहिये—और बाहर के मूंह ज़ोर घोड़े की रास बीच के घर में—यह तरकीब ग़ालिबन घोड़ों के लिये मोज़ूं होगी—और चारों जोतों पर बराबर ज़ोर पड़ेगा—अब रासें तसवीर नं: १० के मूजब होंगी—जिस से ज़ाहिर होता है, कि अन्दर वाला घोड़ा अपने मुक़ाबले के घोड़े की बराबर सिर रख सकेगा और हंसलें भी दोनों के बराबर रहेंगे॥

कैंची की रासों को ज़ियादा तंग रखना आम ग़लती है—जिस से घोड़े अपना सिर सीधा रखने की एवज़ बम की तर्फ़ कर लेते हैं—यह आदत छुड़ाने के लिये घोड़ों को दहने बांयें बदल दो—यह क़सूर चोकड़ी में अगल की जोड़ी में अकसर देखने में आता है

कैंची की रासों को ज्यादा तंग नहीं रखना चाहिये

कि दोनों घोड़े बहुत नज़दीक रहते हैं—और आपस में रगड़ खाते हैं—यहां तक कि उनके बदन छिल जाते हैं॥

गै़र कैंची रासें छुड़-के रासों को ंगी ढीली करना

नये घोड़े निकालने के वक़्त इस तर-कीब से बहुत आराम मिलेगा—कि रासों के चपवों में कई छेद रखना चा-हिये—जिस से बगै़र कैंची की रासें बदलने के हर सिम्त घोड़े को तंग या ढीला कर सकते हैं॥

ोड़ों को बम र गिरने से रोकना

जोड़ी में बाज़ घोड़ों की ख़ुसूसन पहाड़ की उतराई में बम पर गिरने की आदत हो जाती है—इसका इलाज मुश्किल है—ग़ालिबन घोड़े का ऐसा इरादा करने से पहले ज़ोर का चाबक का हाथ लगाना अच्छा इलाज होगा—अगरचे बाज़ वक़्त थोड़े कांटे या झाड़ मूसे की खाल बम के लगा देने से काम निकल जाता है॥

रासें बायें हाथ की उंगलियों में से हरगिज़ फिसलने न पावें—और न किसी हालत में बाहर की रास दहनी तरफ़ मोड़ने में या सड़क पर ही घुमाने में बांयें हाथ से दहने हाथ में लें॥

रासें हाथ में से फिसलने न पावें

दहनी तरफ़ मोड़ने के लिये दहना हाथ जिस्म की तरफ़ खैंचना चाहिये—न कि जिस्म से बाहर की तरफ़ जिस तरफ़ तुम जाना चाहते हो॥

दहनी रास बांयें हाथ में मत लो

बाज़ वक्त घोड़ा मुतवातिर रोकने से या ऊंचे पहाड़ की उतराई में पीछे हटने से हंसले से कट जाता है—इसका इलाज यह है कि लोहे की चादर का टुकड़ा क़लई किया हुवा—ऊपर की तरफ़ हंसले के लगाना चाहिये—घोड़े को काम से बंद करने की ज़रूरत नहीं॥

हंसले से घोड़े का मदू न कटेगा

मालूम होगा कि जोत अकसर बढ़ जाते हैं, बराबर नहीं रहते—जिस वक्त

जोतों की लंबाई

ऐसा वाक़ै होवे तो छोटा जोत अन्दर लगा देना चाहिये—और निशान कर देना चाहिये—ताकि ग़लती से भी बाहर न लगाया जावे—बाज़ घोड़े के लिये बनिसबत बाहर के जोत के अन्दर का जोत निस्फ़ या एक घर तक छोटा रखने की ज़रूरत होगी-इस ग़रज़ से कि हंसले के दोनों तरफ़ बराबर दबाव रहै ॥

चाल में जोतों को खूंटियां

अगर चाल में जोतों की खूंटियां (चमड़े के तसमे) जोत रोकने के लिये लगाये जावें तो यह इतने लंबे हों कि जोत बिलकुल सीधे रहें—अगर इससे लंबे होंगे—तो घोड़े के ज़ोर लेने की हालत में यह उछलते रहेंगे—जोड़ी हांकने की बाबत और ज़ियादा हिदायतें चोकड़ी हांकने के बयान में मिलेंगी ॥

बिरेक गाड़ी हिन्दुस्तान में बहुत काम में आती है—इसलिये इसको

बाबत कुछ बयान करना मुफ़ीद होगा॥

यह आम क़ायदा होगया है कि जो गाड़ियां काम में आ रही, हैं इतनी नीची हैं—कि घोड़ों के पुट्ठे पादान के नीचे रहने की एवज़ बराबर रहते हैं-जिसका नतीजा यह होता है कि कोचवान अपने काम से बहुत दूर पड़ जाता है—फ़ी ज़माने बिरेक गाड़ियों के कोच बकस और "बूट" यानी पादान अनक़रीब कोच गाड़ी जैसे ही बनाये जाते हैं—जिनमें पादान घोड़ों के पुट्ठों के ऊपर रहते हैं, पादान का हिस्सा जो जोतों की खूंटी के ऊपर रहता है—ज़मीन से क़रीब पांच फ़ीट ऊंचा होना चाहिये—जिसके नीचे घोड़े को अच्छी तरह जगह मिले, अन्दर की नशिस्त ६ फ़ीट लंबी होना चाहिये, इसलिये कि दोनों तरफ़ चार चार सवारियां आराम से बैठ सकें—कोच बकस के पीछे एक

श्रौर बैठक भी जैसी कि कोच गाड़ी में होती है—बन सकती है—श्रौर अगर ज़रूरत होवे तो यह अलहदा होनेवाली भी बन सकती है—इस पर तीन सवारियां सामने देखती हुई श्रौर बैठ सकती हैं—श्रौर इन को धूल उड़ने की इतनी तकलीफ़ न होगी—जैसी अन्दर बैठने वालों को होती है. गाड़ी का ठाठ, (या होदा) चार बैज़वी कमानियों श्रौर एक आड़ी कमानी पर जो पिछले धुरे पर रहती है, या दो बैज़वी कमानियों पर आगे की श्रौर दो निस्फ़ श्रौर एक आड़ी कमानियों पर पीछे को लगाने से खड़ा हो सकता है—मगर पिछली तरकीब मरगू़ब तर है॥

बिरेक की नाप

श्रौसत ज़खामत बिरेक की हस्ब ज़ैल है:—ज़मीन से ठाठ की ऊंचाई ३'-६"—कोच बकस बग़ैर गद्दी के

७ फुट ऊंचा—आगे के पहूये ३'-२"-पिछले पहूये ४'-६"-बम की लंबाई १०'-६"-वज़न १२ हंडरेडवेट यानी १६॥।/२—सोलह मन बत्तीस सेर—पहूयों की लकीर ५' फ़ीट चोड़ी॥

फ़स्ल चहारम

करीकल और केप गाड़ी के बयान में.

जबकि जोड़ी हांकने की ख़्वाहिश है—मगर ज़ायद ख़र्च की वजह—अस्तबल की गुंजाइश न होने—या दूसरी वजूहात से-और गाड़ी ख़रीदना ना मुनासिब होवे तो मामूली टमटम में एक बम लगा सकते हैं—जो मझोले जानवर, या घोड़ों की जोड़ी हांकने के लायक़ थोड़े ख़र्च में हो सकती है—ताहम मामूली जोड़ी के सामान में टम टम के बम को कोई चीज़ रोकने वाली नहीं है इस लिये यह ज़मीन पर गिर पड़ेगा—इसी वजह से मरक़ूमा ज़ैल खिंचाव की दो तरकीबों में से एक अख़तियार करने की ज़रूरत होगी:—

(१) जिसको करीकल कहते हैं— उसमें एक जूड़ा दोनों घोड़ों की काठी पर एक तसमे से बम को रोके हुये रहता है. (२) जो केप गाड़ी मशहूर है—उसमें जूड़ा बम की अखीर की कड़ी में होकर घोड़ों की गरदन के ऊपर तसमों में लगा दिया जाता है॥

करीकल.

केप गाड़ी.

तरीक़ा अव्वल देखने में अच्छा मालूम होता है, और दूसरी तरकीब बारबरदारी के लायक़ है—मैं करीकल गाड़ी का बयान पहले शुरू करूंगा॥

मामूली टमटम में जिसके बम निकलते हुये हैं—जूड़ा, बम की जंजीरें, और ज़रूरी सामान क़रीब डेढ़ सौ रुपयों में लग सकते हैं—यानी पाउंड १०) "मैसर्ज़ होथ ऐलडरशाट" वालों ने मेरी खास टमटम में तरमीम की थी—दर असल यह गाड़ी उन्हों ने ही बनाई थी—लेकिन उस वक्त यह गुमान

करीकल का खर्च

भी नहीं था कि आखीर में इसके बम लगाया जावेगा—मुझे मालूम हुवा कि शुरू से ही यह गाड़ी उमदा काम देने लगी और किसी क़िस्म की और तरमीम या मरम्मत की ज़रूरत नहीं हुई—दर असल उसमें कोई ऐसी चीज़ ही नहीं है—जो बिगड़ सके॥

टमटम में बम किस तरह लगाना

गाड़ी बम से काम देने के लायक बनाने के लिये लोहे की चोकोर और बड़ी रकाब गाड़ी के सामने और इस से छोटी, गाड़ी के नीचे बीच में लगाना चाहिये, पिछली रकाब निहायत मज़बूत हो, और खूब कसी जावे—इसलिये कि इस में बम का सिरा रहेगा—और कभी कभी इस पर बहुत ही ज़ोर पड़ेगा—इसलिये एक फ़ालतू तख़ता गाड़ी के नीचे बीचों बीच आड़ा लगा दिया जावे—क्योंकि मामूली तख़ते जो अमूमन टम टम के नीचे लगाये जाते हैं—

बम की रकाब का ज़ोर रोकने के लिये बहुत पतले और कमज़ोर होते हैं—अगर यह रकाब उखड़ जावे या वह तख़्ता जिसमें वह लगी है फट जावे-तो सख़्त हादिसे का अहतमाल है—ज़रूर है कि बम भी दोनों रकाबों में बैठता हुवा हो—और एक कील से इन में ऐसा मज़बूत कसा जावे कि बाहर न निकल सके—बम के नीचे
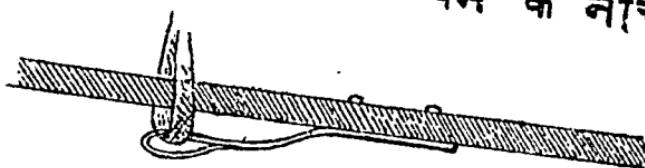
तसवीर नं: ११, करोकल के लिये बम में एक कमानी लगी है.

दूसरे सिरे पर जहां रोक का तसमा रहेगा एक मज़बूत कमानी लगानी चाहिये—(तसवीर नं: ११) जिस से ज़ियादातर ख़ास बम का और घोड़ों की पीठ ऊपर का झनझनाहट रफ़ा हो जावेगा—अगर चार घोड़े हांकने

की मनशा होवें तो एक हुक बेलन लगाने के लिये बम में लगा दिया जावे॥

जोतों के लिये बेलन

जोत लगाने के लिये दो बेलन बनाना चाहिये—गाडी सामने से सकड़ी होने के सबब यह गाडी में नहीं लगाये जा सकते हैं—इनके लिये दो लोहे के हुक छः इंच के क़रीब बाहर निकले हुये गाड़ी के सामने दोनों तर्फ़ नीचे कस-दिये जावें—जिन में यह बेलन इस तरह लगाये जावें कि उनके बीच में एक एक कीला (बोल्ट) हो—इस हालत में बेलन अपने कुतर में घूमते रहेंगे और जोत अच्छी तरह खेलते हुये रहेंगे और घोड़े आराम से अपना काम अंजाम दे सकेंगे-टमटम में और तरमीम की ज़रूरत नहीं है—बम लगाना इसके सम तोल (बैलेन्स) पर असर नहीं करेगा॥

जोड़ी और करीकल के सामान में

सिर्फ़ काठी का फ़र्क़ है—काठियां भारी और मज़बूत होना चाहिये जिन में ख़ास क़िस्म की फिरकीदार खूंटियां होवें—कि जिन पर करौकल का लोहे का जूड़ा रहे (तसवीर नं: १२) इनका

जोड़ी और करौकल के सामान में फ़र्क़.
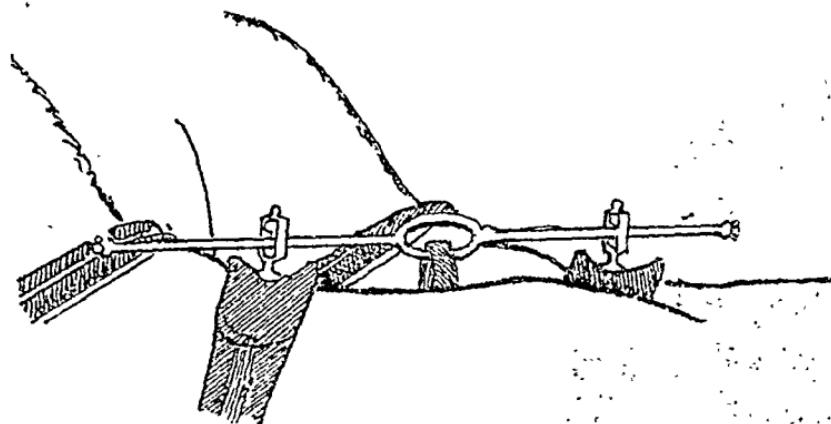
तसवीर नं: १२, करौकल का जूड़ा और फिरकीदार खूंटियां.

भारी और मज़बूत होना इसलिये ज़रूरी है कि बाज़ वक्त इन पर बम का बहुत वज़न पड़ेगा—ख़ुसूसन पहाड़ की उतराई में—काठी के दोनों तरफ़ चमड़े की चोंगियां टैन्डम के सामान

जैसी होवें—और इन में होकर जोत निकाले जावें—काठी के ऊपर की खूं-टियों में लोहे की फिरकियां होती हैं—करीदल का जूड़ा लोहे की फिरकियों पर रहता है—जिन के फिरने से जूड़ा एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ या एक घोड़े से दूसरे घोड़े की तरफ़ बग़ैर रोक या शोर के सरक सकता है—फिरकियां दो इंच तक नीची ऊंची हो सकती हैं-अगर घोड़े ऊंचाई में बराबर न हों तो एक तरफ़ के जूड़े का सिरा ऊंचा नीचा करने से जूड़ा बराबर हो सकता है॥

फरीकल का जूड़ा

जूड़ा लोहे का होना चाहिये—और इतना लंबा होना चाहिये कि जब घोड़े बराबर सीधे खड़े रहें—तो छः छः इंच काठी से दोनों तरफ़ निकलता हुवा रहे—इसके दोनों सिरों पर एक एक छोटा पेच होता है जिनमें चपटे गोल कावले कसदिये जाते हैं—जिस

से जूड़ा खूंटियों या फिरकियों से बाहर नहीं निकल सकता, जूड़ा खूंटियों में डालते ही यह पेच लगा दिये जाते हैं-इन को कस देने के बाद "V" इस सूरत की चाबियों से मज़बूत कर दिये जाते हैं—ताकि खुलने न पावें—और यह चाबियां जूड़े के शिगाफ़ में डाल दी जाती हैं— जो सिरों पर होते हैं-जूड़े के बीच में एक लंबा शिगाफ़ होता है उस में से रोकने वाला तसमा निकाला जाता है—(तसवीर नं: १२)

रोकने वाला तसमा

यह तसमा मज़बूत चमड़े का तीन इंच चोड़ा होना चाहिये—यह बम के नीचे की कबानी में होकर जूड़े के शिगाफ़ में एक मज़बूत डबल बकसवे से कस दिया जाता है—जोत इक्के के सामान जैसे ही होते हैं॥

बम को ऊपर उछलने से रोकना

गाड़ी के पछाड़ी की बैठक पर ज़ियादा वज़न होजाने से बम को

ऊंचा उछलने से रोकने के लिये एक तसमा जिसके दोनों सिरों पर डबल बकसुवे होंगे—एक घोड़े के तंग के तसमे में लगाकर और बम के ऊपर होके दूसरे घोड़े के तंग के तसमे में लगा सकते हैं—यह बम के ऊंचा न उछलने के लिये मुजर्रब तरकीब है—उस हालत में भी कि भारी आदमी पीछे की नशिस्त पर यकायक सवार होजावे—बाक़ी सब सामान जोड़ी के सामान जैसा होता है—अगर टमटम में इक्के के जोतों के लिये बेलन लगा हुवा होवे—तो वह जंजीरें जो बेलन और धुरे में लगी हों—बम की जंजीरों के काम में आ सकती हैं—और खरीदने की ज़रूरत नहीं है—मझोले घोड़े १४ हाथ की माप के या इस से ऊंचे जो एक पूरी ऊंची टम टम में एक घोड़ा जोतने से छोटा मालूम होवे—और

इसका वज़न भी नहीं खींच सके—जोड़ी में बहुत अच्छे मालूम होंगे और वज़न को भी कम मानेंगे—इस तरह करीकल गाड़ी में कार आमद हो सकेंगे—जबकि वह जोड़ी में और तरह शायद ही काम दें॥

घोड़ों बलकि मझोले घोड़ों की चोकड़ी भी बम लगी हुई टमटम में हांक सकते हैं—बशरते कि बम के सिरे पर हुक लगा हुवा होवे—जिस का ज़िकर हो चुका है—छोटी गाड़ी में चार घोड़े बहुत बड़े और चोकड़ी बहुत लंबी दिखलाई देती है—लेकिन मझोले घोड़ों की चोकड़ी देखने में किसी क़दर लंबी मालूम होगी—मगर बहुत बेहतर है—और थोड़ासा नुक्स बदनुमाई का इनके हांकने की खुशी और बग़ैर तकलीफ़ के दूरी दराज़ मसाफ़त तै करने के आराम के नज़दीक

होच है—एक उमदा आराम की कुशादः टमटम और अच्छे सिखाये हुए चार सझोले घोड़े जो दर हक़ीक़त मौजू हैं-मिलजाने के बाद और कोई दिलचस्प सूरत चार सवारियों के देहात में सफ़र करने के लिये नहीं है—बमुक़ाबले चार घोडों की ताक़त के खेंचने का वज़न इतना कम है—कि बग़ैर ना वाजिब घोड़ों पर ज़ोर पड़ने के तमाम पहाड़ तेज़ क़दमी से चढ़ सकते हैं, और लंबी मसाफ़त एक दिन में तै कर सकते हैं-वेलन अगरचे बहुत हलके हैं-मगर ठीक कोच गाड़ी जैसे ही होते हैं—और अगल का सामान भी वही होगा—इस के लिये ज़ियादा बयान करने की ज़रूरत नहीं है॥

केप गाड़ी — केप गाड़ी में अठारा इंच बम के सिरे से एक रोकने वाली लकड़ी या जूड़ा लगाया जाता है—जिसका असर

ये है कि बम ज़मीन पर नहीं गिरता है-यह जूड़ा हमेशा "लैन्स" लकड़ी का पांच फ़ीट लंबा और एक इञ्च के क़रीब क़ुतर में कई तरह लगाया जा सकता है—मगर बेहतर तरीक़ा ये है कि यह नीचे ऊपर आगे पीछे मुड़ सकें—ग़ालिबन उमदा और आसान तरीक़ा यह होगा कि एक छोटा तसमा जिस के दोनों सिरों पर पीतल के कड़े हों बम के गिर्द लगा कर कड़ों में जूड़ा डाल देना चाहिये जूड़े के बीच में चमड़ा लगा देना चाहिये ताकि बम से न छिले—अगरचे हंसले भी काम में आ सकते हैं—मगर सीनाबंद हमेशा लगाये जाते हैं—और इसलिये हंसले से ज़ियादा पसंद होते हैं—क्योंकि इनके साथ "ब्रीचिंग" रान पट्टी बमुक़ाबले हंसलों के ज़ियादा कार आमद होती है-बग़ैर रानपट्टी के घोड़ों के ऊपर गाड़ी

के गिरने का अहतमाल रहता है— दुमचियां और काठियों की चन्दा ज़रूरत नहीं है—सीनाबंद तसमों से, जो कि काठी में होकर उसी तरह निकलते हैं—जैसे जूड़े के तसमे लगाये जाते हैं॥

जूड़े के तसमे इसी के बीच में लगाये जाते हैं—जो काठी में होकर घोड़े के सट्ट पर छोटे बकसुवे वाले तसमों में जो जूड़े के बाहर की तरफ़ दोनों सिरों पर होते हैं लगाये जाते हैं॥

प गाड़ी
ा सामान
ाने वाले

मैसर्ज़ एटकिनसन और फ़िलिपसन न्यू कासल वाले ख़ासकर यह सामान बनाते हैं॥

टमटम से केप कार्ट बनाई जा सकती है-ठीक उसी तरह जैसे करीकल का बयान किया गया है—मगर बम कुछ लम्बा होना चाहिये॥

केप कार्ट के पसंद करने वाले इस की बाबत मुन्दर्जे ज़ैल फ़ायदे करीकल

तसवीर नंः १३, कोप गाड़ी का सामान.
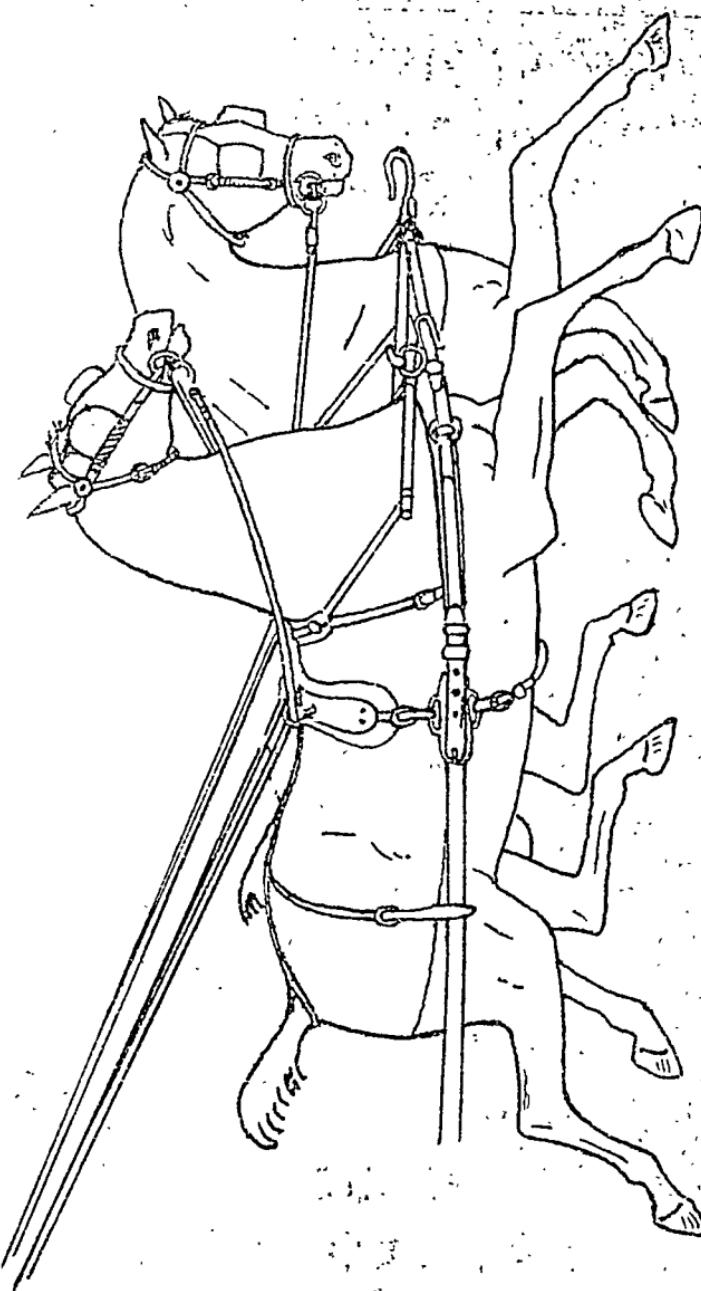
से ज़ियादा ज़ाहर करते हैं—अव्वल, भारी काठियों की ज़रूरत नहीं होती; दूसरे, अगर एक घोड़ा गिर गया तो दूसरे का उसके साथ गिरने का बहुत कम अंदेशा है॥

यह दोनों तरीक़े दूर दूर काम में आते हैं—क़रीबन तो हिन्दुस्तान में जहां टॉंगे के नाम से मशहूर है—केप कार्ट जनूबी अफ़रीक़ा में जिस से यह नामज़द है—ब नज़र कामयाबी दोनों में कम फ़र्क़ है॥
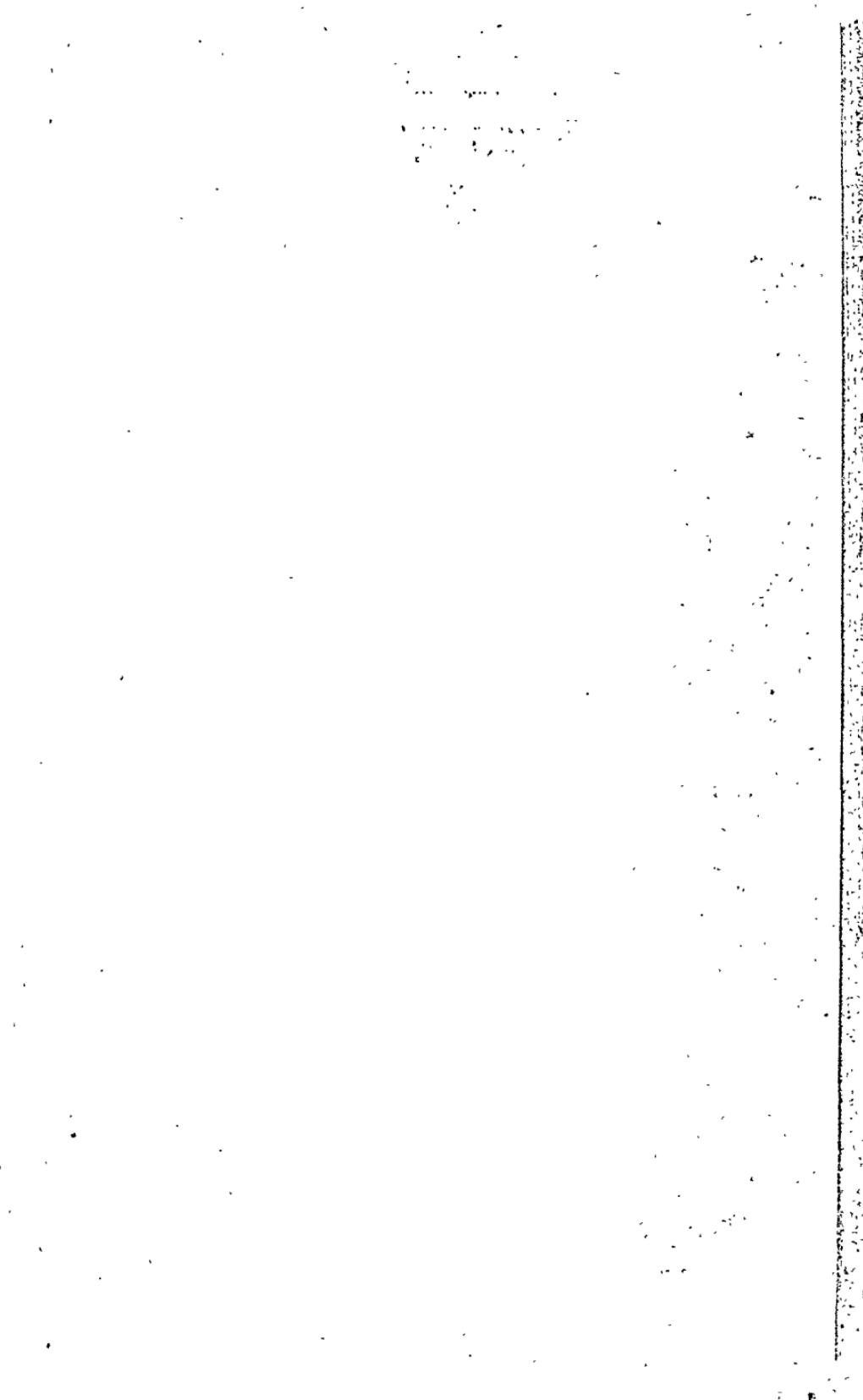
तसवीर नः १७, पहाड़ पर चढ़ते हुये,
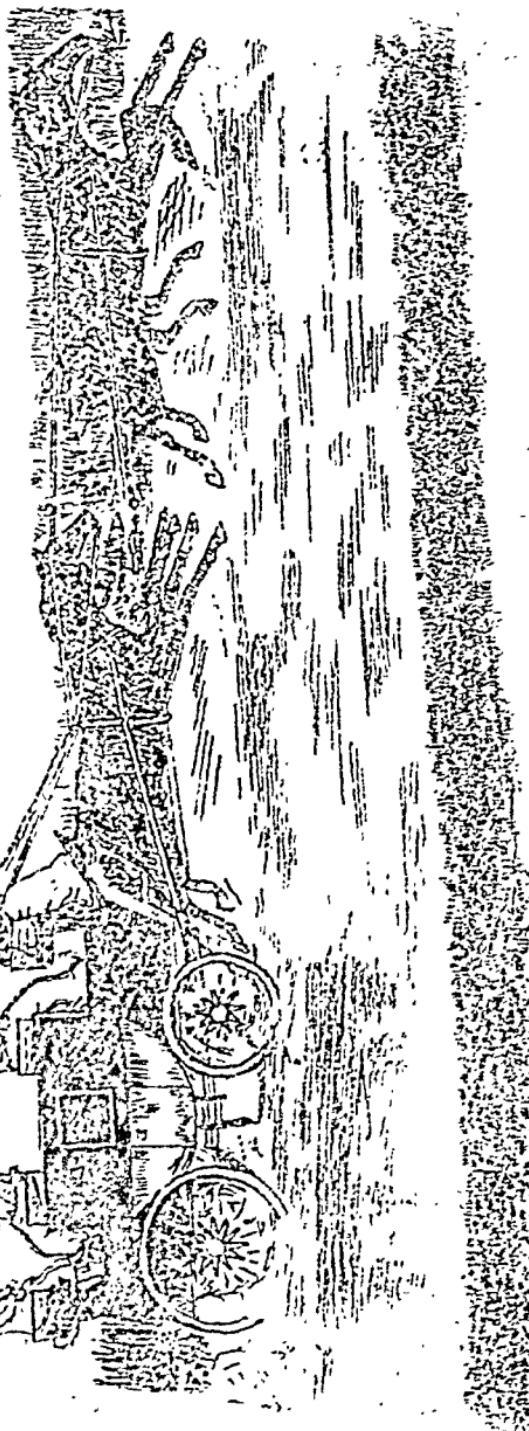
फसल पांचवीं

चोकड़ी हांकना—कोचवान को नसीहत के क़ायदे।

चार घोड़े हांकना सीखने के लिये (जैसा हांकना चाहिये) शुरू में इस दिल चस्प काम के क़ायदे और उसूल पढ़ना चाहिये—इस काम के शायक़ीन को किसी और काम में तफ़रीह नहीं होती जैसा कि एक शायसता चोकड़ी के पीछे बैठकर उमदा तोर से हांकते हों—कामिल कोचवान होने को कई बरसों का दायमी महावरा होना ज़रूर है—ताहम इस कमाल को पहुंच जाने के बाद भी येही मालूम होगा कि हनोज़ कुछ न कुछ सीखना बाक़ी है॥

दायमी महावरे की ज़रूरत है

और हुनरों के मूजब हांकने का भी महावरा रखना ज़रूर है—वरना

हाथ और आंखों को बहुत जल्द चुसती जाती रहेगी—और सिर्फ़ हाथ ही नहीं जो चाबुक और रासों पर कड़ा होजावेगा—मगर बाज़ू और उंगलियां भी जल्द थक जावेंगी—हाथ को दुरुस्त रखने के लिये गिर्रौं और लट्टू का इस्त-

लट्टूओं से मशग़ला करना

ज़ाम बहुत दिलचस्प शग़ल होगा—जब कि हमेशा हांकना न हो सके—इसके लिय बीस पाउंड वज़न की ज़रू-रत होगी (सीसे के लट्टू आसान होंगे) जिसके मज़बूत रस्सी लगाई जावेगी—ये रस्सी गिर्रौं "बे" के ऊपर होके (तसवीर नं: १५) जो दीवार से किसी निकली हुई चीज़ पर लगाई गई है—गिर्रौं "प १" कि जो फ़र्श पर है उसके नीचे होके अख़ीर में एक फंदे की शक्ल में ख़तम होगी—जिसमें चार रासें लगादी जावेंगी—फिर एक कुरसी पर बैठकर तसमों को रासों की तरह पकड़

कर ऊपर नीचे दस पंद्रा मिनट तक खैंचते रहो (चार पांच इंच ऊपर नीचे खेंचना काफ़ी होगा.) दूसरी तरकीब जो इस से ज़ियादः पेचीदः है— मगर मुव-

तसवीर नंः १५, लट्ठों पर क़सरत करना.
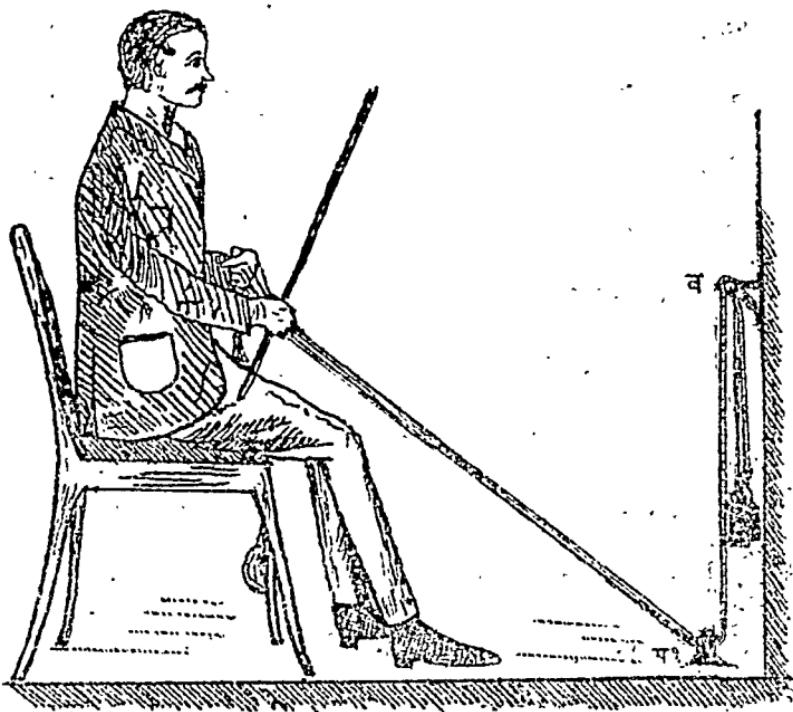
तदियों के लिये बहुत मुफ़ीद है— तसवीर नंः १६ से ज़ाहर है—जिस से बाज़ू और उंगलियों की क़सरत करते

वक्त गूंज बनाने के अलावा इस काम की कुल हिक्मतों का महावरा हासिल हो सकता है—इस महावरे के लिये आठ गिर्रियों की ज़रूरत होगी—चार गिर्रियां दीवार में ज़मीन से तीन चार फ़ीट ऊंची—तीन से छः इंच के फ़ासले तक—और दूसरी चार ठीक इनके नीचे ही फ़र्श पर दीवार के सामने लगाई जावेंगी—मज़बूत रस्सी हर एक नीचे की गिर्री में होकर फिर उनके ऊपर की गिर्रियों में से निकल कर लठवों के जो हर एक चार पांच पाउंड का होगा—बांध दी जावेंगी—इसी के दूसरे सिरों पर चमड़े के तसमे रासों जैसे लगा दिये जावेंगे—इस तरह चार रासें हो गईं—भीतर की दो रासें धुर की और बाहर की दो रासें अगल की होगईं॥

गिर्री और लठवों का इन्तज़ाम

घोड़ी हांकने के वक्त हाथ का वज़न

यह तजुरबे से दरयाफ़्त हुवा है कि मुलायम घोड़ी हांकने में क़रीब

क़रीब पांच पाउंड का वज़न हाथों पर होगा—जो मूंह ज़ोर घोकड़ी में बढ़ जावेगा और बाज़ वक्त पहाड़ की उतराई में ३५ पाउंड तक होजावेगा—इन

तसवीर नं: १६, चार लट्टू और गिरियों से थांमने का मश्कवरा करना.
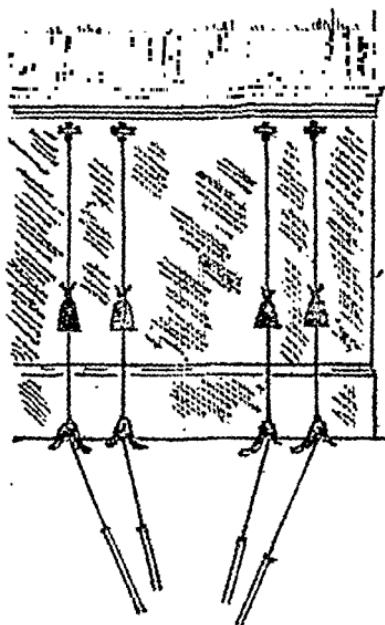
वज़नों से जो मुझे बहुतसे तजुरबों के बाद दरयाफ़्त हुवा है—सीखने वाले को मालूम होगा कि येही एक खास अमर है—जिसके पूरा करने के लिये उसको

क़ाबिल होना चाहिये—और बाज़ू के पट्ठे और उंगलियां ख़ूब मज़बूत हो जावें इस से पेशतर कि वह घोड़ी के उसताद होने की उम्मेद करे॥

लद्दुवों से मश्रावरा करते वक़्त चाबुक या उसकी एवज़ कोई लकड़ी दहने हाथ में रखना मसलहत है–इस ग़रज़ से कि इस हाथ से सही तोर से रासें संभालने को बहुत जल्द आदी हो जावोगे (तसवीर नं: १५)॥

अंगूठे का पट्ठा चाबुक-के लिये मज़बूत होना ज़रूर है

मुबतदी को अंगूठे का पट्ठा बनाना भी ज़रूरी अमर है—वरना ज़ियादा देर तक खुसूसन तेज़ हवा में चाबुक दुरुस्त थामने में थका हुवा मालूम होगा॥

मैसर्ज़ "व्हिपि और स्टेगल" ने मुझ को एक उमदा तरकीब लद्दू और गिरियों की बताई है—जो आसानी से लग सकती हैं—और देखने के लायक़ हैं॥

हांकते वक़्त जिस सीधा और

बिलकुल सामने रहना चाहिये—लेकिन अकड़कर बैठना बिलकुल मना है—कोच बकस की बैठक नीची और बनिस्बत सामने के पीछे से तीन चार इंच ऊंची रहना चाहिये—इसलिये कि कोचवान आराम से बैठ सके—टखने और घुटने दोनों पैरों के मिले हुये रहना चाहिये—बाज़ू बग़लों के नज़दीक इस तरह हों कि कोहनियां कूले की हड्डी से छूती हुई रहें—कोहनियों से नीचे का हिस्सा आड़ा और बांया हाथ जिस्म के बीच से तीन चार इंच फ़ासले पर रहे—इस तरह कि हाथ की पुश्त सामने हो जावे लेकिन किसी क़दर घोड़ों की तरफ़ झुकी हुई रहें—कलाई जिस्म की तरफ़ मुड़ी हुई हो और किसी हालत में बाहर की तरफ़ नहीं रहना चाहिये—घोड़ों के मूंह को क़ाबू में रखने के लिये यह सबसे उमदा तरकीब है—

कोच बकस पर कैसे बैठना चाहिये

टांगें कैसे रखना चाहिये

बाज़ू किस तरह रहें

हाथ कलाई किस तरह रहनी चाहिये

इसलिये कि कलाई कमानी का काम देती है—और एकसां दवाव रासों पर रख सकते हो पीछे झुके हुये बैठो और आगे की तरफ़ रासों पर टूध टूने वाले की तरह मत झुके रहो—कोचवान को किसी हालत में नीम इसतादा या पीछे की तरफ़ बैठक के सहारा लगाये हुये सीधी टांगें करके नहीं बैठना चाहिये, घोड़े के गिरनें या चमकने पर वह ज़रूर गाड़ी से उछल पड़ेगा॥

आगे को झुके हुये बैठना बुरा है

कोचवान को अच्छी तरह बैठना चाहिये

फ़सल छटवीं

चोकड़ी की रासों के बयान में.

उमदा तरीक़ा रासें पकड़ने का ये है—अंदर की अगल की रास ऊपर की उंगली के ऊपर—बाहर की अगल की रास ऊपर की उंगली और बीच की उंगली के दरमियान—अंदर की धुर की रास इनही उंगलियों के बीच में लेकिन बाहर की अगल की रास के नीचे—और बाहर की धुर की रास बीच की उंगली और तीसरी उंगली के दरमियान रहना चाहिये (तसवीर नं: १७.

रासें कैसे पकड़ना चाहिये

बांयें हाथ की नीचे की तीन उंगलियों से रासों को मज़बूत पकड़ना चाहिये कि फिसल न सकें—अंगूठा और ऊपर की उंगली से सिवा गूंज बनाने के

अंगूठे और ऊपर की उंगली से रासें नहीं पकड़ना चाहिये

रासों को हरगिज़ नहीं पकड़ना चाहिये—अंगूठा हमेशा दहनी तरफ़ मुड़ा हुवा रहे—और ऊपर की उंगली बिलकुल
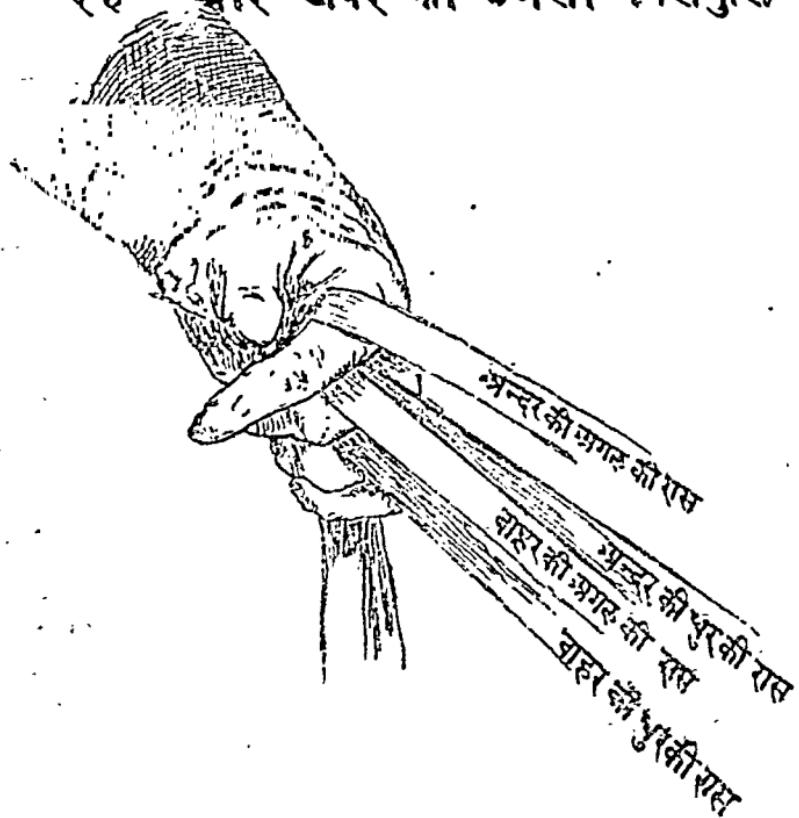
तसवीर नं: १७, चौकड़ी की रासें कैसे पकड़ना चाहिये.

खुली हुई—अंदर की अगल की रास ऊपर की उंगली के टखने के ऊपर या बराबर रहना चाहिये—न पहले या

दूसरे जोड़ पर मुवतदी को थोड़े अरसे बाद मालूम होगा कि अंगूठे का नीचे का पट्ठा अजीब तरह तयार हो जावेगा–कि रासें ख़ुद ब ख़ुद बग़ैर किसी ज़ाहरा कोशिश के इस पट्ठे और नीचे की उंगलियों में रह सकेंगी॥

रासों को लंबाई दुरुस्त करना

रासें दुरुस्त करने के कई तरीके हैं (१) सामने से आगे की तरफ़ खैंचना या पीछे हटाना (२) पीछे से खैंचना (३) या अगल की रासों को निकाल लेना॥

रासें घटाना

रासें घटाने का आम क़ायदा ये है–कि दहना हाथ बांएं हाथ के सामने रखकर हस्ब ज़रूरत रासें बांएं हाथ में होकर पीछे हटा दो–उस वक्त अंगूठे से काम मत लो क्योंकि इस से चाबुक पकड़े हुये हो—लेकिन मुवतदी को अकसर बांएं हाथ में होकर पीछे से खैंचना आसान होगा—इस वक्त अंगूठे और ऊपर की उंगली से काम

लेना चाहिये—मेरे ख़याल में मुन्दर्जे ज़ैल क़ायदे रासें दुरस्त करने के लिये आसान और मुअस्सर होंगे:—

चारों रासें घटाना

चारों रासें अगर घटाने की ज़रूरत हो तो पीछे से घटा सकते हैं—बांएं हाथ के दो तीन इंच फ़ासले से दहने हाथ से रासें पकड़ कर (इस तरह कि छोटी और तीसरी उंगली बाहर की रासों पर और बीच की उंगली अन्दर की रासों के दरमियान)—बांएं हाथ को दहने हाथ की तरफ़ सरकाने से यह फ़ेल जल्द और सफ़ाई से अदा होता है-इस से घोड़ों के मूंह पर यकसां दबाव रहता है—इस अमल की ज़ियादातर पहाड़ की उतराई में ज़रूरत होती है॥

धुर की दोनों रासें घटाना

धुर की रासें—इनको पीछे से खेंच कर घटाना बेहतर है—इस की पहाड़ की उतराई के वक़्त ज़रूरत है—ख़स्स-सन जबकि धुर की जोड़ी के बमकश

ढीले हैं—इसलिये कि बेलन अगल की जोड़ी की रानों को न लगें॥

अगल की दोनों रासें घटाना

अगल की रासें—इनको घटाने के लिये अगल की रासों को दहने हाथ में लेलो (तीसरी और छोटी उंगली बाहर की रास पर और ऊपर की या बीच की उंगली अन्दर की रास पर) फिर इनको ज़रूरत के मूजब घटा कर वापिस बांएं हाथ में लेलो, इनको लंबा करने के लिये सिर्फ़ आगे को बांएं हाथ में से खेंच लो॥

अगल की अंदर की रास घटाना

अन्दर की अगल की रास घटाने के लिये सामने से दहने हाथ से पीछे को सरका दो—या बांएं हाथ से बिलकुल निकाल कर ज़रूरत के मूजब घटाकर उसी तरह वापिस हाथ में रखदो॥

बाहर की अगल की रास घटाना

बाहर की अगल की रास सामने से पीछे सरका दो॥

अन्दर की धुर की रास—सब से

अन्दर की धुर की रास घटाना

ज़ियादा इस रास को अपनी जगह पर क़ायम रखकर घटाना मुशकिल मालूम होगा—घोड़ों के ज़ोर देने पर हमेशा यह रास सरक जाती है—और मुवतदी के लिये इसको पीछे से खेंचना उमदा तरकीब है—इस रास को इस तरह भी घटा सकते हैं—कि सामने से वाहर की अगल की रास को बढ़ाकर फिर दोनों रासों को पीछे को सरका दो॥

धुर की वाहर की रास घटाना

धुर की वाहर की रास—को दहने हाथ से पीछे को सरका दो॥

वीच की दोनों रासों को घटाना

वीच की दोनों रासें—इनको हमेशा आगे से ही दुरस्त करो, अगर अगल की जोड़ी तुम्हारे सामने सीधी नहीं चलती हो (जो अकसर होता देखोगे) और दहनी तरफ़ पड़ती हो—तो वीच की दोनों रासें वांयें हाथ में से सामने से खेंचकर थोड़ी लम्बी करदेने से घोड़े सीधे हो जावेंगे—इसके खिलाफ़ अगर

अगल की जोड़ी बांयें तरफ़ पड़ती हो तो दोनों बीच की रासों को सामने से पीछे सरकाकर घटा दो—ताहम अगर वह बांयें या दहने जा रहे हैं—वह सिर्फ़ इस सबब से कि अंदर की या बाहर की रास तुम्हारे हाथ में तंग है—तो सिर्फ़ उसी रास को इतनी ढीली करदो कि अगल के घोड़े सीधे होजावें॥

सड़क पर घुमाना।

ग़ालिबन मुन्दर्जे ज़ैल क़ायदे सड़क पर घुमाने या बांयें दहने मोड़ने के लिये आसान और मुफ़ीद होंगे:—

(१) बांयें तर्फ़ मोड़ने को बांयें हाथ के टखने को ऊपर की तर्फ़ मोड़ दो—और हाथ को बायें तर्फ़ से दहनी तर्फ़ लेजावो—घोड़े बांयें तर्फ़ की रासें तंग होने से इस तर्फ़ मुड़ जावेंगे॥

दहनी तर्फ़ मोड़ने के लिये हाथ को बांयें कंधे की तर्फ़ लेजावो—हाथ की पुश्त सामने रहै—इस तरह कि

ऊपर की उंगली का रखना नीचे और छोटी उंगली ऊपर आ जावे—इस तरह दहनी रास तंग हो जावेगी—और चौकड़ी इस तर्फ़ मुड़ जावेगी—पहले चाबुक बाहर वाले धुर के घोड़े के या बाद अज़ां अन्दर के घोड़े के चाल के सामने लगावो अगर घोड़े वक्त पर न मुड़ें॥

(२) बांएं तर्फ़ मोड़ने के लिये दहने हाथ से अन्दर की अगल की और धुर की रासें नीचे की उंगलियों से पकड़ कर याता अपने जिस्म के बीच की तर्फ़ खेंचो जिस से यह तंग हो जावेगी—या बांयें हाथ को आगे की तर्फ़ आने दो जिस से दहनी तर्फ़ की रासें ढीली हो जावेंगी—लेकिन बेहतर तो यह होगा, कि यह दोनों अमल एक साथ करो जिस का नतीजा यही होगा—यानी चौकड़ी बांएं तर्फ़

मुड़ जावेगी—दहनी तर्फ़ मोड़ने के लिये दहने हाथ की नीचे की उंगलियों से बाहर की अगल की और धुर की रासें पकड़ कर बांयें तर्फ़ के लिये जो बयान किया गया है—उसी तरह अमल करो चोकड़ी दहनी तर्फ़ मुड़
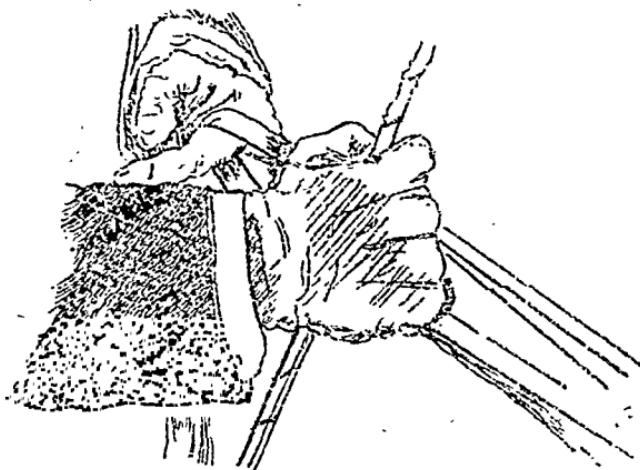
तसवीर नं: १८, दहने हाथ से चोकड़ी को ठहराना.

जावेगी—दोनों तरीक़ों में से पिछला तरीक़ा बहुत उमदा और मुरव्विज है—पहला तरीक़ा बहुत शायस्ता चोकड़ी के लिये मुमकिन है इसलिये कि इस से बहुत ही कम दबाव रासों पर पड़ता है॥

चौकड़ी ठहराना

घोड़ों को ठहराने के लिये या बांयें हाथ को आराम देने के लिये दहने हाथ को बांयें हाथ के आगे रखकर चाहरों रासें पकड़ सकते हो (तसवीर
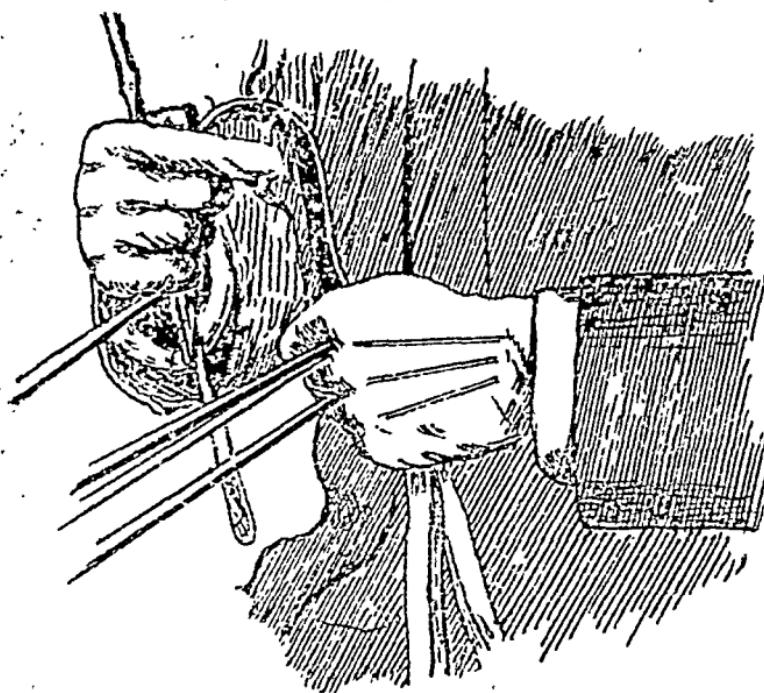
तसवीर नं: १९, रास की गूंज बनाना.

नं: १८) लेकिन घोड़े ठहराने की ग़र्ज़ से सिर्फ़ तीन ही रास पकड़ना आम पसंद है—इस तरह कि तीसरी और छोटी उंगली बाहर की रासों पर और

बीच की उंगली अन्दर की एक रास के ऊपर रहे॥

अब रास के गूंज बनाने के बारे में बयान करने की ज़रूरत है–गूंज बनाने के लिये दहने हाथ की छोटी और

रास की गूंज बनाना.
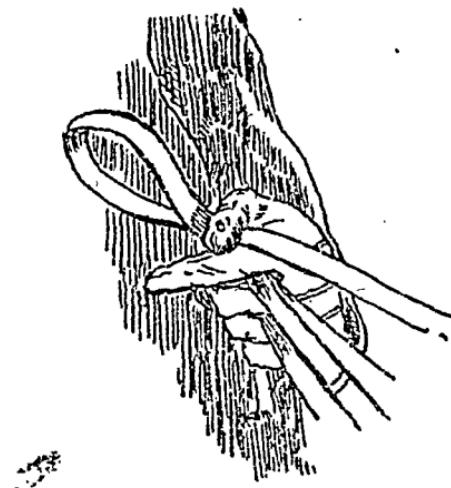
तसवीर नं: २०, अन्दर की अगल की रास का अंगूठे के नीचे गूंज बनाना.

तीसरी उंगली से (ऊपर की उंगली, या अंगूठे से नहीं) अगल की अन्दर की या बाहर की रास हस्ब ज़रूरत बांयें हाथ के आगे से करीब छः इंच के फ़ासले से पकड़ कर पीछे खेंचो इस तरह

अंगूठे के नीचे गूंज बनाना

कि बांएं अंगूठे के नीचे गूंज बन जावे- (तसवीर नम्बर २०-२१) जिसको ऊपर की उंगली के ऊपर अंगूठे से ज़ोर से दवालो॥

तसवीर नं: २१, अगल की बाहर की रास का अंगूठे के नीचे गूंज बनाना.

क़ायदा है कि गूंज बनाते वक्त बांएं हाथ को आगे मत बढ़ावो अगल की बाहर की रास की गूंज दहनी तर्फ़ मोड़ने के लिये ऊपर की उंगली के नीचे भी बन सकती है (तसवीर नं: २२)

दोनों तर्फ़ मोड़ने के लिये हस्ब ज़ैल क़ायदे हैं:—बायें तर्फ़ मोड़ने के लिये अगल की अन्दर की रास का (तसवीर नं: २०) या दहने मोड़ने के लिये अगल

तसवीर नं: २१, अगल की बाहर की रास की गूंज ऊपर की उंगली या नीचे बनाना.
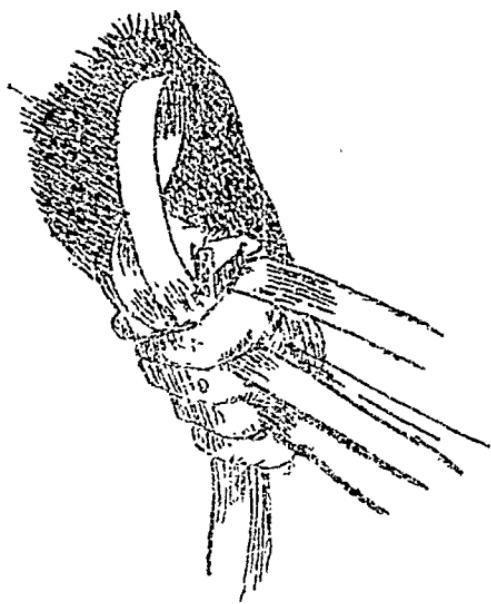
की बाहर की रास की गूंज बनावो (तसवीर नं: २१) या बायें तर्फ़ मोड़ने के लिये अन्दर की अगल और धुर की रासों से एक साथ मोड़ो—और जैसे

की वाहर की अगल और धुर की रासों से दहनी तर्फ़ मोड़ो उसी वक़्त मुक़ाबले के धुर के घोड़े को काठी के सामने चाबुक लगावो (गूंज बनाने के बाद) अगर घोड़ों के किसी तर्फ़ जल्दी मुड़जाने
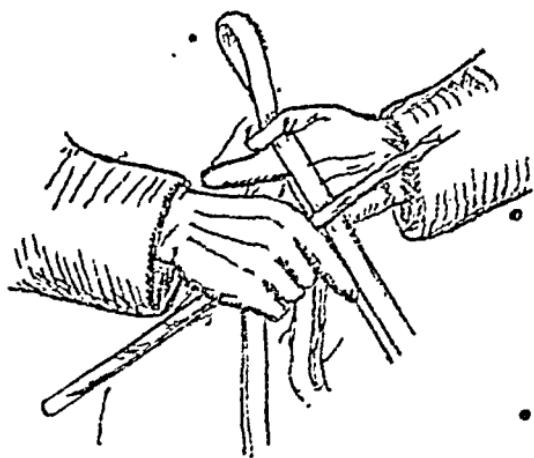
तसवीर नं: २३, दहना हाथ वाहर की रासों पर धुर के घोड़ों को कोना काटने से रोकने के लिये.

की ज़रूरत होवे—या अन्दर की धुर की रास वांयें अंगूठे के ऊपर डालदो फिर वाहर की अगल की रास की गूंज ऊपर की उंगली के नीचे बनाओ (तसवीर

नं: २२) इस से मालूम होगा कि दहनी तर्फ़ बहुत ही तंग मोड़ पर घोड़े आसानी से घूम जावेंगे—ख़ुसूसन पहाड़ की उतराई में॥

इस तरह बाहर की धुर की रास की गूंज बाएं हाथ की ऊपर की उंगली के नीचे और अंदर की अगल की रास की गूंज अंगूठे के नीचे बनाने से कैसा ही बाएं तर्फ़ तंग मोड़ हो बे ख़ौफ़ निकल जावेंगे—यह अमल, बाहर की धुर की रास अंगूठे के नीचे दबाने से ज़ियादा आसान और उमदा है॥

तंग मोड़ मोड़ना

धुर के घोड़े की रासों का जिस तर्फ़ तुम मुड़ना चाहते हो उसके ख़िलाफ़ तर्फ़ की गूंज बनाने को "ख़िलाफ़ गूंज बनाना" कहते हैं॥

ख़िलाफ़ गूंज बनाने की तशरीह

यह तरकीब धुर के घोड़ों से मोड़ते वक़्त कोना काटने से रोकने को उन घोड़ों के लिये ज़ियादा कारआमद

होगी जिनसे ज़ियादातर धुर में काम लिया है—किस लिये कि वे बहुत जल्द उस इशारे को जान जाते हैं जो अगल की जोड़ी की रासों से, जो धुर के घोड़ों के सिर के क़रीब से गुज़रती हैं, दिया जाता है॥

अकसर औक़ात जब धुर के घोड़े पहाड़ की उतराई में एक तर्फ़ पड़ें— और चाबुक लगाने की ज़रूरत है— तो चाबुक मारने से पहले—जिस तर्फ़ घोड़े गिरते हैं—उसके मुक़ाबले के धुर के घोड़े की रास की गूंज बनालो॥

गूंज बनाते वक्त आगे की तर्फ़ मत झुको

ख़बरदार, दहना हाथ अगल की रास की गूंज बनाने की ग़ज़ से बढ़ाते वक्त जिस्म आगे की तर्फ़ मत झुकावो यह बहुत बदनुमा मालूम होता है— और हमेशा ज़ाहर करता है कि रासें बांएं हाथ में बहुत तंग पकड़े हुए हो— जो जिस्म से बहुत दूर हैं॥

सीखने वालों से अमूमन यह ग़लती होती है—कि गूंज बनाते वक़्त बांयां हाथ बढ़ा देते हैं—जिस से ज़रूरत से ज़ियादा बड़ी गूंज बन जाती है—अगर बांया हाथ न बढ़ता—तो ज़रूरत से ज़ियादा गूंज न बनती॥

मोड़ ख़तम होने से पहले गूंज को हाथ से मत छोड़ो॥

दहना हाथ गूंज बनाकर घोड़ों को मुड़ने का इशारा करके मरक़ूमे ज़ैल अमल करने के लिये ख़ाली होजाता है—अगर बांएं तरफ़ मोड़ने को हो तो बाहर की दोनों रासें पकड़कर घोड़ों को जल्द मुड़जाने से रोको—(तसवीर नं: २३) अगर इतने जल्द न मुड़ें तो अन्दर की रासें पकड़कर मुड़ने में मदद दो—दहने तरफ़ मुड़ने में इसके ख़िलाफ़ अमल में लावो—या आख़िरश किसी धुर के घोड़े को,

धुर के घोड़ों को काना काटने से बचाना

मसलन मोड़ पर बाहर के घोड़े को चाबुक लगाकर जल्द मोड़ो—और अन्दर के घोड़े के लगाकर कोना काटने से बचावो॥

दूसरी गूंज बनाना जब पहली काफ़ी न हो

एक से ज़ियादा गूंज भी बना सकते हैं—अगर अव्वल मर्तबे में पूरी गूंज नहीं ले सके हो—लेकिन अमूमन एक गूंज ही काफ़ी होगी—अव्वल ही पूरे मोड़ की गूंज ले लेना चाहिये॥

बाज़ वक़्त तंग मोड़ पर दो गूंजों की भी ज़रूरत है—जब तुम जानो कि पहली गूंज अगल की जोड़ी को इतना जल्दी नहीं मोड़ती है॥

ख़िलाफ़ गूंज दहनी तर्फ़ को बनाना

दहनी तर्फ़ के ख़िलाफ़ गूंज इस तरह बनाई जाती है—अन्दर की धुर की रास को अन्दर की तर्फ़ से बांये अंगूठे के गिर्द दहनी तर्फ़ से बांये तर्फ़ लेकर बाहर की अगल की रास की ऊपर की उंगली के नीचे गूंज बनाओ

(तसवीर नं: २४) जब घोड़े मुड़ जावें तो पहले अगल की गूंज और बाद अज़ां अन्दर के धुर की गूंज छोड़ दो—बर ख़िलाफ़ इसके बांयें तर्फ़ के ख़िलाफ़ गूंज इस तरह बनावो—कि
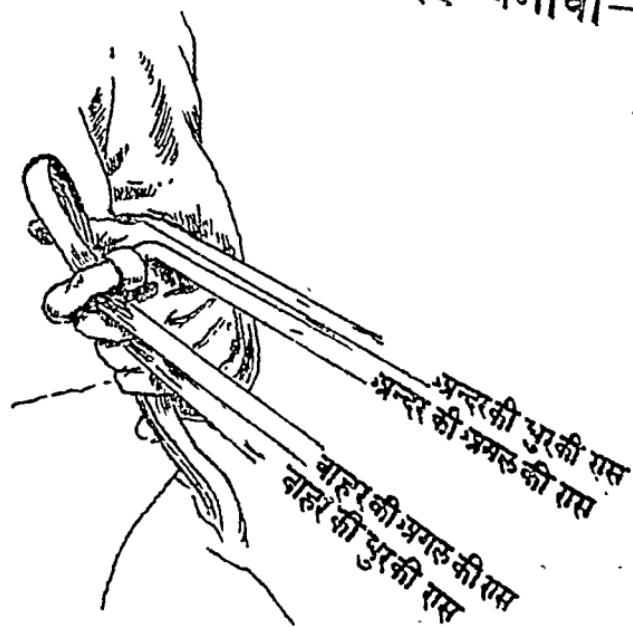
बांयें तर्फ़ के ख़िलाफ़ गूंज बनाना

तसवीर नं: २८, इहनी तर्फ़ के ख़िलाफ़ गूंज बनाना.

बाहर के धुर के घोड़े की रास की गूंज बांयें हाथ की ऊपर की उंगली के नीचे और फिर अन्दर के अगल की रास की गूंज अंगूठे के नीचे दबावो

(तसवीर नं २५.) दो गूंज अंगूठे के ही नीचे बनाने से यह बेहतर मालूम होता है—कि एक गूंज के लिये ऊपर की उंगली और दूसरी के लिये अंगूठा काम में लावो, इस तरह दोनों गूंजें अलग २ छोड़ सकते हो॥

पहाड़ की उतराई में रासें घटाना

पहाड़ की उतराई के वक्त अगल की रासें घटाने की ज़रूरत नहीं होना चाहिये—इसलिये कि सिर्फ़ धुर के घोड़े पीछे आने से गाड़ी रुकेगी—और उसी वक्त अगल की रासें भी इतनी घट जावेंगी कि अगल की जोड़ी भी ज़ोर नहीं दे सकेगी—अगर ज़रूरत है तो धुर के घोड़ों की रासें घटाने की है—खासकर जब पहाड़ बहुत ऊंचा है—और वमकश ढीले हैं॥

उतराई में अगल के घोड़े ज़ोर न देवें

पहाड़ की उतराई में अगल के घोड़े सिर्फ़ वेलनें के सिवा और कुछ न फेंसें—बस पर उनका ज़ोर बिलकुल

नहीं रहना चाहिये—वरना ऐसी हा-
लत में धुर के घोड़ों की गाड़ी रोकने
की कोशिश में मुश्किल होंगे—सिर्फ़
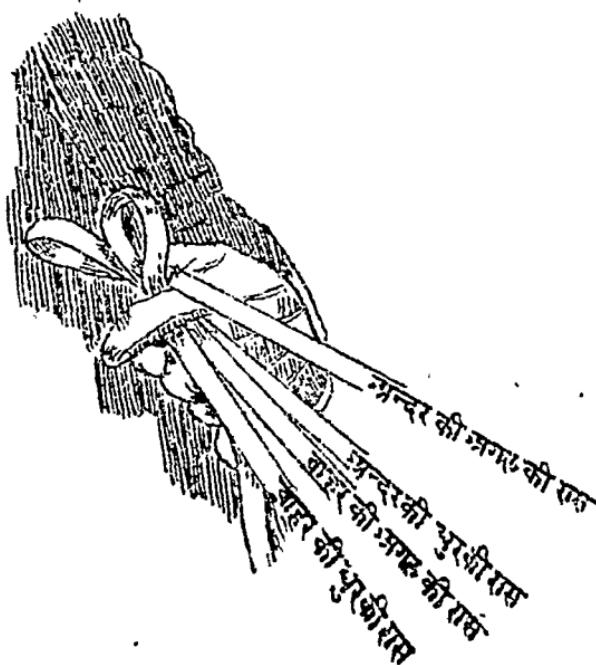
तसवीर नं: २५, बांयं बिमृत के "खिलाफ़ गूंज" बनाना.

बेलन उठाने के लिये ही जोत ढीले
रहें—मगर इतने ढीले न हों कि कुल
वज़न बेलनों का बम पर पड़े—जिस से
घोड़ों की गरदन पर वज़न बढ़ जावेगा॥

मोड़ पर अगल का ज़ोर वम पर न रहे

खबरदार रहो कि मोड़ पर अगल के घोड़ों का ज़ोर वम पर नहीं रहे वरने धुर के घोड़े उनके पीछे ही खिंचे हुये चले जावेंगे—जिस से वम टूटने का अहतमाल है॥

फ़सल सातवीं

चोकड़ी के चाबक के बयान में.

चाबुक कैसे पकड़ना चाहिये

तुमको चाबुक से सफ़ाई से काम लेना सीखने और किसी घोड़े पर चलाने के क़ाबिल होना चाहिये—चाबुक की डंडी दहने हाथ की हथेली से थामना चाहिये और अंगूठे से ऊपर की उंगली के अन्दर की तर्फ़ मज़बूत दबा देना चाहिये—इस हालत में नीचे की उंगलियां रासें पकड़ने के लिये खाली रहेंगी ताहम अगर पीछे से रासें खेंचने की ज़रूरत होवे तो नीचे की उंगलियों से डंडी को मज़बूत पकड़ कर ऊपर की उंगली और अंगूठे से काम ले सकते हैं॥

हमेशा होशयार रहो कि चाबुक

इसी की जगह पर हो और सर दुरस्त लिपटी हुई होवे॥

चाबुक पकड़ने के ज़ाविये

चाबुक बांये तर्फ़ सामने ३० डिगरी के—और ऊपर की तर्फ़ ४० डिगरी के—ज़ावियों पर पकड़ना चाहिये—न कि तसवीर नं: २६ की तरह॥

चाबुक की डंडी पर सर की तीन चार आंटी होना चाहिये, अव्वल आंटी पर के पास या ऊपर से जो हमेशा सिया डोरे से लिपटा हुवा होता है—शुरू होना चहिये॥

सर में गुड़यां नहीं होना चाहिये

इस अमर का ध्यान रखो कि चाबुक पकड़ने में दोहरा सर में गुड़यां न होवें—औ सीधी लटकती रहे—अगर गुड़यां होवे तो डंडी को एक दो दफः घुमाने से निकल जावेंगी या हाथ से निकालदी जावें॥

चाबुक को ज़रूरत से ज़ियादा मज़बूत मत पकड़ो, दर हक़ीक़त जब

रासों पर हाथ होवे—तो कुछ देर के लिये गिरफ़्त छोड़ दो जिसको रासें पकड़ लेंगी—और अंगूठे को भी आराम मिल जावेगा—ढीला पकड़ने से ख़ुद ब ख़ुद चाबुक की सर अपने वज़न से नीचे को सीधी लटकती रहेगी अपने जिस्म की तर्फ़ चाबुक पकड़ा हुवा बहुत बदनुमा मालूम होता है—जब तक कि मुबतदी इसको सीधा रखने की तर्फ़ तवज्जो न रखेगा—यह उसी तर्फ़ बारबार हो जावेगा॥

सर का अंगूठे के नीचे

सर का पाना अंगूठे के नीचे अन्दर की तर्फ़ रहे—जिस से यह न सरके—चाबुक उस जगह से पकड़ना चाहिये जहां से यह अच्छी तरह तुल जावे—डंडी का सिरा अगले बाज़ू के पास या नीचे—कलाई मुड़ी हुई और कोहनी बग़लों के पास रहना चाहिये॥

जब कि दहना हाथ रासों पर नहीं

चाबक के हाथ की जगह

है—और चाबुक से भी काम नहीं लेना है—ताहम यह बांएं हाथ के क़रीब रखना चाहिये—इस तरह कि अगला बाज़ू आड़ा रहे—उस वक़्त इस को रान पर रख सकते हैं—मगर नाज़ुक वक़्त के लिये हर वक़्त तयार रहे॥

चाबक का सम तोल होना

उमदा चाबुक इसको बीच की शाम के पास पकड़ने से अच्छी तरह तुल जाता है—(यह अंगूठे के नीचे रहना चाहिये) वरना चाबक का ऊपर का सिरा भारी मालूम होगा—बीच की शाम उसको कहते हैं—जो डंडी के मोटे सिर से दस इञ्च फ़ासले पर होती है॥

चाबक पसंद करना

चाबक पसंद करने में इन बातों का खयाल रहना चाहिये—(१) मरक़ूमे सदर के मूजब हाथ में तुल जावे (२) चाबक हलका और लचकदार होना चाहिये—लचकदार चाबक इसलिये

मुफ़ीद मतलब है कि बहुत आसानी से सर लपेटन के लायक़ हो जाता है (३) थोड़ी गांठें सिरे पर होना चाहिये यह सर के रोकने में काम आती है—अगरचे ज़ियादा गांठें होने से यह जलदी नहीं खुल सकेगी॥

चाबक को सर कैसे लपेटना

उमदा तरीक़ा चाबक की सर डंडी के लपेटने का यह है कि दीवार पर एक हुक या S ऐसा निशान खड़िया से बनावो—चाबक को सही जगह पकड़कर सामने खड़े होजावो—सर को खोलकर पाने को दहने हाथ की बीच की उंगली के नीचे पकड़ो ऊपर की उंगली डंडी की तर्फ़ होवे (तसवीर नं: २७) फिर चाबक की नोक को उस नक्श के ऊपर जलदी से इस तरह फिरावो—कि नीचे के सिरे से शुरू करके बांएं से दहनी तर्फ़ ले जावो और ऊपर का सिरा "S" का कलाई की

पुश्त से इस तरह खतम करो कि पहले यह ऊपर रहे फिर नीचे हो जावे— जिस से आखीर में उंगलियां ऊपर हो जावेंगी "S" शुरू करने के वक्त चाबक
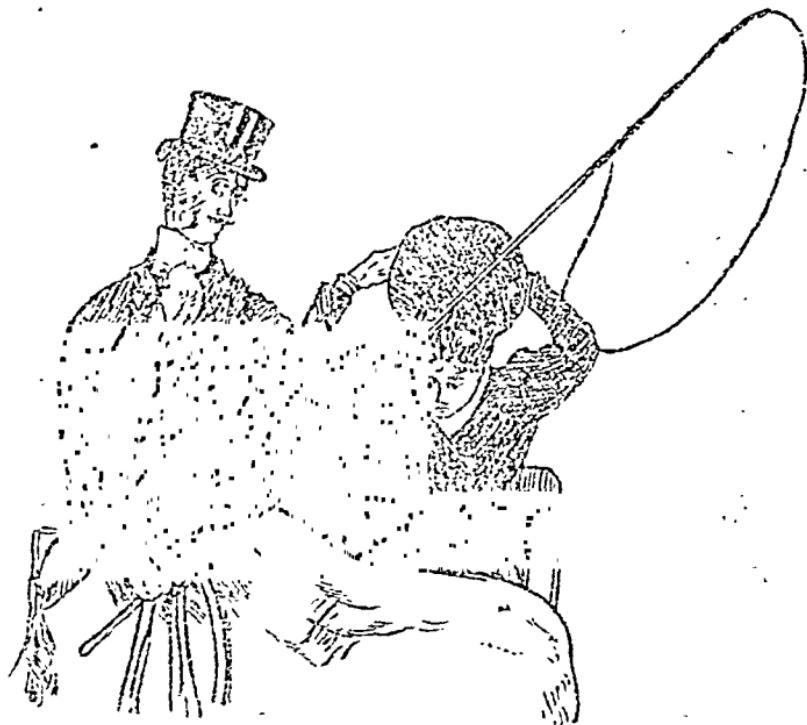
तसवीर नं: २६, चाबक गैर मामूली जगह पकड़ने का नतीजा.

की नोक नीचे हरगिज़ मत करो और सर को भी झटका मत दो लेकिन इसके खिलाफ़ इसको डंडी के ऊपर लावो—

अगर तुमको मालूम होवे कि सर ज़ि-याादा नीचे लिपट गई तो उसी तरह फिर लपेटने में ऊंची चढ़ जावेगी लेकिन
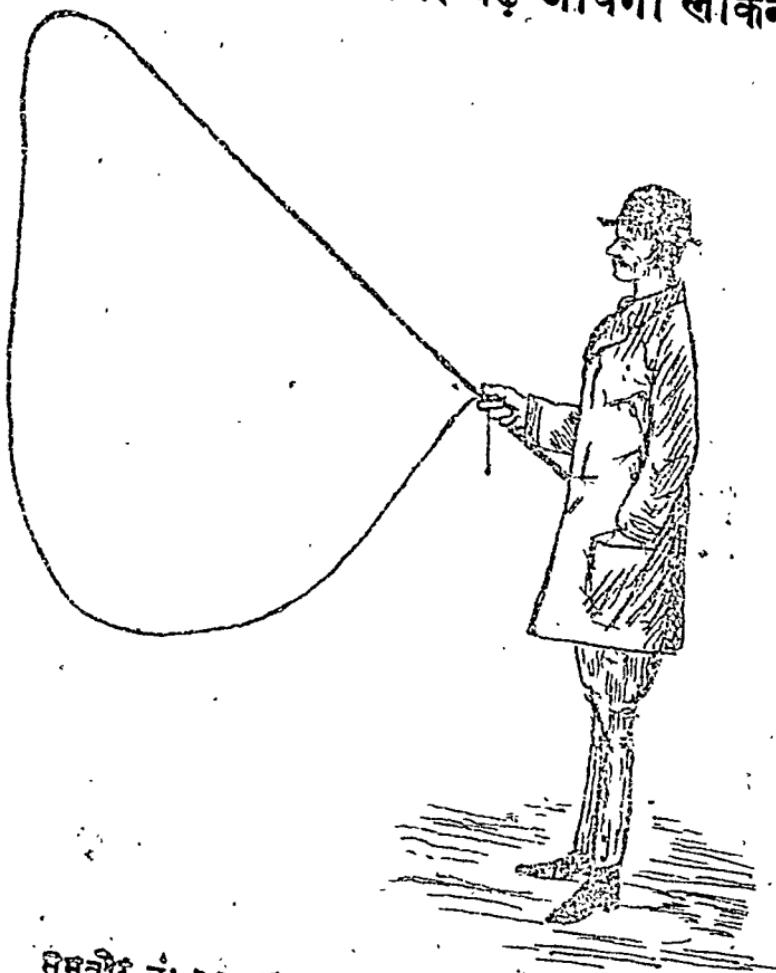
तस्वीर नंः २७, चाबक पर सर लपेटने को तैयार है.

किसी क़दर ज़ियादा झटका देकर छोटा (ऐस) S बनावो—यह अमल क़रीब २

कलाई और थोड़ी बाज़ू की हरकत से किया जाता है॥

सर की गूंज निकालना

तसवीर नं: २८ के मूजब चाबक पकड़ लेने के बाद वह गूंज जो डंडी के बीच में मिलेगी निकालना पड़ेगा- इसलिये कि सब आंटियां दहनी तर्फ़ से बांयें तर्फ़ डंडी पर होजावें वरना यह जल्दी खुल जावेंगी—यह अमल करने के लिये चाबक की डंडी को इतना नीचा करो कि वह बीच की गूंज बांएं अंगूठे से पकड़ सको (ख़बरदार इस वक़्त बांयां हाथ इसकी सही जगह से मत बढ़ावो) फिर चाबक का हाथ जितना बढ़ सके दहनी तर्फ़ बढ़ावो—कलाई झुकी हुई और सर बांएं अंगूठे से मज़बूत दबी हुई रहे—(तः नं: २९) इस हरकत से डंडी के नीचे की तर्फ़ की आंटियां खुल जावेंगी—अब चाबक को बांएं अंगूठे के नीचे रखो और बचा

हुई सरकी एक दो आंट
लगावो (तसवीर नं: ३०)
दहने अंगूठे से फिर मज़बू
ताकि सर ढोली न हो

तसवीर नं: २८, गूंज निकालने से पहल

पाना ऊपर को सरक कर
जावे—तो बाएं अंगूठे औ
उंगली से खेंचले और दहने

सर को नरम रखना

सर को सलाद का तेल या बकरे की चरबी लगाकर नरम रखना चाहिये— वरना डंडो पर लपेटने के बाद अपनी सही जगह पर नहीं रहेगी॥

तसवीर नं: २९, सर की गूंज निकालना.
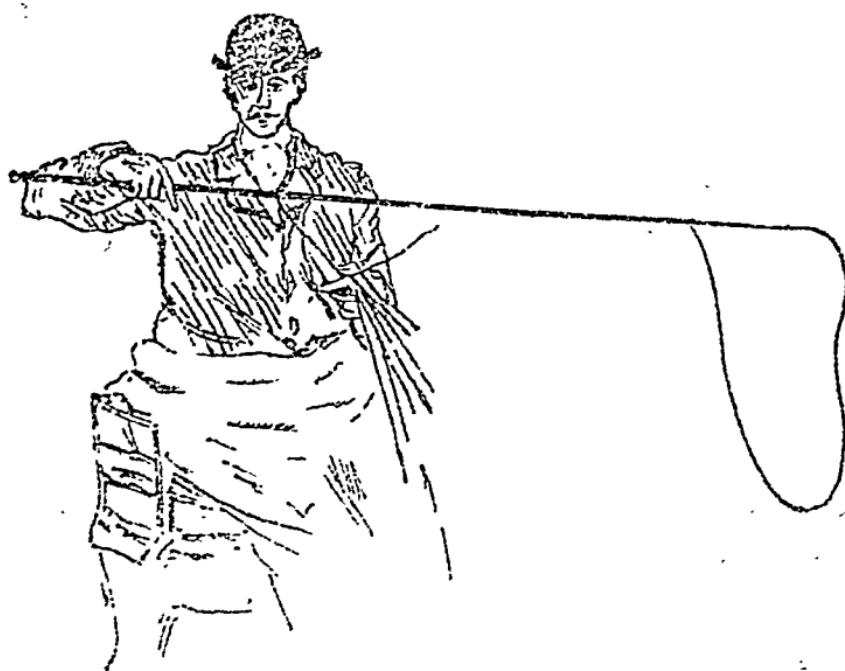
घोड़ों के चावक लगाने में मरकूमे ज़ैल क़ायदे काम मे लाना चाहिये :—

धुर के घोड़ों के चाल के सामने चावक मारना चाहिये—जिस से वे

घोड़ों के चाबुक कैसे लगाना चाहिये

लात नहीं मारेंगे—अगर वे लात मारने का इरादा करें—तो उनके कानों के पास चाबुक का सख़्त हाथ लगाने से वे इस हरकत से बाज़ रहेंगे—हमेशा

तसवीर नं॰ २० सर को डंडी के दस्ते के गिर्द लपेटना.
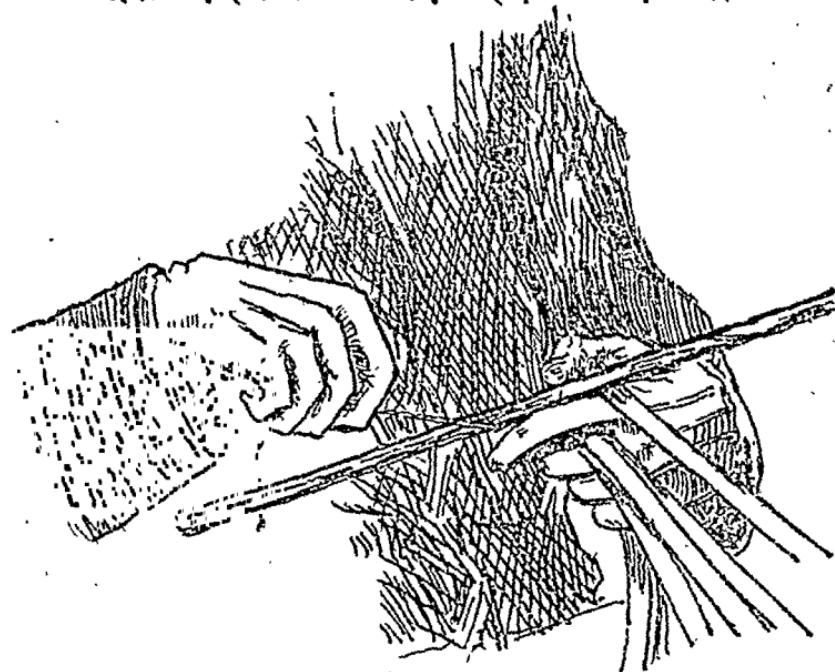
बाएं तर्फ़ से दहने तर्फ़ चाबुक ले जावो कलाई को कड़ी रखो और जहां तक हो सके इस हरकत को कोहनी से करो–न कि सामने के बाज़ू घुमाने से—अगर

अन्दर का धुर का घोड़ा तेज़ मिज़ाज होवे—तो बाहर के धुर के घोड़े को बाहर की तर्फ़ से चाबक लगाना बेहतर होगा—अगर अगल की रासें लम्बी होवें तो धुर के घोड़े के चाबक लगाना फ़ज़ूल है—ऐसी हालत में पहले अगल की रासें कम करलो—और फिर धुर के घोड़ों के चाबक लगावो वरना जैसे धुर के घोड़े हँसले पर ज़ोर लेंगे—अगल वाले और तेज़ हो जावेंगे—और धुर के घोड़े पहले की तरह पीछे ही को लटकते रहेंगे॥

अगल के बाहर के घोड़े के चाबुक लगाना

अगल के बाहर के घोड़े के चाबुक लगाने की यह उमदा तरकीब है—कि पहले चाबुक के सिरे को गाड़ी के बांए तर्फ़ से दहनी तर्फ़ लावो—और डंडी मुतवातिर घुमाकर सर को छोड़ दो—मगर सर का पाना ऊपर की उंगली के नीचे दबा रहे—फिर दहने हाथ को

बांएं हाथ के पास लावो—और पाने को बांए अंगूठे से दबालो कि सर कहीं अटकने न पावे—अब चाबक की डंडी को वापिस दहनी तर्फ़ लावो यहां तक कि कलाई कन्धे की सीध में आ जावे—उस वक़्त पाना अंगूठे के नीचे से छोड़ दो कलाई की थोड़ीसी हरकत से यह अमल करना चाहिये डंडी को गोल घुमाकर जल्द सामने ले आवो—और जिस जगह चाबक लगाना चाहते हो उससे किसी क़दर आगे को चाबक की नोक से ताको—इस हरकत से चाबक की सर ख्वाह नीचे या ऊपर सामने को जा सकेगी—मगर भीड़ में या दरख़्तों के नीचे सर का नीचे जाना ही बेहतर होगा—चाबक के पाने की आवाज़ घोड़े के ऊपर ही होना चाहिये—हवा में किसी हालत में नहीं-जोकि पिछली नशस्त की सवारियों के लिये

खतरनाक है और अलावा इसके अनाड़ीपन मालूम होता है॥

चावक अगल के घोड़े के रानों पर मारना चाहिये क्योंकि पुट्ठे पर मारने से पसीनों में धूल की लकीरें बुरी मालूम होती हैं॥

अगल के अन्दर के घोड़े के चावक मारना

अन्दर के अगल वाले घोड़े के चावक मारने के लिये सरकूमे सदर के मूजब शुरू करो—मगर चावक की सर गाड़ी के बाहर की तर्फ़ लेजाने के बजाय हाथ को अच्छी तरह ऊपर को लेजावो—और डंडी को अच्छी तरह घुमावो—इस तरह कि चावक की सर सवारियों के सिर के ऊपर से बाहर की तर्फ़ से अन्दर की तर्फ़ जावे—फिर डंडी का सिरा नीचे झुका कर किसी क़दर सामने को हाथ जाने दो—तुम को मालूम होगा कि धुर वाले अन्दर के घोड़े के सिर को बचाती हुई अन्दर

के अगल के घोड़े के लगेगी॥

अगल के घोड़े के चाबक लगा देने के बाद गाड़ी के अन्दर की तर्फ़ से सर को वापिस लेलेना चाहिये, सर को सीधे ही हाथ में पकड़ने का इरादा मत करो वरना धुर के घोड़ों के या उस सवारी के जो कोच बक्स पर बैठी है, चाबक लग जावेगा—लेकिन सर को सामने की तर्फ़ अगल के घोड़ों के ऊपर से घुमाकर ले जावो और फिर डंडी को सीधा पकड़ने से सर तुम्हारे हाथ में या तुम्हारे बाज़ू के नीचे आ जावेगी—तसवीर नं: ३१. इस तरह दहना हाथ घोड़ों को संभालने के लिये ख़ाली हो जावेगा—जिसकी हमेशा ज़रूरत मालूम होगी—सर को गाड़ीके अन्दर की तर्फ़ लेजाकर और डंडी को सीधी खड़ी रखकर धुर के घोड़े की पीठ पर से वापिस पकड़ सकते हैं

सर को वापिस लाना

तसवीर नं: ३१ अगल को चाबुक लगाकर घर को वापिस पकड़ना।

अगरचे बमुक़ाबले पहली तरकीब के यह जल्द होजाती है—मगर ऐसी आसान और बे ख़तर नहीं है॥

अन्दर के अगल के घोड़े के बेलनों के नीचे मारना

अन्दर के अगल वाले घोड़े को बेलनों के नीचे बाहर की तर्फ़ से चाबक मार सकते हैं—यह अमल करने के लिये चाबक की सर को बाहर की तर्फ़ गाड़ी से दूर लेजावो—और डंडी के नीचे सर को झुलाते हुए इस तरह लावो कि पाना बाहर वाले अगल और धुर के बीच में से बम के सिरे के नीचे से गुज़रे—इसके लिये बहुत महावरे की ज़रूरत है वरना चाबक ग़लती से बाहर के घोड़े के लग जावेगा- दूसरा उमदा तरीक़ा ये है कि चाबक की सर को धुर वालों के सिरों के बीच में होकर जाने दो और अगल के पुट्ठों पर लगावो॥

जब कि सर कलाई या हाथ के

सर का पाना लपेटने से पहले अंगूठे के नीचे रखा

नीचे पकड़ चुके हो—तो दहने हाथ को बांयें हाथ के क़रीब लाने से सर को आसानी से अंगूठे के नीचे दबा सकते हो इस जगह इसको मज़बूत पकड़ कर कलाई को झुकाये हुए चाबक को दहनी तरफ़ सामने लेजावो और सर को इसी हाथ की बीच की उंगली में से फिसलने दो—यह अमल जबतक कि सर का पाना दहने हाथ में न खिंच आवे, बराबर किया जावे—उस हालत में सर को हस्ब मामूल डंडी पर लपेट सकते हैं—अगर तुम सर को दहने हाथ में सीधी पकड़ो तो डंडी का सिरा ऊंचा लेजाने और सर को बीच की उंगली में से फिसलने से बीच की उंगली में पाना पकड़ सकते हो—मुन्दर्जे सदर से यह तरकीब उमदा नहीं है—क्योंकि सर छूट जावेगी और फिर पकड़नी होगी—होशयार रहो कि जब सर का

पाना दहने हाथ में है—तो सर को डंडी पर लपेटने से पहले अच्छी तरह देखलो कि सर किसी चीज़ में इलझी हुई तो नहीं है—क्योंकि यह अकसर पादान और रासों में इलझ जाती है—जिस से डंडी पर गिरफ़्त बिलकुल ख़राब हो जाती है—दहने हाथ में रासें होने की हालत में घोड़े को चाबक मत मारो यह बदनुमा मालूम होता है—और कारीगरी से बईद है—अगर तुम दहने हाथ में रास की गूंज पकड़े हुये हो—जो कि दहनी तर्फ़ मोड़ने के वक़्त ज़रूरी है—तो पहले गूंज को बांएं अंगूठे या ऊपर की उंगली के नीचे रखलो—और फिर चाबक काम में लावो॥

सर पादान में न इलझे

दहने हाथ में रास होते हुए चाबक मत मारो

अगल के घोड़ों के चाबक मारते वक़्त अगर सर का सिरा बेलन या सामान में इलझ जावे, उस वक़्त इसको न तो झटका दो, न खेंचो, लेकिन ढीली

सामान में इलझी हुई सर सुलझान

देकर ऊपर नीचे हिलावो वरना और ज़ियादा उलझ जावेगी॥

चाबुक रान के नीचे.

अगर दहने हाथ से रासें संभालने की ज़रूरत होवे—और उस वक्त सर पकड़ी हुई है—तो चाबक के दसते को रान के नीचे पकड़ कर बैठ जावो—अगर चाबक बांएं तर्फ़ दरख्तों की शाखों में या और किसी चीज़ में उलझ जावे तो उस वक़्त तुम को सिर्फ़ चाबुक छोड़ देना चाहिये-बांएं तर्फ़ को हाथ अच्छी तरह ऊंचा करके—इस लिये कि बांएं तर्फ़ कोच बक्स पर बैठने वाले के न लगे—चाबक के दायमी महावरे की निहायत ज़रूरत है—कोई शख्स बग़ैर चाबक पर क़ाबू हासिल करने के अच्छी तरह नहीं हांक सकता है—और इस को इस तरह काम में ला सके कि जिस घोड़े के चाबक लगाया जावे उसके सिवा दूसरे को मालूम न हो॥

फसल आठवीं

चोकड़ी की बाबत चलाना रोकना मोड़ना.

चलने के पेश्तर चारों तर्फ़ अच्छी तरह देखलो—कि घोड़े दुरस्त जुड़े हों और सामान सही बैठता हुवा दुरस्त लगा हुवा हो खुसूसन दहाने और रासें सही जगह पर लगाई गई हों यह निहायत ज़रूरी अमर है कि बम की कील भी इस की सही जगह पर लगी हुई होवे नोकरों पर हसर करना हमेशा खतरनाक है॥

चलने से पेश्तर चारों तर्फ़ देखलेना चाहिये.

किसी हालत में अगल की रासों को बकसुवा नहीं लगाना चाहिये—इस ग़रज़ से कि अगर बीच का बेलन टूट जावे—तो अगल के घोड़े रासें खेंच कर अलहदा हो सकेंगे-सफ़री गाड़ियों

अगल की रासों के बकसुवा नहीं लगाना चाहिये.

में धुर और अगल की रासों के बकसुवा नहीं लगाते हैं॥

चाबुक इसके खाने में दुरसती से रखो अगर पहले से नहीं रखा है—

रासें पकड़ कर चलने के लिये तैयार होना.

बाहर के धुर के घोड़े के पुट्ठे के पास खड़े होकर दहने हाथ से अगल के घोड़ों की रासें पकड़ कर कि घोड़ों के मूंह पर ज़ोर न पड़े बांएं हाथ में इस तरह रखदो कि ऊपर की उंगली इनके बीच में रहे—फिर धुर के घोड़ों की रासें इस तरह पकड़ो कि बीच की उंगली उनके बीच में रहे—मगर रासें इतनी न खिचें कि उनके मूंह पर ज़ोर पड़े॥

कोच बकस पर चढ़ने से पेशतर रासें दहने हाथ में ले लेना.

फिर दहने हाथ से बाहर की रासों को बारह से अठारह इंच तक ढीली करदो—कि अगल की रासों के जोड़ और धुर की कैंची की रासों के बकसुवे बांएं हाथ से बराबर फ़ासले पर हो जावें—इस तरकीब से रासें करीब २

बराबर रहेंगी जब कि तुम गाड़ी पर बैठोगे यह अमल करके चारों रासें दहने हाथ में लेलो मगर बांएं हाथ की उंगलियों से एक उंगली नीचे से पकड़ो इस तरह ऊपर की उंगली चढ़ते वक्त पादान पकड़ने को ख़ाली रहेगी॥

कोच बक्स पर कैसे चढ़ना.

कोच बक्स पर चढ़ने के लिये बांएं हाथ से लालटैन का लोहा पकड़ कर मदद लो, बांयां पैर पहये की नाथ पर और दहना पैर बारह सिंगे की खूंटी पर रखो फिर बांयां पैर उठा कर रकाब पर और दहना पैर कोच बक्स के पादान पर धर दो अब फ़ौरन बैठ जावो वरना घोड़े चल देने से तुम गिर पड़ोगे—बांएं हाथ की उंगलियां दहने हाथ की उंगलियों के सामने इस तरह लेजाकर कि बाएं हाथ की ऊपर की उंगली दहने हाथ की बीच की उंगली के सामने रहे, दहने हाथ में से फ़ौरन रासें बांएं हाथ

चढ़ते ही फ़ौरन बैठ जावो.

रास ज़रूरी चीज़ है.

में लेलो फिर जो रास ठीक न होवे उसको ठीक करलो—कम्मल या पैर ढाकने का कपड़ा हमेशा अपने घुटनों पर रखो—बग़ैर इसके बदनुमा ही नहीं मालूम होगा बलकि इसके होने से तुम्हारे कपड़े रासें लगकर ख़राब होने से बचेंगे, ख़ुस्सुसन बारिश में—बांएं हाथ में ख़ातिर ख़ुवाह रासें ठीक हो जाने के बाद यानी ख़ुसूसन ज़ियादा लंबी न हों—चाबुक ख़ाने में से निकाल कर अपने हाथ में लेलो—और सवारियों से कहो कि मज़बूत बैठो या पूछो कि सब तैयार हैं—क्योंकि बहुत से आदमी इस बात से ग़ाफ़िल रहने से कि गाड़ी चलने को है गिर चुके हैं॥

सवारियों को चलने से पहले होशयार करना.

घोड़ों को चलाना.

चलने के लिये घोड़ों के मूंह को संभालो, अगर ज़रूरत होवे तो चलने का लफ़्ज़ कहो और फ़ौरन हाथ ढीला करदो जब तक कि गाड़ी चल निकली

होवे—और किसी बात से इतने घोड़े नहीं अड़ते हैं जितने शुरू चलते वक़्त उनका सर उठाने से अड़ते हैं—धुर के घोड़ों से गाड़ी चलानी चाहिये-और चाबक के इशारे की ज़रूरत होवे तो चाबक छुवाने से वे चल पड़ेंगे—मगर किसी हालत में धुर के अड़ने वाले घोड़े को चाबक मत लगावो—मगर दूसरे घोड़े से गाड़ी चलावो॥

धुर के घोड़ों से गाड़ी चलाना चाहिये.

शुरू में घोड़े अच्छी तरह चलाने के क़ाबिल होना शायद बहुत ही मुश्किल काम है जो मुबतदी को सीखना चाहिये, यह फ़न तजुरबे से हासिल हो सकता है—और कोई खास क़ायदे उस की हिदायत के लिये नहीं हैं क्योंकि दो चौकड़ियां यकसां मिज़ाज की नहीं होती.

चलने के पेशतर घोड़ों पर से कम्मल आहिसता से हटवा लो (झपटना

नहीं चाहिये) श्रोर तुम्हारे तैयार होते ही साईसों को घोड़ों के सामने से एक तरफ़ खड़ा करदो, फिर घोड़ों को हत्तुल इमकान आहिसता से चलावो—श्रोर बग़ैर घोड़ों के सर उठाने के तुम्हारी कुल कारीगरी यकलख़ गाड़ी उठाने में सरफ़ करो—क्योंकि घोड़ों को इतनी तकलीफ़ नहीं होती या इतने नहीं अड़ने लगते हैं—जैसा मूंह पर झटका देने या रोक कर चलाने से होती है-घोड़ों को अच्छी तरह चल देने के बाद किसी क़दर हाथ को पीछे हटालो श्रोर मुंह पर संभालो, अगर घोड़े सीधे चलते हुये नहीं मालूम होवें तो रासों को जितना जल्द मुमकिन होवे फिर दुरुस्त करलो-यह काम सफ़ाई से अंजाम देना मुबतदी के लिये बहुत मुश्किल है—धुर के अंदर के घोड़े की रास किसी क़दर तंग रख कर शुरू में चलाना

बेहतर है—बमुक़ाबले इसके कि बाहर की रास तंग रखी जावे क्योंकि यह रास जल्दी तंग करना बहुत मुश्किल है॥

चलते वक्त हाथ में चाबक तैयार रहना चाहिये.

दहने हाथ में चाबक तैयार रहने बग़ैर गाड़ी हांकना हरगिज़ महफ़ूज़ नहीं है—चाबक कोचवान को उतना ही काम देता है—जितना सवार को रान काम देती है—यानी इस से घोड़े तुले हुए रहते हैं॥

घोड़ों को सीधा चल देने के बाद दहना हाथ रासों पर से हटालो—मगर किसी ज़रूरत पर काम देने के लिये पास ही रहे॥

बांएं हाथ से ढील मसक ज़रूरी है.

हांकने की ज़ियादातर सफ़ाई इसी पर मुनहसिर है—जिसको बांएं हाथ से ढील मसका कहते हैं—यानी इसको सामने बढ़ा सकते हैं या किसी क़दर नीचे झुका सकते हैं—या जिस्म के नज़दीक पीछे खेंच सकते हैं—मस-

सन सड़क पर दहनी तर्फ़ खेंचने के लिये दहना हाथ बाहर की तर्फ़ खेंचना चाहिये—मगर उसी वक़ बांयां हाथ भी किसी क़दर सामने को सरकता है—इसलिये कि अंदर की रासें ढीली हो जावें—इस तरह दोनों हाथ अपने अपने हिस्से का काम अंजाम देते हैं—और दहने हाथ को बहुत ज़ियादा खेंचने की ज़रूरत नहीं होती—बहुत सा काम बांएं हाथ की पुश्त को ऊपर नीचे करने से निकल सकता है—इस का ख़ास असर ये होता है कि अंदर की अगल की रास छोटी बड़ी हो जाती है—जिस से अगल के घोड़ों को सड़क पर ही थोड़ा बहुत किसी तर्फ़ खेंच सकते हैं—जब तुमको रोकने की ज़रूरत है तो बांयां हाथ दहनी तर्फ़ ऊंचा लेजा कर चारों रासें घटा दो—या चारों रासें हस्ब हिदायत साबक़ा बांएं

रोकना.

हाथ में होकर पीछे से खेंच लो—फिर दहनी ऊपर की उंगली अगल की अंदर की रास के ऊपर—और बीच की उंगली अंदर की धुर की रास पर—और दहने हाथ की नीचे की उंगलियां बाहर की रासों पर (तसवीर नं: ३५) रखकर दोनों हाथ पीछे को खेंचो—और ज़रूरत होवे तो किसी क़दर पीछे को झुक जावो चारों घोड़ों को बराबर रखकर रोकना आसान काम नहीं है—क्योंकि अकसर एक धुर का घोड़ा दूसरे घोड़े से ज़ियादा पीछे हट जाता है—उसको दुरुस्त रखने के लिये बीच की उंगली से ज़ियादा खेंचकर धुर के घोड़ों को बाएं तर्फ़ रखो या हाथ के नीचे के हिस्से से दबाकर उनको दहनी तर्फ़ रखो॥

अगर घोड़े तुम्हारे क़ाबू से बाहर निकलते हुए मालूम होवें और तुम

नहीं रोक सको तो दहनी टांग चारों रासों पर रख देने से तुमको बहुत मदद मिलेगी—इसलिये कि तुम टांग के फ़ालतू ज़ोर और दबाव से उनको रोक सकते हो॥

अखीर मंज़ल पर पेशेवर कोच-वान रोक कर हमेशा दोनों हाथों से रासें धुर के घोड़ों के बाहर की तर्फ़ फेंक देते हैं॥

घुमाते वक्त गाड़ी आहिस्ता करलो.

कुशादा जगह में गाड़ी को मुना-सिब क़दम से घुमा सकते हैं—मगर इसके लिये कुशादा चक्कर लेना चाहिये॥

गाड़ी अड़ कर उलट जावेगी.

अगर कम से कम बीस गज़ की गुंजाइश नहीं है—तो गाड़ी को धीरे से घुमावो वरने गाड़ी अड़ जावेगी और सिर्फ़ बम टूटने से ही उलटने से बच सकती है॥

हर हालत में अहतयात रखो कि घूमने का काम धुर के घोड़ों से लो और

अगल के घोड़ों पर ज़ोर मत पड़ने दो—इसके लिये खिलाफ़ गूंज बनाना और अगल की रासों में बड़ी गूंज बनाना बेहतर होगा॥

अगर बहुत तंग सड़क पर घूमने की ज़रूरत होवे तो अगल की जोड़ी को खोल लो—मगर मरक़ूमे ज़ैल तरकीब से भी हो सकता है :—

तंग सड़क पर घुमाना.

जितना मुमकिन होवे सड़क के बाएं तर्फ़ खेंचलो—और आहिसता क़दम चलावो—कुछ बढ़ाकर सड़क पर दहनी तर्फ़ घोड़ों को तिरछा करलो और अंदर की रासों को खूब खेंचकर ठहर जावो—इस ग़रज़ से कि बम बाएं तर्फ़ सीधा आ जावे फिर कुल रासें इस तरह घटावो कि दहने हाथ की छोटी उंगली बाहर की रासों पर और बीच की उंगली अंदर की धुर वाली पर रहे—घोड़ों को पीछे खेंचो—और गाड़ी को जितनी

दूर पीछे हटाने का मौक़ा हो हटावो—फिर ठहर जावो—इस तरह गाड़ी सड़क के "ज़ावया क़ायमा"—(गुनयां) में रहे—अब अगल के घोड़ों को ठीक दहनी तर्फ़ गोल घुमाना चाहिये इस अमल के करने के लिये हमेशा बाहर की अगल की रास को गूंज बनाने से पहले किसी क़दर हिलालेनी चाहिये—वरना अगल के घोड़े पीछे की तर्फ़ बम पर आ जावेंगे—धुर के घोड़ों को ठीक इन ही के पीछे घुमाना चाहिये-होशयार रहो कि इनको जल्दी मत घूमने दो—वरना गाड़ी की ठोकर अड़ जावेगी—बांएं तर्फ़ मोड़ने के लिये भी ऐसी ही तरकीब करना चाहिये—तेज़ मिज़ाज घोड़े के लिये अगल की जोड़ी खोल देना ही बे खतर है क्योंकि उनके बेलन लग जाने या बम पर गिरने का अंदेशा है॥

फ़सल नवीं

चोकड़ी की बाबत, मुख्तलिफ़ सूदमंद हिदायतें— फ़ालतू क्या क्या चीज़ साथ रखना वग़ैरा २.

मुवतदी को यह ख़याल नहीं करना चाहिये कि चोकड़ी या एक ही घोड़ा सिर्फ़ बाएं हाथ से ही हांके जा सकते हैं—कामिल कोचवान भी ख़ुसूसन भीड़ में दहने हाथ को मुतवातिर काम में लाने के लिये मजबूर है—मगर साथ ही इसके यह भी याद रखना चाहिये—कि दहना हाथ हर वक़्त रासों पर न रहे—जैसा कि तसवीर नं: ३ में वतलाया गया है—जिस में दहने हाथ से बाहर की रास को फ़क़त घोड़ों

को सीधा रखने के मतलब से पकड़ी हुई है॥

सिर्फ़ बांएं हाथ से रासें पकड़ने से चोकड़ी हर वक़्त सीधी चलनी चाहिये—दहने हाथ के मुतवातिर दबाव पड़ने से कोई न कोई रास फिसल हो जाती है ख़ास कर अन्दर की धुर की रास—जब कि घोड़े मुंह ज़ोर हो रहे हैं यह मुहावरा क़ाबिल ऐतराज़ है—अलबत्ता बांएं हाथ के थक जाने की हालत में दहने हाथ की मदद लेना चाहिये—और उस वक़्त तीन या चारों रासों को पकड़े (तसवीर नं: १८ और ३५.)

रासों पर हर वक़्त एकसां दबाव रखो.

ख़याल रखो कि हर वक़्त रासों पर एकसां दबाव रहे और घोड़े के ज़ोर न लेने की हालत में बज़रिये चाबक घोड़े को उस दबाव पर क़ायम रखो—मुबतदियों में ज़ियादातर यह नुक्स पाया जाता है—कि वह घोड़ों का सिर उठाये

रासें हाथ में से फिसलने की आम गलती है.

हुए नहीं रखते—हमेशा घोड़ों का सिर उठाये हुये रखो—और इस अमर को मुक़द्दम समझो कि उंगलियों में से रासें न फिसलें—ज़ियादातर घोड़ों का बे क़ाबू होजाना और अरसे तक मूंह ज़ोरी करने का यही सबब है—वरना घोड़ों को एक दो मील चलने के बाद क़ाबिले इतमीनान चलना चाहिये॥

...... र राल या मोम

घोड़ों के खैंचने की हालत में नये दस्तानों में से रासें न फिसलने की ग़रज़ से—उंगलियों और हथेली पर थोड़ा पिसा हुवा राल या मोम लगा देते हैं॥

शुरू में आहिसता चलो.

अगर तुमको फुरसत हो—तो शुरू में हमेशा घोड़ों को आहिसता चलावो (यानी छै सात मील फ़ी घंटे की रफ़्तार से) यह तरकीब करने से घोड़े बहुत मुलायम चलेंगे—और तुम्हारा बाज़ू और उंगलियां बहुत कम थकेंगी

ब मुक़ाबले इसके कि शुरू में तुमने तेज़ चलाये हों॥

यह ज़रूरी अमर है कि दहने हाथ से किसी तर्फ़ को रासें खेंचते वक़्त कलाई अच्छी तरह मुड़ी हुई होवे कि हाथ की पुश्त नीचे की तर्फ़ झुकी हुई रहे॥

इस तरह हाथ रखने से तुमको मालूम होगा कि चाबक की नोक सामने की तर्फ़ मुनासिब ऊँची रहेगी-अगर हाथ की पुश्त ऊपर की तर्फ़ रहेगी—तो ज़रूर चाबक यातो कोच बक्स पर बैठने वाली सवारी को बाइसे तकलीफ़ होगा (तसवीर नं: २६) या धुर के घोड़े की दुम के नज़दीक लगेगा—और ग़ालिब गुमान वह उसको दुम से हटावेगा—इत्तफ़ाक़न अगर यह दुम में इलझ गया तो कोच बक्स के पादान को नुक़सान पहुंचने का सबब होगा॥

अगर घोड़े बांएं तर्फ़ पड़ें तो सिर्फ़

चौकड़ी एक तर्फ़ पड़े, इलाज क्या.

दहने हाथ से बाहर की रासें खेंचना फ़ज़ूल होगा—लेकिन फ़ौरन बांयें हाथ में इन रासों को घटा दो॥

यह अमल उन रासों को एक एक घटाने या हस्व मामूल बाहर की दोनों रासें पकड़ लेने से हो सकता है—इस तरह कि ऊपर की उंगली अन्दर की अगल की रास के ऊपर और बीच की उंगली अन्दर की धुर की रास के ऊपर—फिर दोनों हाथों की उंगलियों के बीच में होकर अन्दर की रासों को फिसलने दो—उस वक्त बाहर की रासों को मज़बूत पकड़े रहो मगर इस तरह एक ही मरतबे में बहुत कम मतलब हासिल होता है॥

दूसरी तरकीब ये है कि रासों को दहने हाथ से बहुत मज़बूत पकड़ लो—इस तरह कि ऊपर की दोनों उंगलियां अन्दर की रासों के ऊपर, और नीचे

की उंगलियां बाहर की रासों पर रहें—फिर बांएं हाथ की उंगलियां खोल दो—उस वक्त बाहर की रासें दहने हाथ के नीचे के हिस्से को बांएं हाथ की तर्फ़ मोड़ने से इन उंगलियों में से सरका कर तंग कर सकते हो—(तस्वीर नं: १८ और ३५.)

बांएं हाथ से रासें अलहदा मत करो.

अगरचे दहने हाथ से रासों को मज़बूत पकड़े हुए हो—ताहम बांएं हाथ में से रासें किसी हालत में भी अलहदा मत करो क्योंकि फिर बांएं हाथ से असली जगह रासें पकड़ना मुश्किल है—अलबत्ता तुम्हारी उंगलियां सरदी या ज़ियादा सख़्त खैंचने से अकड़ गई होवें तो उस वक़्त रासों से हाथ अलहदा करके उंगलियों को रान पर ठोक लो—लेकिन अगर घोड़े बे तरतीब हो जाते हैं—तो अगल की रासें दहने हाथ में इस तरह लेलो कि छोटी उंगली

अगल की रासें दहने हाथ में ले लेना.

बाहर की अगल की रास के ऊपर—और ऊपर की या दूसरी उंगली अन्दर की अगल की रास के ऊपर (तस्वीर नं: ३२) तब धुर के घोड़ों को दुरुस्त करो—और जो रास तंग है उसको बांएं हाथ में से सरकने दो—अगल की रासों को फिर बांएं हाथ में लेलो—अगर रासें बहुत लम्बी होवें तो सब को पीछे से घटाकर तंग करलो—इस तरकीब को कभी कभी काम में लाना चाहिये—इसलिये कि अगल की रासों के साथ बार बार मदाखलत करना बेजा है॥

अगल की रास गाहे बांएं हाथ से जुदा करना चाहिये.

घोड़ों की हालत पर नज़र रखो.

हमेशा घोड़ों की हालत को नज़र में रखो—और ग़ौर करो कि घोड़े अपनी अपनी सही जगह पर क़ायम रहकर अपने अपने हिस्से का काम अंजाम दे रहे हैं॥

अगर किसी घोड़े ने अपनी जगह छोड़दी तो सबब मालूम करो—और

रासें दुरुस्त करो—या चाबक काम में लावो जैसी ज़रूरत होवे॥

बांयां हाथ और कोहनी हमेशा सही जगह पर रखो और छोटी और तीसरी उंगली से रासों को मज़बूत

छोटी और तीसरी उंगली से रासें मज़बूत पकड़ो.

तस्वीर नं: ३२, बांयें हाथ में से अगल की रासें दहने हाथ में लेना.
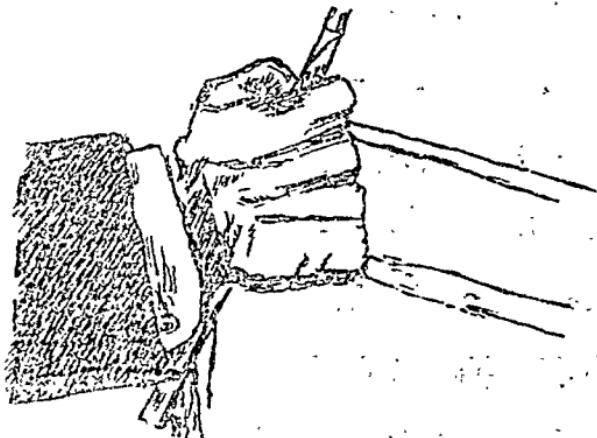
पकड़े रहो—और हरगिज़ मत सरकने दो—यह क़ायदा अशद ज़रूरी है—अगरचे शुरू में बहुत तकान मालूम होगा खुवाह घोड़े खेंचते भी न हों॥

चाबक पकड़ते या काम में लेते वक़्त

वांएं हाथ को ढीला मत करो.

मुबतदी बांएं हाथ को ढीला कर देते हैं—जिस्से घोड़े क़ाबू से निकलकर खेंचने लगते हैं॥

गूंज बनाते वक्त बांएं हाथ को मत सरकावो.

बांएं हाथ को जिस्म के इधर उधर मत जाने दो या रासें पकड़ने को सामने मत ले जावो—सिवाय कभी कभी बांएं तर्फ़ मोड़ने में—उस वक्त इस तरह गूंज बनाना मुफ़ीद होगा:—

बाहर की रासें दहने हाथ की छोटी और तीसरी उंगली से पकड़ो फिर अन्दर की अगल की रास तीन चार इंच बांएं हाथ से ऊपर की उंगली से पकड़ो—इसको मज़बूत पकड़ कर जितना मुमकिन होवे जिस्म की तर्फ़ लावो—और उस वक्त फ़ौरन बांयां हाथ पीछे से आगे को बढ़ाकर दहने हाथ की ऊपर की उंगली के सामने बांएं अंगूठे से पकड़ लो—फिर बांएं हाथ को इसकी असली जगह पर ले आवो—काफ़ी

गूंज बन जावेगी—और धुर के घोड़े दहने हाथ के नीचे के हिस्से से रासों को दबाने से कोने पर चढ़ने से रुकेंगे॥

अगल के घोड़े को दुम के नीचे रास.

अगर अगल के घोड़े ने रास दुम के नीचे लेली तो उसको हरगिज़ मत खेंचो—बलकि इसके ख़िलाफ़ इसको ढीली देदो—और धुर के घोड़ों को उस तर्फ़ खेंचो—जिस तर्फ़ कि घोड़े की दुम के नीचे रास फंस गई है—फिर धुर के घोड़े की गरदन पर दूसरी तर्फ़ चाबक लगावो—घोड़े की गरदन की एक तर्फ़ की हरकत से रास निकल आवेगी॥

घोड़े के चाबक मार कर दुम के नीचे से रास निकालना.

दूसरी तरकीब दुम के नीचे से रास निकालने की यह है—कि रास को बिलकुल ढीला करदो—और चाबक का तेज़ हाथ घोड़े की काठी के पीछे लगावो-इस से घोड़ा दुम को हिलावेगा उस वक्त-तुम रास को फ़ौरन खेंच

सकते हो॥

अगर दोनों तरकीबों में कामयाबी न होवे—तो गाड़ी को यकलख़्त रोक लो—और एक आदमी नीचे उतर कर रास धीरे से निकाल लेवे—घोड़े की दुम उठाकर—न कि दुम के नीचे से खेंचकर॥

अगल के घोड़े को दुम के नीचे रास लेने से रोकना.

जिस घोड़े को दुम के नीचे रास लेकर लात मारने की आदत होवे तो उसकी उमदा तरकीब ये है—कि अगल की रास लात मारनेवाले घोड़े की दूसरी तर्फ़ के धुर के घोड़े के गल तसमे की कड़ी में या गोल बाग की अन्दर की गूंज में होके निकालो॥

अगल की रासें धुर के घोड़ों के सर की रास कड़ी या गूंज में होकर भी निकाल सकते हैं—लेकिन अगर ऐसा किया जावे तो धुर के घोड़ों के गोल बाग हमेशा लगाना चाहिये—इसलिये

कि धुर के घोड़ों के ऊपर नीचे सर हिलाने से अगल के घोड़ों के मूंह पर ख़्वाम ख़्वा झटके लगते रहेंगे॥

धुर की रास कड़ियों से व अगल की रास निकालने पर ऐतराज़.

इन रास कड़ियों का इस्तेमाल क़रीब क़रीब छोड़ दिया गया है—मसलन अगर अगल के घोड़े खेंचते हैं—तो धुर के घोड़ों के सिर पर बहुत ज़ोर पड़ता है—या धुर के घोड़े के बहुत ही ऊपर नीचे सर मारने से अगल के घोड़ों के मूंह पर मुतवातिर झटके लगते हैं—इस लिये जब अगल की रासें धुर के घोड़ों के गल तसमे की कड़ी में लगाई जावें तो रासों का खिंचाव अगल के घोड़ों के मूंह से धुर के घोड़ों की रास कड़ियों तक क़रीब क़रीब सीधा रहता है॥

बग़ली बाग.

बग़ली बाग भी अगल के घोड़ों के लिये बहुत कार आमद होती है—ज़ियादातर मूंह ज़ोर घोड़ों के लिये—

जो बाहर की तर्फ़ लगाई जावें तो उसी घोड़े के जोत के और अन्दर की तर्फ़ दूसरे के जोत के लगाना चाहिये॥

उमदा बग़ली बाग के पीतल की कड़ी एक सिरे पर बजाय बकसवे के सिली हुई रहती है—एक छोटा तसमा इस कड़ी में से निकाल कर दहाने के दोनों तर्फ़ बकसवों से लगा दिया जाता है—और दूसरा सिरा बग़ली बाग का अन्दर की तर्फ़ दूसरे घोड़े के जोत के लगा दिया जाता है॥

तोपख़ाने के बाहर के घोड़े की बाग इस में अच्छी तरह काम देगी—यह एक लम्बी बाग होती है—जो दहाने के बाहर की तर्फ़ लगाई जाती है—और एक छोटी कैंची की बाग अन्दर की तर्फ़—अगर कोई घोड़ा बहुत ही खेंचता होवे—और दूसरे घोड़े के सामने आने की कोशिश करता होवे—तो इन दोनों

में से एक बग़ली बाग लगा देने से कुल ज़ोर दहाने पर पड़ेगा—और घोड़ा अपनी जगह पर क़ायम रहेगा॥

कैंची की रास ठीक करना.

अगल के घोड़ों की कैंची की रास बहुत लम्बी नहीं होना चाहिये वरना घोड़ों की दुम उनमें ऐसी इलझ जावेगी कि जिसका सुलझाना मुश्किल मालूम होगा—इनके बकसुवे दुम की डंडी के सिरे से छः से आठ इंच के फ़ासले तक होना चाहिये—जो रासें घटाने बढ़ाने के लिये काफ़ी होंगे॥

कैंची की रास के बकसुवे रास कड़ी में नहीं इलझने चाहिये.

रासों पर बकसुवे से एक फुट नीचे की तर्फ़ एक छल्ला रखो—जिसमें से कैंची की रास निकलना चाहिये—इस के सबब से बकसुवा रास कड़ी में नहीं घुस सकेगा इस्से बचने के लिये एक आसान तरकीब ईजाद की है, एक लोहे की पाती पांच इंच लंबी चमड़े से मंढ़ी हुई कैंची की रासों के बीच में लगाते

हैं-जिसके एक सिरे पर एक छेद होता है—जो बकसुवों की कील में लगा दिया जाता है—और दूसरी तर्फ़ एक छल्ला होता है—जिसमें होकर कैंची की रास निकलती है—जिस्से यह रास कम ज़ियादा कर सकते हैं-बकसुवों के नीचे दो चमड़े के छल्ले भी होते हैं-इस तरकीब से रास कड़ी में बकसुवा नहीं घुस सकेगा—कैंची की रास ठीक करने के क़ायदे मुवतदी को फ़सल सोयम में पढ़ना चाहिये ॥

धुर के घोड़ों को कोने पर चढ़ जाने से रोकना.

धुर के घोड़ों को कोने पर यकलख़्त मुड़ जाने से (जिसकी वह अकसर कोशिश करते हैं) रोकने के लिये अमूमन दोनों बाहर की या अन्दर की रासें मोड़ के मुक़ाबले की तर्फ़ की गूंज बनाने के बाद दहने हाथ में पकड़ लेना चाहिये॥

जब धुर की रास की ख़िलाफ़ गूंज

बनाना होवे तो बाहर की रास तो बाहर की तर्फ़ से और अन्दर की रास बाहर की दोनों रासों के ऊपर होके पकड़ो॥

घोड़े को चाबक लगाते वक्त उसको मज़बूत थामे रहो—इसलिये कि सज़ा देने का कुल असर रास ढीली रहने या फिसल जाने से जाता रहेगा॥

चाबक मारते वक्त घोड़े को अच्छी तरह रोके रहो.

धुर की रासों के बकसुवे इतने फ़ासले पर रहें—जहां तक हाथ पहुंच सके—लेकिन इतने नज़दीक भी नहीं होना चाहिये कि ऊंची पहाड़ की उतराई में, या रोकने में बकसुवे हाथ में आजावें—जब घोड़े ठीक चल रहे हैं-तो बकसुवे हाथ से एक फुट फ़ासले पर रहना दुरुस्त मालूम होगा॥

धुर की रासों के बकसुवे हाथों से नज़दीक रहें.

अमूमन दुमची की ज़रूरत नहीं मालूम होती है—और खसूसन अगल के घोड़ों के—लेकिन अगर गोल बाग

गोल बाग वग़ैर दुमची के ज़रूर नहीं है.

लगाई जावे तो हुकमन दुमची लगाना होगा—इसलिये कि चाल घोड़े के मदू पर न सरकने पावे और छिलजाने से भी बचे॥

होशयार रहो कि दुमची का फ़ालतू तसमा लटकता हुवा नहीं रहे—वरना अगल की रास इसमें अटक कर बाइसे तकलीफ़ होगी—इस सबब से दुमची ज़ेरबंद जैसी बनाना बेहतर होगा—कि उसमें फ़ालतू सिरा नहीं रहता है—और सिर्फ़ एक छल्ले की ज़रूरत होती है॥

रासें एकसी मोटी होना चाहिये.

धुर और अगल की रासें एकसी चोड़ी और मोटी होना चाहिये—और किसी हालत में छोटी नहीं होना चाहिये—यह निहायत खतरनाक है—क्योंकि आसानी से हाथ से निकल जाने का अंदेशा है—बमुक़ाबले छोटी रासों के ज़ियादा लंबी रखना ही बेहतर

होगा—लेकिन फ़ालतू रास दो तीन फुट लंबी काफ़ी होगी॥

अगल के घोड़े फटें.

जब अगल के घोड़े फट के चलें—या एक घोड़ा बाहर की तर्फ़ पड़ता होवे-तो दोनों घोड़ों के भीतर के जोतों को आपस में आंटी लगाकर अपने २ हलके के हत्थों में कस दो—इस से घोड़े मिले हुये रहेंगे-यह तरकीब ना मुनासिब है—अगर्चे बाज़ इसको अमल में लाते हैं-कि एक जंजीर से घोड़ों के हत्थे बांध देते है—इसलिये कि अगर लात मारने से घोड़े का पैर किसी बेलन में इलझ गया तो इसका सुलझाना मुश्किल होगा॥

फ़ालतू सामान रखनर.

हमेशा बग्गी (कोच) में फ़ालतू चीज़ें हस्ब ज़ैल रखना चाहिये:—

दो बेलन, एक छोटा एक बड़ा—दो जोत, अगल और धुर का एक एक—एक टूटवा चाबक तख्ते में कसा हुवा—

कि टूटे नहीं—एक चमड़े की थैली जिसमें एक गुलसम जिसके कई सिरे होवें॥

नेवर-यह मोटे चमड़े के बने हुये अच्छे होते हैं—और इतने लंबे होना चाहिये कि घोड़े के गट्टे को बचा सकें—हंसले के नीचे लगाने के कई चमड़ों की ज़रूरत होती है—एक बड़ा टुकड़ा भेड़ के चमड़े का—सूई और मोम लगा हुवा डोरा—कई तसमे और बकसुवे—कई गाल तसमे॥

फसकला.

फसकला—चमड़े या नमदे के बने बनाये अकसर मिल जाते हैं—नमदे के फसकला में यह फ़ायदा है—कि यह मुलायम होता है—और घोड़े के छिल जाने की हालत में इसका टुकड़ा आसानी से काट सकते हैं—लेकिन यह ज़रूर है कि नमदे का फसकला लगाने में हंसला कुशादा होना चाहिये॥

अगर चोकड़ी बहुत ही मूंह ज़ोरी करने लगे—तो थोड़े थोड़े अरसे बाद ठहराकर दहाने बदलो—दहानों को घोड़ों के मूंह में नीचा करदेने से अजब असर होता है—तुम ज़ेर कड़ी भी तंग कर सकते हो—और दहाने के और नीचे के खाने में रास लगा सकते हो—घोड़ों को अपनी ज़रूरत से ज़ियादा मत खेंचो—अगर तुम देखो कि घोड़े तुम्हारे क़ाबू से बाहर होने लगे तो एक दम ठहरा लो—और मुमकिन होवे तो दूसरे कोचवान को देदो—अगर चोकड़ी में से तीन घोड़े फ़ी घंटा दस मील चलते हों—और एक फ़ी घंटा आठ मील—तो तीनों घोड़ों को रोककर उस सुस्त घोड़े को बराबर चलावो क्योंकि सिवाय पोया करने के उसको दूसरों की बराबर नहीं चला सकते हो—लेकिन जबकि तुम डाकगाड़ी

जब चोकड़ी मूंह ज़ोरी करे तो दहाने बदलो.

चोकड़ी धीमे घोड़े को बराबर रहे.

हांकते हो तो धीमे घोड़े को बमुक़ाबले वक्त जाया करने के पोया हांकना ही बेहतर होगा ॥

पोइंयाकरना.

मुबतदी को पोया चलाने का इरादा हरगिज़ नहीं करना चाहिये—क्योंकि जबतक वह घोड़ों को उमदा तौर से क़ाबू में रखना न सीख लेवे—दर हक़ीक़त यह खतरनाक है—न सिर्फ़ तेज़ क़दमी के सबब से—लेकिन गाड़ी के मुतवातिर हिलने से बहुत तकलीफ़ होती है—और इत्तफ़ाक़न लोट भी जाती है—जब तुम जानो कि गाड़ी हिलती हुई चलती है—तो अगल की रासें थोड़ी और ढीली करदो कि उन के जोतों का यकसां ज़ोर बम पर पड़े—जिस से गाड़ी का झोल बंद हो जावेगा—फिर घोड़ों का सर उठाकर रफ़्ता २ आहिसता करलो ॥

गाड़ी को हिलने से रोकना.

घोड़े की तकलीफ़ रफ़ा करने के

घोड़े को अच्छा या बुरा क्या लगता है.

लिये यह जानना चाहिये—कि घोड़े को क्या पसंद और क्या नापसंद है— बहुत से घोड़ों को बिगल की आवाज़ नापसंद होती है-जिस से वे मूंह ज़ोरी करने लगते हैं—बाज़ वक्त यह तकलीफ़ असतबल में मुतवातिर बिगल बजाने से रफ़ा हो जावेगी—बाज़ घोड़े चाबक की आवाज़ से डरते हैं—इसलिये उस को आहिसता काम में लाने की कोशिश करो—बाज़ घोड़े भारी गाड़ियों की खड़खड़ाहट कि जो उनके नज़दीक से गुज़रती है—नापसंद करते हैं—इस हालत में ऐसे घोड़ों को अंदर की तर्फ़ लगाना चाहिये॥

चाल

दर हक़ीक़त रफ़तार का जान लेना बहुत मुशकिल है—लेकिन यह ज़रूरी अमर है-जो दायमी और बिला नागा महावरे से सीख सकते हैं॥

सफ़ाई से हांकने का कुल दारो

चोकड़ी का इधर उधर जाना.

मदार इसी पर है कि घोड़े सड़क पर सीधे चलें—और धुर के घोड़े ठीक अगल के घोड़ों के पीछे चले जावें—हमेशा अपने जानवरों का आराम मद्दे नज़र रखो—और सड़क पर इधर उधर मत जाने दो—बाज़ चोकड़ी में यह मैलान बहुत होता है—जिसको फ़ौरन रोकना चाहिये—यह सिर्फ़ हमेशा निगरानी रखने से हो सकता है॥

गाड़ी इधर उधर घूमना.

गाड़ी के इधर उधर घूमने का बहुत बड़ा सबब यह है कि ठोकर के चक्कर में कूड़ा घुस जाने से कड़ी घूमती है—जिसका इलाज चक्कर में ज़ियादा चिक्नाई लगाने से हो सकता है॥

किसी ऐसी हरकत को पहले से उसी तरह खयाल कर लेना चाहिये—जैसे होशयार सुकनगीर अपनी जहाज़ की हरकत के पतवार को खफ़ीफ़ हरकत देकर पहले से खयाल कर लेता

है—और इस अमल से वह अपने पत-वार को बहुत ज़ोर से फेरने पर मजबूर न होगी—नया आदमी बहुत अरसे तक मुन्तज़िर रहता है—जबतक कि जहाज़ बिलकुल झोला खाने लगती है उस वक़्त वह पतवार से बहुत काम लेने पर मजबूर होजाता है—नतीजा यह होता है कि उसका रासता टेढ़ा तिरछा होजाता है—इसी तरह वक़्त पर थोड़ा दबाव रासों पर देदेने से बग़ैर किसी झटके या खेंचने के घोड़े बिलकुल सीधे और सही तौर पर चले जावेंगे॥

चार रासों को बतौर तीन रासों के इस्तेमाल करना.

इस बात के हासिल करने के लिये चारों रासों को बतौर तीन रासों के इस्तेमाल करने से बहुत आसानी होगी—दोनों बाहर की रासें एक करली जावें—और शामिल रखी जावें (तस्वीर नं: ३३) फिर सिर्फ़ यह ज़रूरत है—कि तीसरी और छोटी उंगली बाहर की

रासों पर और बीच की उंगलियें अंदर की अगल की रास के ऊपर रहे—अगल के घोड़ों का दहनी तर्फ़ जल्द मुड़ जाने के मैलान को रोकने के लिये—या धुर के घोड़ों का बांएं तर्फ़—और
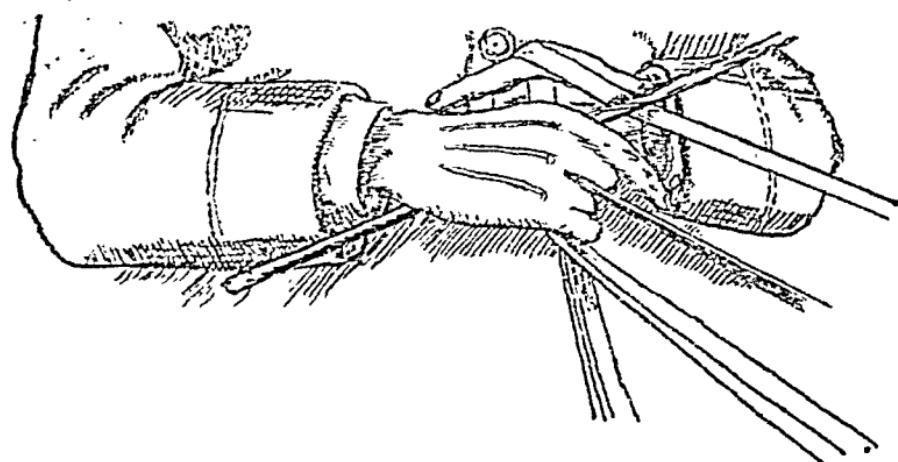
तस्वीर नः ३३, दहना हाथ बांएं हाथ को सिर्फ़ तीन रास पर मदद देता है.

या बीच की उंगली अन्दर की धुर की रास के ऊपर रहे (तस्वीर नं: ३३.) अगल के घोड़ों का बांएं तर्फ़—और धुर के घोड़ों का दहनी तर्फ़ जल्द मुड़ने के मैलान को रोकने के लिये—

लेकिन इस हिदायत पर अमल करना मुबतदी को ज़रूरी है—क्योंकि इस तरीक़े पर अमल करने से—बमुक़ाबले और तरीक़ों के—दहने हाथ को ज़ियादा इस्तेमाल करना होगा॥

आमनीबस के कोचवान को हंकाई देखने से अच्छा सबक़ हासिल होता है.

बहुत उमदा और बिला ख़र्च के हांकना सीखना किसी बड़े शहर के भीड़ के मक़ामों पर होशयार कोचवान के साथ "आमनीबस" पर (एक क़िस्म की बड़ी ऊंची गाड़ी) बैठने से हासिल हो सकता है—उस कोचवान को न सिर्फ़ अपनी चालका ही-बलकि दूसरी गाड़ी का भी जो उस्से मिलती है-और बराबर से गुज़रती है—अंदाज़ा करना होता है—इसलिये उसको निहायत ज़रूरी है कि वह अपनी नज़र सामने जमाये रखे—न कि घोड़ों पर हमेशा नज़र गाड़ी हुई रखे—वरना वह सड़क पर अपने आपस का तआल्लुक़

दूसरी गाड़ियों की चाल समझ लेना.

दूसरी गाड़ी के साथ जानलेने को ना-क़ाबिल होगा—जोकि यकलख़्त मुख़्तलिफ़ चाल से आ रही है॥

यह बातें फ़ौरन और उमदा तौर से ख़याल करनी होती हैं—अगर कोचवान को किसी बड़े शहर की भीड़ की सड़कों से एकसां चाल से गुज़रना मंजूर होवे॥

चाल बतद-रीज बदलना चाहिये.

जबकि उसको मालूम होजावे—कि उसी एकसां चाल से उसका गुज़रना नामुमकिन है—तो उसको तेज़ या आहिस्ता होजाना चाहिये—लेकिन दोनों हालतों में यकलख़्त झटका न लगने की ग़रज़ से बतदरीज चाल बदलना चाहिये॥

झटका देकर रोकना ख़राब हंकाई.

झटका देकर रोकने के लिये अक-सर मजबूर होना सिर्फ़ ख़राब हांकना ही नहीं साबित करता है—बल्कि सवारियों और घोड़ों का बाइसे तक-

लीफ़ होजाता है—कई लंधन के कोच-वानों में यह ऐब होता है—और अपनी सवारियों को बहुत तकलीफ़ देते हैं॥

इसका सबब तलाश करने की ज़रूरत नहीं है—कोचवान, चाल-अरसा-और फ़ासले को नहीं जानते हैं—और ऐन वक़्त तक नहीं मालूम कर सकते हैं—कि गुज़रने की गुंजायश है—या नहीं—पहले वह अपने घोड़ों को चाबक लगाकर बीच में से निकल जाने की कोशिश करते हैं—और आखीर वक़्त पर अपना गुज़रना नामुमकिन जानकर यकलख़्त रोकने के लिये मजबूर होजाते हैं—भारी गाड़ी को एक दम रोकना नामुमकिन होता है—और हादिसे होजाते हैं॥

गाड़ी की चोड़ाई जान लेना.

गाड़ी की चोड़ाई कोचवान अगल के घोड़ों के बेलनों से मालूम कर सकता है—यह हमेशा पइयों की झझरियों

से चोड़े होना चाहिये—इसलिये कि कोचवान को तहक़ीक़ होजाता है—कि जिस जगह से उनके बेलन निकल गये—गाड़ी भी निकल जावेगी बशरते कि वह हमेशा सीधा जा रहा है—अगर वह किसी मोड़ पर है, तो पिछले पइयों के लिये उसको गुंजायश छोड़ना होगा—क्योंकि उनकी लीक बनिसबत अगले पइयों की लीक के किसी क़दर अन्दर की तर्फ़ होगी—जब किसी गाड़ी के आगे निकलना होवे—तो ज़रूरत से ज़ियादा सड़क से गाड़ी को मत टालो—मगर गाड़ी से आगे निकलते ही यकलख़्त उसके सामने मत आवो (किसी क़दर आगे बढ़कर सड़क पर आवो). तावक़्ते कि ऐसे करने के लिये मजबूर हो—यह दस्तूर नहीं है कि दूसरे कोचवान को बिला ज़रूरत गाड़ी आहिसता करने के लिये मजबूर करो.

किसी गाड़ी के पास से गुज़रते हुए उसके लिये जगह छोड़ना चाहिये.

गाड़ी को टालकर निकालना बहुत वक्त पेश्तर शुरू करो—और जितना मुमकिन होवे—गाड़ी को बतदरीज घुमावो—जिस्से घोड़ों को ज़ियादा खेंचने की नौबत न पड़े—बहुत उमदा और महफ़ूज़ तरीक़ा मुबतदी के लिये यह है—कि उसको अपने लिये हमेशा बहुत गुंजायश रखनी चाहिये—और फ़ौरन आहिसता करलेना चाहिये—अगर उसको बीच में से निकलजाने का यक़ीन न होवे—इत्तफ़ाक़ पर हसर नहीं करना चाहिये॥

पहाड़ पर से उतरने के पेश्तर घोड़ों को रोक लेना चाहिये.

हमेशा पहाड़ की चोटी पर पहुंचने से पेश्तर घोड़ों को आहिसता करने के लिये रोक लो—और दूसरी तर्फ़ आहिसता उतारना शुरू करो—चाल हमेशा बढ़ाई जा सकती है—लेकिन अगर रफ़तार तेज़ हुई तो रोकना मुशकिल हो जावेगा॥

पुलों पर से गुज़रते वक्त जहां कि सड़क का उतार और चढ़ाव बहुत ऊंचा होवे—होशयार रहो कि अगल के घोड़े ज़ोर नहीं लेवें—वरना झटका लगने से वम टूट जावेगा॥

ब्रिरेक. ब्रिरेक कोचवान को खुद ही लगाना और खोलना चाहिये-क्योंकि और कोई सही वक्त लगाने और ब्रिरेक खोलने का नहीं जान सकता है—लेकिन मुव-तदी को कि जिसके लिये रासें ही ठीक रखने का काम बहुत है—मदद की ज़रूरत है—उतार पर पहुँचने से पहले इसको लगा देने का क़ायदा है—और अगर दूसरा पहाड़ उसी वक्त चढ़ना है—तो पहाड़ के दामन पर पहुंचने से पहले उसको खोल देना चाहिये—इस लिये कि सामने की चढ़ाई पर चढ़ने को कारआमद होवे॥

कच्ची सड़क पर घोड़ों को बिलकुल

चमकाने वाली चीज़ों के पास से गुज़रते वक्त दहना हाथ रासों पर रहे.

गुज़रते वक्त मुवतदी के लिये दहना हाथ रासों पर डालने की आदत रखना बेहतर होगा—क्योंकि किसी आसपास की चीज़ से घोड़े चमक कर किसी तर्फ़ टल जावें—तो फ़ौरन रोकने के लिये तैयार रहे ॥

मुवतदी को मालूम होगा कि अचानक ज़रूरत के वक्त दहने हाथ को सही रास पकड़ने की आदत होने में कुछ अरसा लगेगा. और हादिसे ऐसे जल्द होजाते हैं कि मेरे खयाल में इन तदवीरों से बहुत महफ़ूज़ रहोगे—ऐसी क़बल-अज़-वाक़िया तदवीरों से महफ़ूज़ रहोगे॥

"तजुरबा उस्ताद है."

तस्वीर नं. ३४, टैन्डम—बग़ैर बेलनों के.
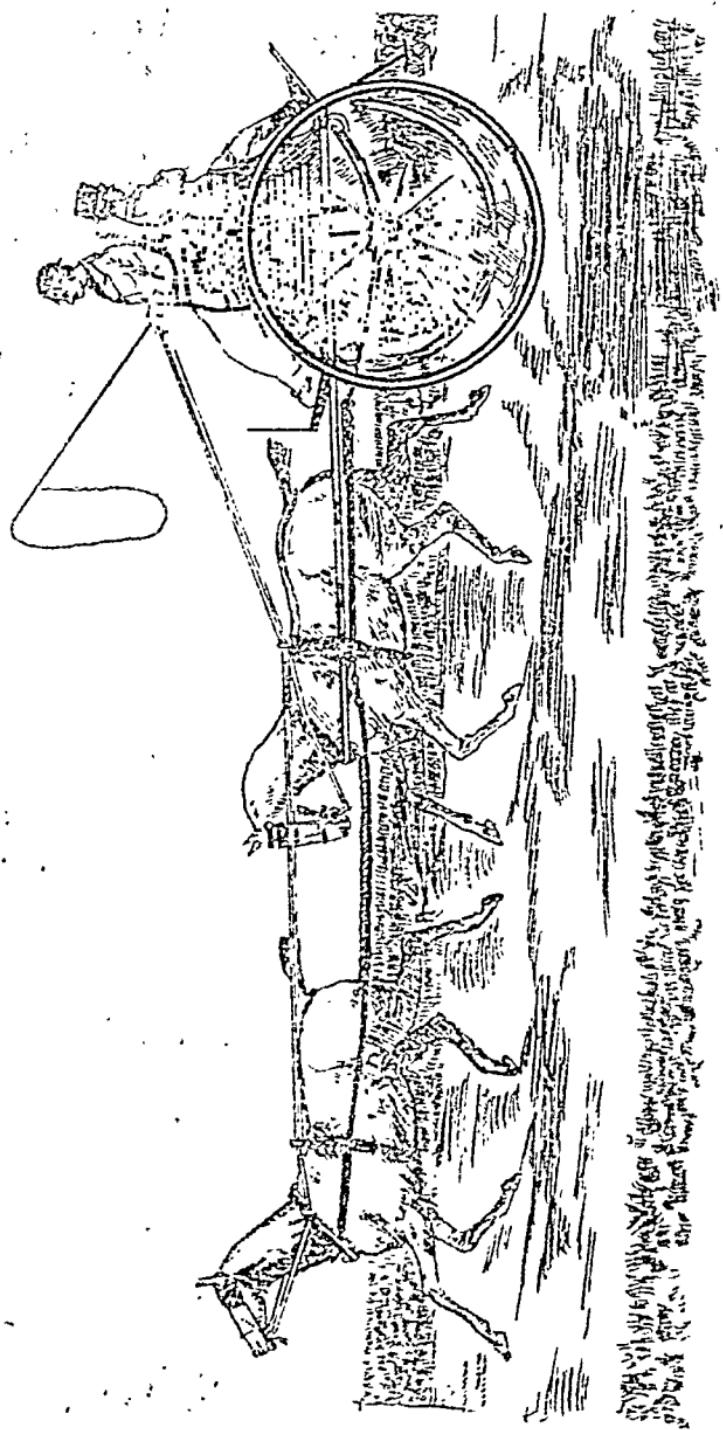
फ़सल दसवीं

टैन्डम हांकने के बयान में.

खास उसूल टैन्डम हांकने के दर असल क़रीब २ वही हैं—जो कोच हांकने के हैं—(यानी चौकड़ी के) लेकिन खास फ़र्क़ दोनों तरीक़ों में यह वाके होता है—कि दोनों घोड़े टैन्डम के रासों पर थोड़ा ही वज़न पड़ने से बहुत जल्द मुड़ जाते हैं—(खसूसन अगल का घोड़ा)—बमुक़ाबले जोड़ी के घोड़े के—ख़ुवाह अगल या धुर के जो कोच में लगे हुये हैं—या सिवा इसके सड़क पर टेढ़े सीधे चलने की रग़बत बहुत ज़ियादा होती है—जिसके लिये मुतवातिर दहने हाथ के इस्तेमाल की ज़रूरत है—क्योंकि दर हक़ीक़त बमुक़ाबले कोच के टैन्डम हांकने में ज़ियादा

टैन्डम हांकने के उसूल.

बहुत सफ़ाई और फुर्ती की ज़रूरत है.

फुरती और ज़ियादा हलके हाथ की ज़रूरत है—दोयम टैन्डम बहुत कम गुंजायश में फिर सकती है—और सब कुछ कोचवान के सामने है—हालांकि कोच को फेरने के लिये ज़ियादा जगह की ज़रूरत होती है—और पिछले पइयों के लिये ज़ियादा गंजायश छोड़नी पड़ती है॥

टैन्डम के फ़ायदे.

बड़ा भारी फ़ायदा टैन्डम में यह है—कि बहुत से लोग जो चोकड़ी का ख़र्च नहीं उठा सकते हैं—टैन्डम आसानी से रख सकते हैं—और थोड़ासा ज़ायद ख़र्च और तकलीफ़ की जो अगल के घोड़े लगाने में होती है-उस खुशी से जो हर शख्स को उमदा और तरबियत याफ़ता चोकड़ी के हांकने में होती है—तलाफ़ी हो सकती है॥

ऐसा ख़याल करना महज़ ग़लती है—कि टैन्डम में बैठना ख़तरनाक

है—इसमें कोई खतरा नहीं है—अगर तजुरबेकार कोचवान हांकता होवे—और घोड़े औसत दरजे के सीखे हुये हों॥

टैन्डम हांकना ख़ौफ़नाक है यह ख़याल ग़लत है.

वाक़ई वह घोड़े जो पहले इक्के में नहीं चले हैं—टैन्डम में महफूज़ नहीं हैं—लेकिन ग़ालबन हरएक घोड़ा जो इक्के में चलेगा और बाज़ ऐसे भी हैं जो नहीं चलते-कामिल तौर से थोड़ी तरबियत से अगल के घोड़े का काम देगा-अगल के घोड़े को फ़क़त बे-ख़तर होने से ही उमदा अगल का घोड़ा नहीं कह सकते—एक घोड़ा बे-ख़तर और नेक मिज़ाज हो सकता है—जो लात नहीं मारेगा—और कोई ख़तर-नाक हरकत नहीं करेगा—ताहम वह बहुत सुस्त हो सकता है जिसको भीड़ में हांकने से माज़ूर होंगे—इसलिये अगरचे वह बिलकुल बे-ख़तर जानवर

क़रीब २ सब घोड़े टैन्डम में चल सकते हैं.

है—लेकिन उमदा अगल का घोड़ा नहीं हो सकता—हस्ब मरकूमें सदर टैन्डम हांकते वक्त दहने हाथ को मुतवातिर इस्तेमाल की ज़रूरत है—ताकि अगल के घोड़े को सड़क पर बे क़ाबू होने से फ़ौरन रोके—लेकिन इत्तफ़ाक़न अगर तुम्हारे रोकने से पहले अगल का घोड़ा किसी घुमाव पर मुड़ चुका होवे—तो उसके रोकने के लिये कुछ कोशिश नहीं करना चाहिये—लेकिन अगर मुमकिन होवे तो उसके पीछे पड़जावो और जब घोड़े सीधे हो जावें तो दुबारा घुमाकर लावो—और यह ही अमल उस वक्त भी करो जब तुम खड़े हुए हो—और अगल का घोड़ा यकलख़्त घूम जावे-उस वक्त धुर के घोड़े को अगर हो सके तो पीछे हटावो—ताकि अगल के घोड़े को बख़ूबी गुंजायश मिले—इस तरीके से

दहने हाथ का मुतवातिर इस्तेमाल करना.

अगल के पीछे पीछे जाना.

अगल का घोड़ा दूलभकर गठड़ी न होगा॥

अगर अगल के घोड़े का पीछे उसी जगह आजाना मुमकिन होवे—तो उसकी कनपटी पर चाबक लगाने से उसका वापिस अपनी जगह पर आ जाना मुमकिन है॥

बांयां हाथ किस तरह रखा जावे और रास पकड़ने का तरीक़ा.

बांयां हाथ रासों पर वैसे ही रखना चाहिये-जैसे चौकड़ी हांकते वक्त रखा जाता है-और रासें भी बिलकुल उसी तरह पकड़ी जावेंगी—चूंकि यह अमूर पहले बखूबी बयान करदिये गये हैं—इसलिये दुबारा यहां बयान करने की ज़रूरत नहीं है॥

दहना हाथ रासों पर किस तरह रखना चाहिये.

दहना हाथ बांयें हाथ के सामने रखना चाहिये—छोटी और तीसरी उंगलियां बाहर की दोनों रासों पर—बीच की उंगली अन्दर की धुर की रास के ऊपर—और ऊपर की उंगली अंदर

की अगल की रास के ऊपर तस्वीर नं: ३५ के मूजब रहै—इस तरह कुल रासें दहने हाथ के क़ाबू में रहेंगी॥

बाहर की दोनों रासें अलावा
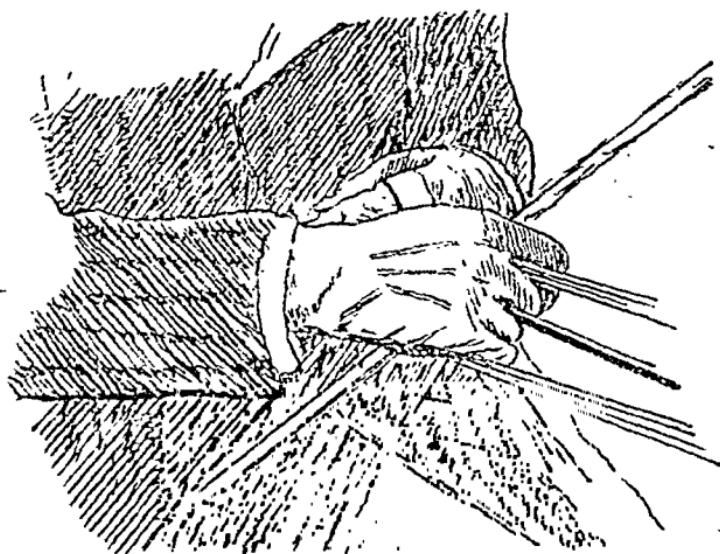
तस्वीर नं. ३५, टैन्डम—रासों पर दहना हाथ कैसे रखना.

दहनी तरफ़ पीछे हटाने को—हर हालत में एक समझी जावेगी—और हमेशा दहने हाथ की छोटी और तीसरी उंगली के नीचे रहेंगी—यह तरीका जो तीन

रासों के उसूल से नामज़द है—चार रासों की बिल एवज़ दर हकीकत तीन रासें ख्याल करलेने से सब बातों का बहुत ही आसान करनेवाला मालूम होगा ॥

तीन रासों का उसूल.

शुरू में मुबतदी को तजुरबा होगा—कि सही तौर से दहने हाथ को रासों के बीच में बहुत जल्द लेजाना बहुत मुश्किल है—क्योंकि कुल रासें बमुकाबले चौकड़ी की रासों के बहुत नज़दीक २ हैं—जिसके सबब से मुबतदी को अपना दहना हाथ रासों के बीच में डालने के लिये बहुत आगे बढ़ाना पड़ेगा—इसलिये अपना हाथ सामने को बाहर लेजावो—जिस जगह कि रासें किसी कदर फैली हुई हैं—फिर एक मर्तबा उनको सही पकड़ के हाथ को अपने जिस्म की तर्फ़ पीछे सरका लो—बांए हाथ से दहना हाथ बहुत

दहने हाथ को रासों के बीच में लेजाना मुश्किल मालूम होगा.

दूर रखके हांकना बहुत ही बदनुमा मालूम होता है-और इसकी बिलकुल ज़रूरत भी नहीं है॥

रात के वक्त हमेशा दहना हाथ रासों पर रखो.

उनके लिये जिनको ज़ियादा तजुरबा नहीं है हर वक्त दहना हाथ रासों पर रखना बेहतर होगा—ख़ुसूसन रात के वक्त ता हाथ हटाना ही नहीं चाहिये ता वकते कि चाबक लगाने के लिये इसकी ज़रूरत हो—तनहा एक रास को बहुत ही कम खेंचो (जैसा कि कोच में अगल के घोड़ों के लिये बयान कर चुके हैं)-सिवाय उस वक्त के कि अगल की रास को तंग मोड़ के लिये गूंज बनानी पड़े—या भीड़ में निकलने के लिये जल्द मोड़ना होवे—अगर तनहा एक ही रास को खेंचोगे—ख़ुसूसन अगल की—तो ज़रूर तुम ज़ियादा खेंच लोगे या झटका देदोगे॥

रास के हरगिज़ झटका मत दो—

और बतदरीज दबाव डालो—रास से झटका देना सिर्फ़ उसी वक्त माफ़ किया जा सक्ता है—जबकि तुम एक सुस्त घोड़े को हांक रहे हो—जोकि मोड़ते वक्त दहाने पर तुला हुवा नहीं रहता हैं॥

राम के झटका मत दो.

यह अमूमन बेहतर होगा—जब कि गाड़ी ठहरी हुई होवे—चंद क़दम बढ़ाकर सड़क पर फिर मोड़ना चाहिये, तेज़ घोड़ों को मोड़ते वक्त झटके से बचाने के हस्ब तफ़सील ज़ैल क़ायदे हैं:—

बांए तर्फ़ मोड़ना.

बांए तर्फ़ मोड़ने को दहना हाथ आहिस्ता से आगे बढ़ावो-और ऊपर की उंगली से अन्दर की अगल की रास पकड़लो—और दहने हाथ को वापिस बांए हाथ की तर्फ़ लावो—इस तरह कि दूसरी उंगलियां रासों पर सरकती हुई आवें—मगर अपनी अपनी रासों

से अलहदा नहीं—अन्दर की अगल की रास की ऊपर की उंगली के नीचे गूंज बन जावेगी—(तस्वीर नं: ३६)— जब अगल का घोड़ा अच्छी तरह मुड़ रहा है-छोटी और तीसरी उंगलियों से
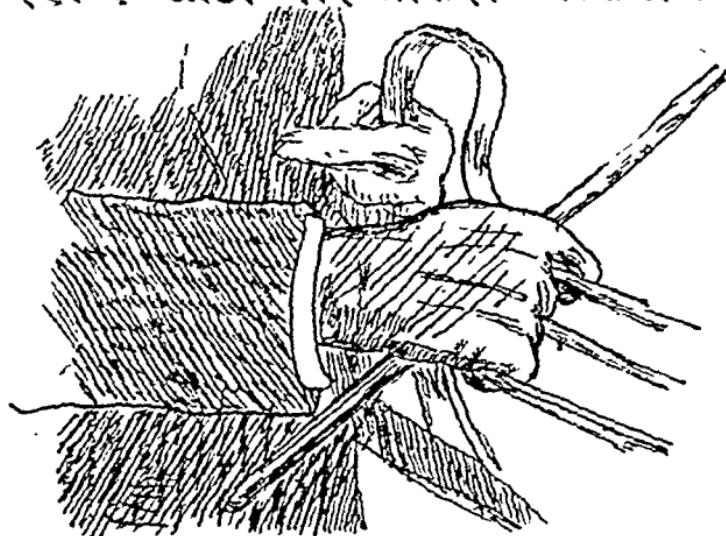
तस्वीर नं. ३६, टेन्डम—बांएं तर्फ़ मोड़ना.

बाहर की रासों को मज़बूत पकड़लो और हस्ब ज़रूरत कलाई को जिस्म से बाहर की तर्फ़ मोड़कर दबाव डालो- इस तरह छोटी उंगली जिस्म के नज़दीक होजावेगी-जिसके सबब से अगल का

घोड़ा यकलख़्त और जल्द नहीं मुड़ेगा— और धुर का घोड़ा भी अगल के एक दम पीछे जाने से और कोने पर चढ़ने से रुकेगा—फिर भी अगर धुर का घोड़ा जल्द मुड़ता है—तो बांयां हाथ दहनी तर्फ़ ढीला करदो—जिसके सबब से अन्दर की धुर की रास ढीली होजावेगी और घोड़ा कोने से दूर दहनी तर्फ़ को रहेगा—अगर अगल का घोड़ा मुड़ने में तआम्मुल करे—तो वह गूंज जो दहने हाथ की ऊपर की उंगली से पकड़ी गई है—बांयें अंगूठे से उसी तरह पकड़लो—जैसी गूंज बनाने को हिदायत की गई है—दूसरी गूंज जैसी पहली बनाई है फिर बनालो—जिस्से अगल का घोड़ा हस्ब ख़्वाहिश जल्द मुड़ जावेगा ॥

दहनी तर्फ़ मोड़ने के लिये दहना हाथ आगे को बढ़ाओ—और बीच की

दहनी तर्फ़ मोड़ने का उमदा क़ायदा.

उंगली से अन्दर की धुर की रास पकड़ कर एक या दो इंच वापिस हाथ को लावो—अगर अन्दर की धुर की रास थामे हुए—और दूसरी रासों पर से उंगलियां सरकाते हुए इस अमल करने का यह मतलब है—कि धुर का घोड़ा जल्द न मुड़जावे—फिर छोटी और तीसरी उंगली से बाहर की रासों को मज़बूत पकड़लो—और उन पर खूब दबाव दो तस्वीर नं: ३७ अगर अगल का घोड़ा जल्द न मुड़ जावे तो बांए हाथ की पुश्त बतदरीज नीचे की तर्फ़ मोड़ो—जिस्से घोड़ा बहुत उमदा तोर से मुड़ जावेगा॥

मरकूमे सदर क़ायदे ख़ासकर उमदा शुमार कियेगये हैं—क्योंकि गूंज बनाने की ग़रज़ से दहना हाथ रासों के बाहर निकालने की ज़रूरत को रफ़ा कर देता है-जिस्से बहुत बड़ा

ख़तरा यह है—कि दहना हाथ वापिस अपनी जगह पर बहुत जल्द लेजाना क़रीब २ नामुमकिन है—जोकि धुर के घोड़े को कोने पर चढ़ने से—या अगल को यकलख़्त मुड़ जाने से रोकता
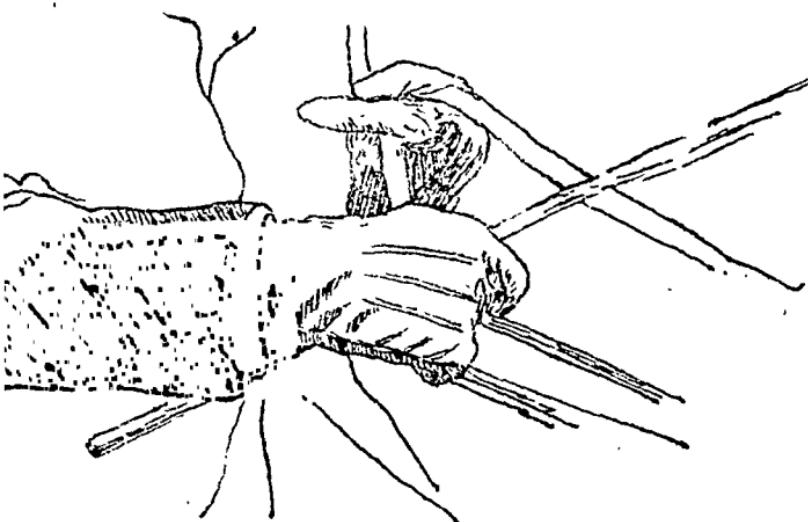
तस्वीर नं. ३१, टैन्डम को दहने तर्फ़ मोड़ना.

है—घोड़े इतने जल्द मुड़जाते हैं—कि धुर का घोड़ा पेश्तर इसके कि अगल की रास बांएं अंगूठे से पकड़ी जावे—अगल के घोड़े का मुड़ना पहचान जाता है—और टैन्डम की रासें

बहुत नज़दीक होने की वजह से धुर के घोड़े की रास दहने हाथ से वक्त पर उसको रोकने के लिये पकड़ना मुश्किल है—दर हक़ीक़त कई काम एक ही वक्त में करने होते हैं-और कमाल हासिल करने के लिये रासों पर उंगलियां चलाना क़रीब २ ऐसा ही है—जैसा कि क़ानून बजाना—अलवत्ता बहुत ही ठंडे घोड़े की रासों की गूंज उसी तरह बन सकती है-जैसे चोकड़ी में अमल किया जाता है—मगर यह क़ायदा है कि रास की छोटी गूंज बनाई जावे—वरना अगल का घोड़ा मुड़कर तुम्हारे सामने आ जावेगा. इसलिये तुमको मुक़ाबले की रास खेंचने के लिये हमेशा तैयार रहना चाहिये—जिस्से घोड़ा जल्द न मुड़ सके॥

अगल के घोड़े को तंग मोड़ पर मोड़ने का सही वक्त पहचानने के लिये

सिर्फ़ महावरे से ही क़ाबिल हो सकता है—ग़ालिब गुमान आम और उमदा क़ायदा ये है—कि जिस सड़क पर मोड़ने को हैं-उसके बीचों बीच अगल के घोड़े के सर पहुंचते ही उसको मुड़ने का इशारा देना चाहिये—इससे ज़ियादा बयान करना फ़ज़ूल है—हर काम सड़क की चोड़ाई और मोड़ के ज़ाविये पर मुनहसर हैं—ताहम यह अमर बे ख़तर है—कि घूमने के लिये जितनी ज़ियादा जगह मिल सके लेना चाहिये—इस सबब से यह उमदा तरकीब है-कि कोने पर पहुंचने से पेशतर सड़क के मुक़ाबले की तर्फ़ से गुज़रना चाहिये—बशर्ते कि भीड़ में जगह मिल सके॥

कोने पर घोड़े को घटो मोड़ने का वक्त.

उमदा तौर से घुमाने के लिये इस तरह कि धुर का घोड़ा अगल के घोड़े के खोज न छोड़े—और इधर उधर

भीड़ में रासें संभालने के लिये फुर्ती चाहिये.

गोल न घूमे—श्रौर बड़े शहरों की भीड़ में से गाड़ी ले जाय—निहायत कारीगरी श्रौर फुर्ती से रास संभालने की ज़रूरत है-श्रौर घोड़े भी खूब सिखाये गये हों—कि हमेशा दहानों पर तुले हुए रहें—कि हलका भी दबाव मालूम

कोचवान के हाथ का दहान पर दबाव का घोड़ों को फ़ौरन जवाब देना चाहिये.

करके फ़ौरन उसका जवाब दें—जब तुम अपना हाथ उनकी तर्फ़ ढीला करदो—उनको फ़ौरन चाल बढ़ा देना चाहिये-तावक़्ते कि तुम वापिस असली वज़न रासों पर न दो—लेकिन जब इस्से ज़ियादा वज़न दिया जावे—उन को फ़ौरन चाल घटा देना चाहिये—श्रौर "श्रोमनीबस" में भी बख़ूबी चलें—हरगिज़ न चमकें-ऐसे शायस्ता घोड़ों की टैन्डम होती है-मगर मिलना मुशकिल है॥

टैन्डम के मुबतदी को, श्रौर उस शख़्स को-कि जिसको चौकड़ी हांकने

का—किसी क़दर मुहावरा है—हमेशा मालूम होगा—कि टैन्डम का मैलान ज़ियादातर आहिस्ता चलने का होता है—और घोड़ों की मुनासिब चाल रखने के लिये चाबुक से काम लेने की ज़रूरत होती है--अगर किसी तजुरबे-कार कोचवान के हाथ में रासें होंगी तो यह मैलान बग़ैर मदद चाबुक के रफ़ा होता हुवा मालूम होगा-क्योंकि वह हमेशा हलके हाथ और ढील मसक से काम लेता है—और यह कलाई कड़ी रहने से घोड़ों के मुंह पर एकसां वज़न न होने का नतीजा है—कभी बहुत कम और कभी बहुत ज़ि-यादा वज़न दिया गया है—घोड़ों के मुंह पर एकसां दबाव क़ायम रखने के लिये हमेशा हाथ आगे पीछे थोड़ा २ सरकता रहे और कलाई अच्छी तरह खेलती रहे ॥

आहिस्त चलाने मैलान.

बीच की रासें बदलने का फ़ायदा.

जिस वक्त अगल का घोड़ा बांयें तर्फ़ पड़ता होवे-और धुर का दहनी तर्फ़—यह तरकीब हमेशा दुरुस्त रहेगी—कि दोनों बीच की रास दहने हाथ से बांयें हाथ में सामने की तर्फ़ से किसी क़दर अन्दर की तर्फ़ सरका दो—इस वक्त पूरे हाथ से काम लो—अगर इसके खिलाफ़ अगल का घोड़ा दहनी तर्फ़ पड़ता होवे—और धुर का बांयें तर्फ़—तो बीच की दोनों रासें बाहर की तर्फ़ खेंचो—जबतक घोड़े सीधे होजावें—याद रखना चाहिये—

रासें मज़बूत पकड़ना चाहिये.

अगरचे दहने हाथ से बहुत काम ले रहे हो—मगर रासें जोकि तुमने बांयें हाथ में मज़बूत पकड़ रखी हैं—हर वक्त न तो कम होनी चाहिये—और न फिसलनी चाहिये—किस लिये कि हर वक्त दहना हाथ रासों से अलहदा करने के क़ाबिल रहो—और घोड़े फिर

भी ठीक—एक दूसरे के पीछे सीधे चलें—बांईं कलाई कुल रासों को मज़बूत पकड़े हुए जिस्म की तर्फ़ मुड़ी हुई रहे—और हाथ की पुश्त खते अमूद की तरह सामने को रहे॥

यह क़ायदा बांयां हाथ रखने का बहुत ही उमदा है—किस लिये कि बांएँ हाथ की पुश्त को सिर्फ़ ऊपर नीचे कर देने से अगल के घोड़े को बांएं दहने मोड़ने के लिये बग़ैर मदद दहने हाथ के बहुत काम में आता है—अंगूठा क़रीब क़रीब सामने की तर्फ़ मसावी रहना चाहिये—और ऊपर की उंगली के मुवाफ़िक़ हर वक़्त किसी अगल की रास की गूंज पकड़ने के लिये तैयार रहे—इसी सबब से यह उंगलियां रास पकड़ने के काम में मश्ग़ूल नहीं होना चाहिये॥

अंगूठा और ऊपर की उंगली प्वांट बनाने को हर वक़्त तैयार रहना चाहिये.

कुल चारों रासें अपनी जगह पर तीसरी और छोटी उंगली से किसी

तीसरी और छोटी उंगली

से रासें मज़बूत पकड़ना चाहिये.

क़दर बीच की उंगली की भी मदद लेकर मज़बूत पकड़ लेना चाहिये॥

उन घोड़ों को टैन्डम में चलाने के लिये जोकि पहले नहीं चले हैं— इस तरह कि एक दूसरे के पीछे बराबर चलें—बहुत कारीगरी और सबर की ज़रूरत है—क्योंकि यह मालूम होगा कि दोनों घोड़ों का एक दूसरे की बराबर चलने की तर्फ़ मैलान होता है—धुर का घोड़ा अमूमन अगल के घोड़े की बराबर पहुंचने की ख़्वाहिश रखता है—जोड़ी मिलने के मैलान को बग़ैर झटके या जल्दी रासें खेंचने के फ़ौरन रोकना चाहिये॥

जोड़ी मिलने का मैलान.

अगल के घोड़े को मत छेड़ो.

अगल के घोड़े को जितना मुमकिन होवे—कम छेड़ना चाहिये—सड़क पर इधर उधर खेंचने से ज़ियादातर पहले पहल जितना बचा सको बचावो— लेकिन धुर के घोड़े को उसके पीछे २

चलाने की कोशिश करो—तुमको मालूम होगा कि—अगर घोड़े नेक मिज़ाज हैं तो वह एक दूसरे के पीछे २ चलने को फ़ौरन समझ जावेंगे ॥

चाबक से बारबार का[म] लेने से का[म] लियाक़त ज़ाहिर हो[ती] है.

चाबक से मुतवातिर काम मत लो—घोड़ों को ख़ुसूसन हाथ से और किसी क़दर आवाज़ से चलाने की कोशिश करो—मसलन शुरू चलने के वक़्त रासों से उनके मूंह पर हलकासा इशारा देकर चलने को कहो—फ़ौरन कहो कि "चलो भाई" (गो आन) या कोई ऐसाही लफ़्ज़—उस वक़्त हाथ को ढीला छोड़ दो ताकि चलते वक़्त न अड़े—घोड़े बहुत जल्द इन इशारों को समझ लेंगे—और चाबक का इस्तेमाल बेकार हो जावेगा—ताहम याद रखना चाहिये—कि धुर का घोड़ा गाड़ी उठावे—इसलिये उसके चाबक छुवाने के लिये तैयार रहो—अगर वह रुके—जो वह

धुर के घो[ड़े] से गाड़ी उठावो.

अड़ने का आदी होवे तो अगल के घोड़े से मदद दिलाना वेहतर होगा॥

नो आमोज़ और डरपोक घोड़े के लिये शुरू में सहूलियत से चलदेना ही हर तरह उमदा है—होशयारी से अगल के घोड़े को देखते रहो—जब वह चलने लगे तो फ़ौरन धुर के घोड़े को भी चाबक से चलावो—अगर वह उसके बराबर न चलता होवे—जब रोकना होवे—तो हमेशा "व्हो," बस, कहना वेहतर होगा—वे बहुत जल्द आवाज़ को मानना सीख जावेंगे-और यह आदत काम में आवेगी॥

घोड़े को आवाज़ से हिम्मत दिलावो.

अगर कोई घोड़ा चमकता हो तो उससे फ़ौरन बोलो और हिम्मत दिलावो-मगर किसी हालत में चाबक नहीं मारना चाहिये—वरना उसके चमकने की आदत पड़ जावेगी—यह हरकत घोड़ा क़रीब २ डरपोक होने से

बहुत ही कारआमद है—क्योंकि जब तुमने अगल के घोड़े को चाबक लगाया—अमूमन वह कुछ दूर तक तेज़ होगा—और तुम्हारे चाबक के हाथ से उसको धीमा करने की बहुत ज़रूरत होगी॥

इसके अलावा तावक़्ते कि चाबक की सर अच्छी तरह गाड़ी के अन्दर न आजावे—दहना हाथ गाड़ी के अन्दर लेजाने में ख़तरा है—क्योंकि यह आसानी से धुरे में लिपट जावेगी—या पइये के नीचे आजावेगी—अगर पइया उसके ऊपर से फिर गया—तो दूसरी मर्तबा काम लेते वक़्त सर उसी जगह से टूट जावेगी॥

किसी ऐसे मक़ाम पर कि जहां अगल के घोड़े के घूम जाने का अंदेशा है—तो ऐसे खास मक़ाम पर घोड़े के चाबक मारने को तैयार रहो—यह

अमल करने के लिये चाबक की सर खोललो—और चाबक की डंडी दहनी तर्फ़ सामने को रखो—सर खुली रहने में कोई हरज न होगा—अगर दहनी तर्फ़ की हवा न चल रही होवे॥

उतराई से पहले चाल कम कर लो.

पहाड़ की चोटी पर पहुंचने से पहले रफ़तार घटालो जहां से तुम उतरने को हो—क्योंकि उतार में पहुंच जाने के बाद रोकना नामुमकिन होगा जहां कि रफ़तार तेज़ करना आसान होगा—पहाड़ से उतरते वक्त चारों रासों को घटाने की ज़रूरत है-खुवाह अंगूठे और ऊपर की उंगली से पीछे से खेंचो—(तस्वीर नं: ४) या दहना हाथ हस्ब बयान साबक़ा रासों पर रखो—और बांएं हाथ को दहनी तर्फ़ सरकालो—(तस्वीर नं: ३५). बाज़ वक्त बहुत ऊंचे पहाड़ से उतरने में अगल के घोड़े को किसी क़दर पीछे को

खेंचने की ज़रूरत होगी—लेकिन अमूमन सिर्फ़ धुर के घोड़े को न खेंचने और गाड़ी को रोकने से कुल रासें खुद ब खुद घट जायेंगी—जिस्से अगल के घोड़े पर खिंचाव नहीं रहेगा—और जोतों पर ज़ोर पड़ना मौक़ूफ़ हो जावेगा॥

अगल के घोड़े पर खिंचाव नहीं है.

अगल की रासें घटाना.

अगल की दोनों रासें खुवाह दहने हाथ में निकाल लो (तस्वीर नं: ३२) इस तरह कि अन्दर की अगल की रास पहली या दूसरी उंगली के नीचे रहे—और बाहर की रास छोटी उंगली के नीचे रहे—फिर वापिस बांएं हाथ में घटाकर रखदी जावें—या बांएं हाथ के सामने से दहने हाथ से रासें पीछे को हटा दो पिछली तरकीब उमदा समझी गई है॥

अगल से ज़ियादा काम लिया जाना.

ऐसे मौक़े पर क़ाबिले ज़िक्र है—और इस बात पर खूब ध्यान रखना

चाहिये—कि मुवतदी का मैलान हमेशा अगल के घोड़े से ज़ियादा काम लेने की तर्फ़ होता है—मगर अगल के जोत अलावा पहाड़ की चढ़ाई—और रेतीले मक़ामों के बिलकुल तने हुए न रहें—और उस वक़्त अगल से खूब ज़ोर लिया जावे—अगल के घोड़े से ही साफ़ ज़मीन पर कुल काम लेने का यह नतीजा होता है—कि धुर का घोड़ा बहुत जल्द पीछे लटकना सीख जाता है—और अपने आगेवाले से गाड़ी और खुद को खिंचवाता है—और जब ऐसा होता है तो तंग मोड़ पर बे खतर घुमाना नामुमकिन है—इस से साफ़ ज़ाहिर है कि पहाड़ की चढ़ाई में अगल के घोड़े को खूब खेंचना चाहिये—और मोड़ने से पहले अगल के जोतों पर ज़ोर बिलकुल नहीं रहना चाहिये—वरना धुर का घोड़ा कोने

पहाड़ पर चढ़ते वक़्त मोड़ना.

पर ज़रूर चढ़ जावेगा ॥

इस फ़सल से मालूम होगा–अगरचे आम उसूल टैंडम हांकने के चौकड़ी हांकने जैसे ही हैं—ताहम छोटी २ बातों का बहुत फ़र्क़ है—इसका उस शख़्स को महावरा करना चाहिये–और होशयारी से सीखना चाहिये–जो दोनों उमदा तौर से हांकना चाहता है॥

एक बहुत मशहूर फ़र्क़ जिसका कि फिर बयान किया जाता है—वह यह है—कि मुशकिल मक़ामों में टैंडम बे ख़तर हांकने के लिये बहुत सुबक और चाबक दस्ती की ज़रूरत है॥

टैंडम इसलिये मसतूरात के लिये जो हांकने का शौक़ रखती हैं—बख़ूबी मौज़ूं समझी गई है—कि बग़ैर ना-वाजिब ताक़त गवारा करने के चौकड़ी हांकने का लुत्फ़ उठा सकती हैं—और हलके और फुरतीवाले हाथों की ख़स-

लतों को जिसमें कि वह आदमी से सबक़त लेगई हैं—काम में ला सकती हैं॥

हांकने का हुनर कुल बेशुमार छोटे २—अगरचे बहुत कार आमद तशरीहों से मुरक्कब है लेकिन ग़ालबन इन छोटे अमूर पर इतनी तवज्जो की ज़रूरत नहीं है--जैसी टैंडम हांकने में दरकार है॥
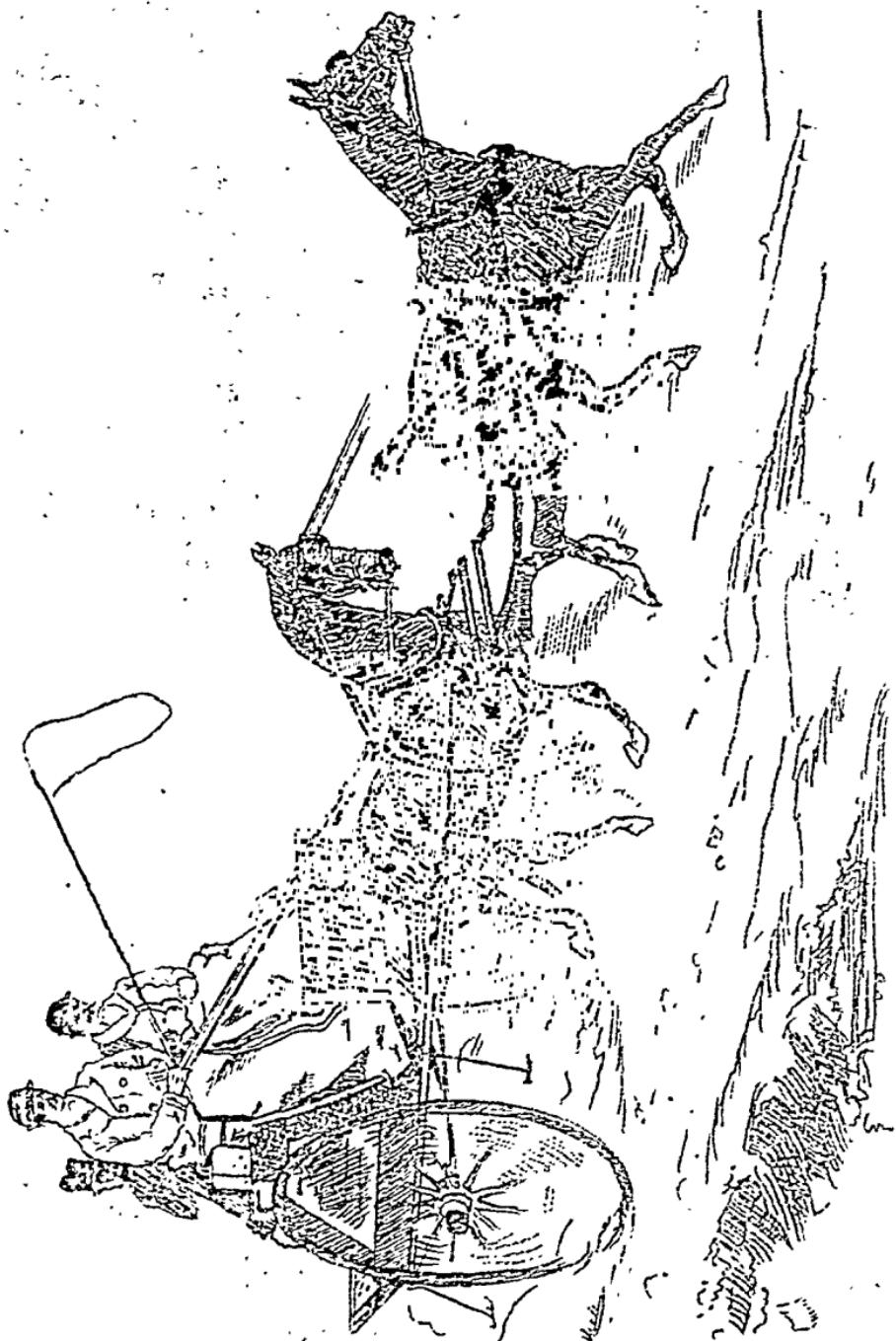
फ़सल ग्यारवीं

टैन्डम के सामान के बयान में.

टैन्डम का सामान जितना मुमकिन हो—सादा, हलका और मज़बूत होना चाहिये—रंग अपनी २ पसंद और आराम पर मुनहसर है—मगर बेरूं-जात के लिये ग़ालबन बादामी सामान पीतल के पुरज़ों का मोज़ूं है—लेकिन सैरगाह में हांकने के लिये सियाह सामान के इस्तेमाल का दस्तूर हो सकता है—लेकिन दर हक़ीक़त फ़ौजी अफ़-सरों के लिये वतन में और खसूसन परदेस में बादामी सामान बहुत मुफ़ीद है—क्योंकि हालत मुलाज़मत में इस क़िस्म का चमड़ा साफ़ करना उनकी तरबियत का एक हिस्सा है॥

उमदा क़िस्म का सामान, सादा और हलका.

घुर का सामान.

धुर का सामान, मामूली इक्के का सामान एक दो तरमीम के साथ होता है—लेकिन इनकी दर हक़ीक़त ज़रूरत नहीं है—वह तरमीम यह है—अव्वल दो पीतल की कड़ी या खाने जोतों के बकसुवों में लगाये जाते हैं—जिनमें अगल के जोतों के कबानीदार हुक लगते हैं—दूसरे चाल को रास कड़ियां जो एक २ फिरकी से अलहदा की हुई हैं—रासों के लिये होती हैं-अव्वल तरकीब की जगह जिनमें एक सिरे पर एक सूराख होता है—जोतों के वकसुवों में लग सकते हैं—और दूसरे सिरे पर किसी धात की कड़ियां सिली हुई होती हैं—जिनमें अगल के जोत के हुक लगादिये जाते हैं—अगल के घोड़े की चाल धुर के घोड़े की चाल से हलकी होना चाहिये-जिसमें दोनों तर्फ़ एक २ चमड़े की गूंज सिली हुई

अगल का सामान.

जोत निकालने के लिये होना चाहिये-घोड़े के पुट्ठे पर दो चोंगियां इतनी लंबी हों कि जोत सीधे रहें॥

अगल के जोत.

अगल के जोत हमेशा इतने लंबे होते हैं—कि धुर के घोड़े के जोतों की गूंज में लग सकते हैं—जैसा कि बयान कर चुके हैं—यह तरकीब बहुत ही आसान है और किफ़ायत से तैयार हो सकते हैं-लेकिन दूसरी तरकीब में दो बेलन लगाये जाते हैं-जिसके सबब से अगल के जोत धुर के घोड़े के बराबर छोटे हो सकते हैं॥

बेलन.

अव्वल बेलन जो अढ़ाई फ़ीट लंबा होता है—इसमें सामने की तरफ़ बीच में एक हुक पांच इंच लंबा होता है—और एक हलकी जंजीर एक फुट लंबी पुश्त की तरफ़ लगी रहती है-यह जंजीर धुर के घोड़े के हंसले की कमानी की कड़ी में लगादी जाती है—जिसके

सबब से बेलन नीचे नहीं गिरता है—बेलन के दोनों सिरों पर क़रीब दो २ फ़ीट लंबे जोत होते हैं जो धुर के घोड़े के जोतों के बकसुवों में लगादिये जाते हैं—जैसा कि पहले लंबे जोतों की बाबत बयान हो चुका है॥

लंबे जोतों मे बेलनों के फ़ायदे.

दूसरा बेलन हलका और दो फ़ीट लम्बा होता है-जिसमें एक कुंदा होता है--जो दूसरे बेलन के हुक में लगा दिया जाता है—इस तरकीब के सिफ़ारिश करनेवाले दावा करते हैं—कि अव्वल तरकीब से यह कम खतरनाक है—क्योंकि न तो घोड़े की टांग जोत में आ सकती है—और न कोई जोत अगल की पिछली टांगों में लिपट सकता है—अगर वह अचानक पीछे को घूम जावे—दूसरी तरकीब में बहर हाल पहली तरकीब से ज़ियादा खर्च और तकलीफ़ उठानी पड़ती है—होशयारी

से हांकने में कोई हादिसा वाक़ै होने की ज़रूरत नहीं है॥

अगल के जोत बाज़ औक़ात बमों के सिरे पर लगा देते हैं—मगर ख़तरनाक हैं—यह हरगिज़ नहीं करना चाहिये॥

अगल के जोत बमों में लगाना ख़तरनाक है.

मैंने ऐसा भी देखा है—कि टैन्डम के जोत इक्के के जोत और बमकश की जंजीरों से उसी वक्त बना लिये जाते हैं—जंजीरें उस फ़सल को जो अगल और धुर के जोतों के बीच में रहता है-पूरा कर देती हैं—यह तरकीब बहुत दिलचस्प मालूम होती है-मगर अगल के जोत भारी हो जाते हैं॥

अगरचे सीनाबंद हंसले जैसा ख़ुशनुमा नहीं होता—ताहम इक्के के मूजब टैन्डम में भी उसी तरह लगा सकते हैं—चूंकि सीनाबंद हर घोड़े के बैठ जाता है—इसलिये कई हल्क़ा ख़रीदने

सीनाबंद.

की ज़रूरत नहीं रहती—नीज़ यह उस वक्त बहुत काम देता है—जबकि घोड़ा हंसले से लग जाता है—फ़सल अव्वल देखो॥

अगल के जोतों की लंबाई.

अगल के जोतों की लंबाई का घोड़े की लंबाई और उसकी चाल पर दारो मदार है—अगल के जोत हत्तुल इमकान छोटे होना चाहिये—मगर इतने छोटे नहीं कि धुर का घोड़ा अगल के घोड़े पर चढ़ता हुवा मालूम होवे—अगल के घोड़े के पूरे खिंचाव की हालत में तीन फ़ीट का फ़ासला दुम से धुर के घोड़े के नाक तक मुनासिब मालूम होता है॥

अगल के जोतों को लगाना.

ऐसे मौक़े पर अगल के जोतों की बाबत यह बयान करना बेहतर होगा—कि अगल के घोड़े को जोतने और खोलने के वक्त जोतों को इस तरह लगाना बेहतर होगा—कि जोतों को

ऊपर नीचे बाहर की तर्फ़ चौंगियों के सामने से निकालकर हंसले की कड़ी में कस देना चाहिये॥

अगल की रासें कैसे लगाना.

अगल की रासें लगाने का यह आम क़ायदा है—कि रासों को सिरे पर से दोहरा करके चाल और हंसले की रास कड़ी में से निकाल लेवे—इस तरह कि बची हुई रास बाहर न लटकती रहे—यह आंटी इतनी लंबी दुरुस्त रहेगी कि रास का सिरा चाल की रास कड़ी तक लाकर रास को दोहरा करलो—और उस आंटी को मरक़ूमे सदर के मूजब रास कड़ियों में डालदो॥

हांकने के दहाने—धुर का दहाना.

मामूली काम के लिये लिवर पूल या कोहनीदार दहाना उमदा होगा—लेकिन धुर के घोड़े की दहाने की बग़ल की ताड़ियां एक हलके लोहे के तार से जोड़ देना चाहिये—जिस्से

अगल की रास ताड़ियों में न उलझेगी—जोकि हमेशा घोड़े के सर हलाने से उलझ जाती है—जिस्से अगल का घोड़ा फ़ौरन एक तर्फ़ मुड़ जावेगा—सा सिवा इसके इस तरह उलझी हुई रास को बग़ैर गाड़ी से उतरने के निकालना बहुत मुश्किल है—मैं इस क़ायदे को बेहतर ख़याल करता हूं—कि अगल की रासें धुर के घोड़े की गोलबाग की रास कड़ियों में से बजाय उन कड़ियों के जो धुर के घोड़े की सर दिवाली और गल तसमें में लगी रहती हैं—निकालना उमदा तरकीब है—यह कड़ियां चार इंच ढीली लटकती रहना चाहिये कि धुर का घोड़ा बग़ैर अगल के घोड़े के मुंह के झटका देने के सर को बख़ूबी हिला सके—हंसले की रास कड़ी में होकर अगल की रास निकालने की ज़रूरत नहीं है—क्योंकि चाल को

दहाने का रास में उलझना.

अगल की रास गोल बाग की कड़ी में से निकालना.

रास कड़ियों में से सीधी रास जाने से अगल पर अच्छा क़ाबू रहता है॥

अलबत्ता अगर धुर का घोड़ा ऊपर या नीचे या दोनों तर्फ़ सर हिलाता हो तो उसके लिये ज़ेरबन्द और गोल बाग लगा देना चहिये—जो वाक़ई उसकी फ़ज़ूल हरकत को रोक देंगे॥

अगल को रासों के बकसुवा लगा के मत हांको अगर अगल के घोड़े के जोत या बेलन (अगर लगे हों) लात मारने या गिरजाने से टूट जावें तो रासें कड़ियों में से निकलकर घोड़ा बिलकुल अलहदा हो जावेगा और ज़ियादा हादिसे न होंगे—अगर किसी रास में अगल के घोड़े की दुम इलझ जावे—तो उसके निकालने को यह उमदा तरकीब है—कि धुर के घोड़े को उस तर्फ़ कि जिस तर्फ़ को रास

अगल को रासों को बकसुवे से मत जोड़ो.

अगल के घोड़े की दुम रास में इलझ जावे.

इलझ गई है—और अगल के घोड़े को उसके मुक़ाबले की तर्फ़ हत्तुल इमकान इलझी हुई बाग ढीली देकर मोड़ो—इस हिकमत से वह रास खुल जावेगी—अगर नहीं खुले तो अगल के घोड़े के पूठे पर चाबक मारो—ग़ालिब गुमान वह दुम हिलावेगा—और रास खुल जावेगी॥

डम का चाबक.

टैन्डम का चाबक चोकड़ी के चाबक से हलका और छोटा होता है—अगरचे यह भी बखूबी काम दे सकता है—अमूमन चाबक की डंडी क़रीब पांच फ़ीट और सर दस फुट लंबी होनी चाहिये—इसको गिरफ़्त और इस्तेमाल के लिये मुबतदी मेहरबानी करके फ़सल साबिका को देखें जहां इसका बयान अच्छी तरह करदिया गया है—इसके उसूल बिलकुल वही हैं॥
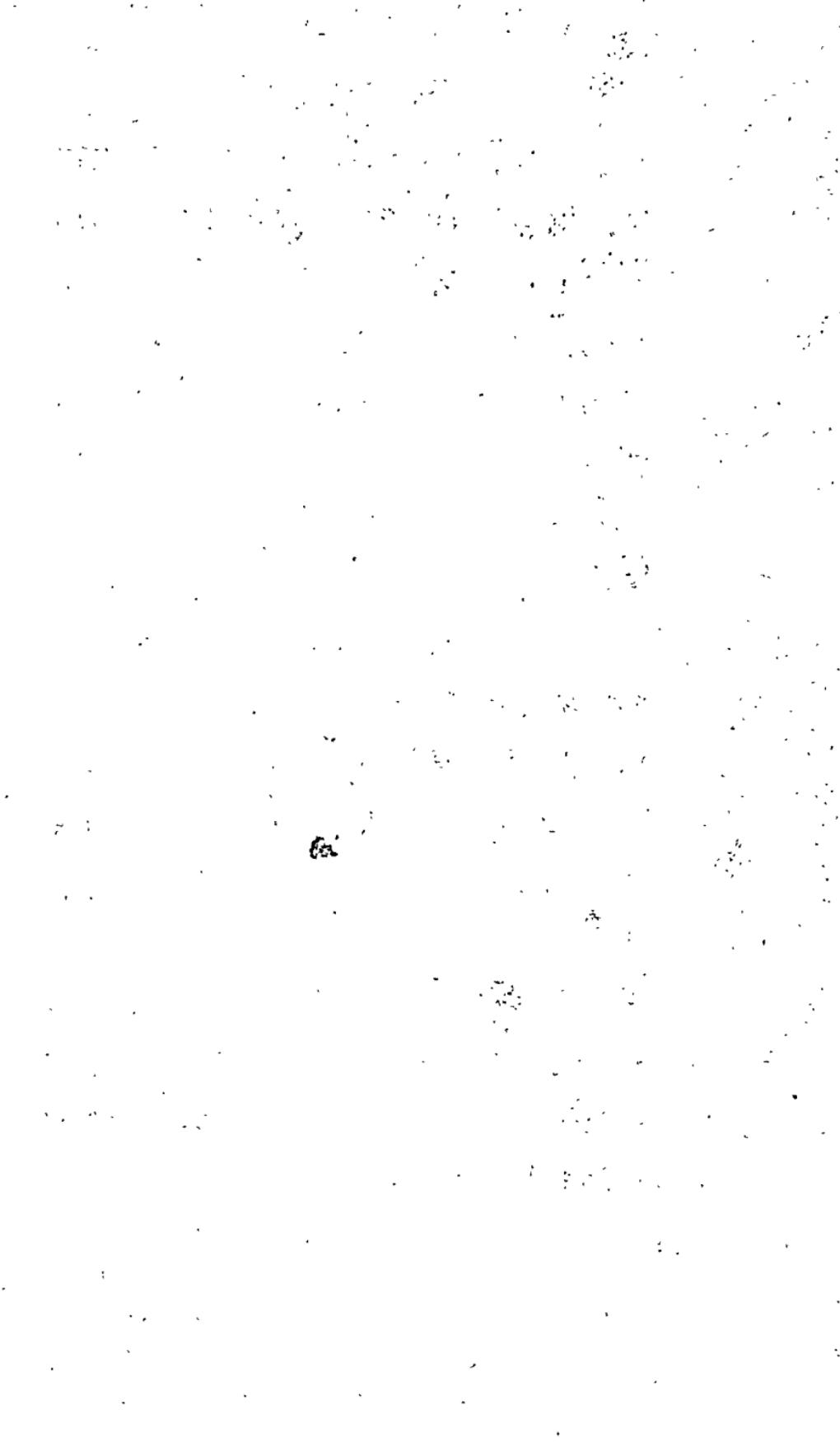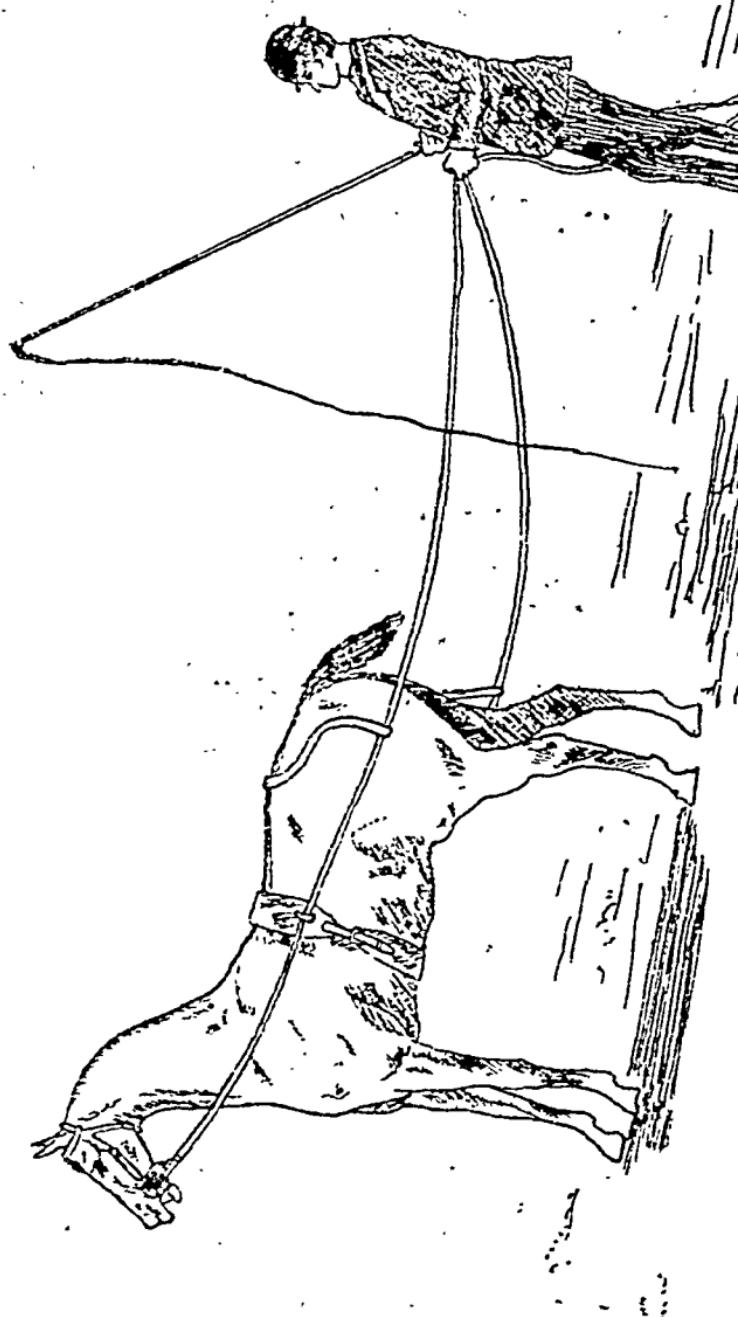
फ़सल बारहवीं

घोड़े को बग्गी में निकालने के बयान में.

घोड़े को असतबल में सामान का महावरा कराना.

आख़ीर में चंद हिदायतें घोड़े को बग्गी में निकालने की बाबत बयान करना उनके लिये मुफ़ीद होगा–जिन को नये घोड़े को अव्वल सबक़ देने में तजुरबा नहीं है—अव्वल घोड़े पर असतबल में ही सामान डालना उमदा तरकीब है—कुछ देर तक सामान लगा कर घोड़े को कायज़ा करके असतबल में ही खड़ा रहने दे॥

हिन्दुस्तान में ऐसा देखने में आया कि आसटरेलियन—बलकि तोपख़ाने के सीखे हुए घोड़ों के लिये भी हांकने का इरादा करने से पहले अंधेरियों की

आदत डालना बहुत ज़रूरी है—अंधेरी लगाकर अस्तबल में खड़ा रखना खिलाना और पानी पिलाने को बाहर निकालना और टहलाना चाहिये इस्से पेशतर कि वह अव्वल मर्तबा हांके जावें—वरना वह ज़रूर अड़ने लगेंगे॥

घोड़े को तल रासों में फेरना.

जब घोड़ा सामान का आदी हो गया बाहर निकालकर तल बागों में फेरना चाहिये—(तसवीर नंः ३९) एक रास से हरगिज़ नहीं—यह रासें फ़ीते की आसानी से बन सकती हैं—जैसी कि आम बागडोर होती है—लेकिन टैन्डम की अगल की रास भी यह काम उमदा देगी—घोड़े पर एक चाल जिस के दो कड़ियां दोनों तर्फ़ नीचे के रुख बीच में होना चाहिये—अगरचे इक्के के सामान की चाल भी जिसके बम की चोंगियां होती हैं—या ज़ीन जिसकी रकावें कड़ियों की एवज़ बांध दी जावें-

काम दे सकते हैं—हर हालत में दुमची ज़रूर होना चाहिये॥

किसी क़दर ढीला ज़ेरबन्द दहाने के लगाना हमेशा मुनासिब है—और यह दहाना एक बड़ी और मुलायम क़ज़ई का होना चाहिये—ज़ेरबन्द ऐसा लगाना चाहिये—कि दहाना घोड़े की मूंह की महराब के नीचे रहे—ताकि घोड़े का सर इतना ऊंचा न हो सके कि क़ज़ई का दबाव सिर्फ़ कल्लों पर रहे॥

क़ज़ई और ज़ेरबन्द भी लगावो.

टैन्डम के अगले के घोड़े के मूजब चोंगियां लगाना भी मुनासिब है—ताकि रासें ऊपर रहे—तब रासें चोंगियों–चाल की कड़ी–चाल की चोंगियां या ज़ीन की रकाबों में से निकालकर जैसा मौक़ा हो फिर क़ज़ई में लगा देना चाहिये॥

"बेयरिंग इसरेप्स."

अब घोड़े को चाबक से जोकि

तल रासों में टहलाते वक्त चाबुक काम में लावो.

सिखानेवाले के हाथ में रहता है रासों पर संभालकर हांक सकते हो—बाहर की रास घोड़े के पछाड़ी फ़ीचों के ऊपर रखकर चक्कर देते रहो—इसके सबब से वह कुल जिस्म से एकसां चलना सीख जावेगा—और कोचवान घोड़े के पिछले धड़ को बख़ूबी सीधा रखने के क़ाबिल रहेगा—और एक तर्फ़ कैंकड़े के मुवा-फ़िक़ जाने से रोक सकेगा—यह मत-लब एक रास से हासिल नहीं हो सकता है-बल्कि जिसके सबब से सिर्फ़ अगले धड़ से ही चलना सीख जावेगा॥

दूसरा फ़ायदा फ़ीचों के ऊपर रास रखने का यह भी है-कि पिछली टांगों पर जोत या औचिंग लग जाने से लात न मारेगा॥

ज़ियादा घेरसे तर्फ़ एक ही बाग पर चक्कर नहीं देना चाहिये.

अगर घोड़ा पछाड़ी रास रखने से बुरा मानता है तो उसकी पीठ पर रास रखकर हांकना शुरू करो—ज़ियादा

अरसे तक एकही बाग पर चक्कर नहीं देना चाहिये—लेकिन एक बाग से दूसरी बाग अकसर बदलते रहना चाहिये—अगर घोड़ा एक बाग पर सख़्त है—तो उसी बाग पर इतने अरसे तक चक्कर देना चाहिये जबतक कि दोनों बागों पर बराबर न फिरने लगे—जिस वक़्त घोड़ा बागों में खूब समझने लगे—और दोनों तर्फ़ एकसा मुड़ने लगे—तो रासों से उसको पीछे हटना सिखावो—जब यह काम घोड़ा बखूबी अंजाम दे देवे—तो उस पर सामान और टेन्डम जैसे लंबे जोत लगाकर बाहर निकालो॥

दो आदमियों को इन जोतों पर लूमने दो—जबकि घोड़े को चला रहे हो—इस तरह दबाव कम ज़ियादा कर सकते हैं—क्योंकि शुरू में थोड़ा वज़न दिया जाता है—घोड़े को रफ़ता रफ़ता

दो आद जोतों लूमें.

कंधों से खेंचने का मुहावरा हो जावेगा—शुरू में उजलत नहीं करना चाहिये—अगरचे बाज़ घोड़े असतबल से निकालते ही बिरेक या गाड़ी में फ़ौरन लगाये जा सकते हैं—जो उमदा चले हैं—लेकिन बाज़ ऐसी उजलत से हमेशा के लिये अड़ने लगते हैं॥

बेजा उजलत से अड़ना सीख जाते हैं.

हिन्दुस्तान में घोड़े निकालने की तरकीब.

हिन्दुस्तान में नये घोड़े अव्वल घसीटे में जोते जाते हैं—घसीटा तिकोना होता है—जिसमें बारह सिंगा (जूड़ा) लगा रहता है—घोड़े के जोत इस में लगा दिये जाते हैं—और कोचवान घसीटे पर खड़ा होकर घोड़े को हांकता है—जबतक कि वह अच्छी तरह गाड़ी में लगाने के क़ाबिल होता है—एक खड़ी लकड़ी जिसमें ऊपर की तर्फ़ एक छोटी लकड़ी आड़ी तोते के अड्डे की तरह घसीटे के सामने की तर्फ़ लगा देते हैं—जिस्से कोचवान को सहारा

रहता है—और गिरने नहीं पाता है॥

यह घोड़े सिखाने का तरीक़ा ख़राब नहीं है—क्योंकि घोड़े के ले भागने या लात मारने से ज़ियादा नुक़सान नहीं हो सकता है—और घसीटा हलका होने के सबब वह अड़ना भी नहीं सीखेगा॥

जब घोड़ा खेंचना जान गया—फिर वह गाड़ी या बिरेक में लगाने के क़ाबिल है—अगर मुमकिन होवे तो अव्वल उसको धीमे और पुराने घोड़े के साथ—(जोकि शुरू में ज़ोर लगाकर गाड़ी उठा लेगा न कि तरारा भरकर)—जोड़ी में बिरेक में लगावो—कई पुराने बिरेक के घोड़े नये घोड़े के मिज़ाज पहचानने में बहुत होशयार होजाते हैं—और उसी के मूजब गाड़ी चलाने में ज़ोर लगाते हैं—गोल बाग-घुटनेबंद-(नी कैप)—और पट्टियां लगाना मत

धीमे मिज़ाज का घोड़ा नये के साथ लगाना.

भूलो॥

बम के दोनों तर्फ़ जोतने का महावरा डालो.

नये घोड़े को बम के दोनों तर्फ़ लगाकर कुछ अरसे तक हांको—ताकि वह उमदा तौर से अकेला गाड़ी में चलने के क़ाबिल हो जावे॥

शुरू में नये घोड़े के जोतने के वक्त रस्सी की बाग डोर हमेशा रहना चाहिये—अगर घोड़े के ज़ियादा बदी करने का अहतमाल होवे तो दो बाग डोर लगावो—जिनको दोनों तर्फ़ दो आदमी पकड़े रहें॥

नये घोड़े को भीड़ में हांको.

बमुक़ाबले बेरूंजात की सड़कों के जहां कि आमदो रफ़्त कम है—किसी क़दर भीड़ की सड़कों पर हांकना बहुत बेहतर होगा—क्योंकि दूसरी चीज़ों को चलते फिरते देखने से उसका ध्यान बट जावेगा—और घोड़ा अच्छी तरह चलेगा—और कोचवान के साथ बद-माशी नहीं करेगा॥

मरकूमे सदर काम लेने से पेशतर उसको खूब महनत देदेना मसलहत होगा॥

सबक़ देने से पेशतर महनत दे देना चाहिये.

अगर जोड़ी हांकने का बिरेक न मिल सके तो एक मज़बूत और हलकी दो बम वाली गाड़ी से काम लो—लेकिन भारी और बग़ैर कमानी की गाड़ी बहुत ख़राब होती है—क्योंकि यह बहुत शोर करेगी—और नये घोड़े के डरजाने का अहतमाल है—और इसके भारी होने से घोड़ा अड़ने भी लगेगा॥

अकेले घोड़े को सिखाना.

ऐसी हालत में मज़बूत पुश्तंग पट्टी लगावो—लेकिन ख़बरदार इसको बहुत तंग मत कसो—वरना पोइया होने से उसके पूठे पर लगेगी—और ग़ालिबन घोड़ा लात मारने लगेगा॥

गोल बाग भी ढीली रहना चाहिये-मगर इतनी तंग रहे-कि घोड़ा अपना सर सीने के पास न लेजा सके—ढीला

ज़ेरबन्द भी लगाना चाहिये—अगर घोड़ा सर ऊंचा करता होवे—ज़ेरबन्द मोहरे के कसना चाहिये॥

दो आदमी जोतने में मदद दें.

घोड़े को पकड़े रखने और बग़ैर बम छूने के गाड़ी में जोतने के लिये—दो आदमी होना चाहिये—बमों को खूब ऊंचा उठालो—और हत्तुल इम-कान घोड़े को उसके नीचे लावो—इस तरह कि गाड़ी के सामने बिलकुल सीधा रहे—फिर उनको आहिसता से नीचा करके गाड़ी को आगे की तर्फ़ बढ़ादो—और बमों के सिरे चोंगियों में डालदो—अब जितना जल्द हो सके हुकों में जोत और पुशतंग पट्टी लगादो—एक आदमी घोड़े के सामने खड़ा रहकर उसको पकड़े रहना चाहिये-और जबतक कोचवान चलने के लिये तैयार न हो घोड़े का सर नहीं छोड़ना चाहिये—ऐसी हालत में

पुशतंग पट्टी लगाने से पहले जोत कस दो.

घोड़े को बाग डोर से चलाना उमदा
तरकीब है—दो आदमी दोनों तर्फ़
मदद के लिये तैयार रहना चाहिये—
—और कोचवान गाड़ी के बाहर की तर्फ़
ं पकड़कर पैदल चले—इस तरह
गाड़ी पर चढ़े बग़ैर चला सकेगा—
ार वज़न भी जो घोड़ा खेंचने को है—
हुत कम हो जावेगा॥

अगर घोड़ा अच्छी तरह चलने
ागा—तो गाड़ी में बैठकर हांको—
और थोड़ी देर तक आदमी को साथ
साथ दौड़ने दो—फिर भी अगर व
अच्छी तरह चल ही रहा है तो व
आदमी पीछे बैठ सकता है—अगर उसक
अड़ता देखो तो फ़ौरन आदमियों
चलावो—मारो मत—उस आदमी
रास पकड़कर मत चलाने दो—लेकि
ज़ियादातर मोहरे या बाग डोर से
जब वह कुछ फ़ासले तक अच्छी त

मुड़ने का सबक़. सीधा चला गया तो उसको मुड़ना सिखावो—अगर मुमकिन होवे तो बहुत बड़े दायरे में मोड़ना शुरू करो—अगर यह न हो सके तो उसको आ-हिस्ता घुमावो—और वह आदमी बाहर का बम धकेलकर मदद दे—क्योंकि मुड़ने में भीतर का बम शाने पर अटकता है—जिस्से वह या तो एक तर्फ़ गिरेगा—या पीछे हटेगा—और डर जावेगा॥

अड़ियल को कैसे चलाना. जो घोड़ा बदी से अड़ता रहता है—मेरे ख़याल में उसकी एक टांग अधर बांधकर जबतब कि वह थक जावे—खड़ा रहने दो—जिस्से वह टांग खोलते ही फ़ौरन चलदेगा॥

रस्सी की दुमची लगाना भी ज़ि-यादा असर पिज़ीर है—यह इस तरह बनाई जाती है-कि एक इंच मोटी और १६ फ़ीट लंबी रस्सी लेकर दोहरा

से उस वक्त काम लिया जावे—जबकि ज़ियादा मूंह पर ज़ोर देवे॥

सबक़ रोज़ मर्रा देना चाहिये.

यह काम घोड़े से बग़ैर तातील के बहुत अरसे तक लेना चाहिये—वरना वह बहुत जल्द सिखलाया हुवा भूल जावेगा॥

गाड़ी से खोलते वक्त रासें कैसे लगाना.

काम खतम होने पर और घोड़े को गाड़ी से निकालने के बाद रासों को बाहर की तर्फ़ रास कड़ी में लगा दो—जिससे वह रासें ज़मीन पर नहीं गिरेंगी—जबकि घोड़ा अस्तबल में जा रहा है—खबरदार रहो कि बची हुई रासें जोकि रास कड़ी में दोनों तर्फ़ लटकती हैं—बमों के हुक से आगे की तर्फ़ होना चाहिये—वरना गाड़ी को पीछे हटाते वक्त अगर घोड़ा आगे को बढ़जावे—तो रासें बमों के हुक में उलझने से घोड़े के मूंह को बहुत झटका लगेगा—जिससे घोड़ा चमक जावेगा॥

रास उलझने चाहिये का अंदेशा.

तस्वीर नं. ४०—छिरेक गाड़ी.
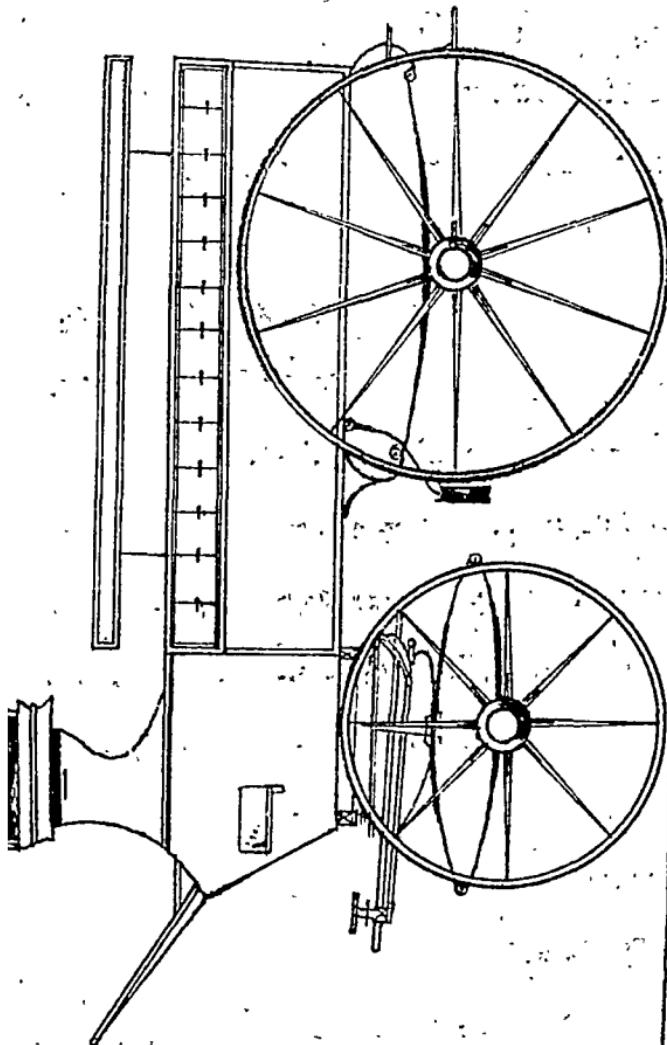
घोड़े इस तरह चमके हुए शायद ही भूलते हों-श्रौर यह खयाल करते हों कि उनके जोत निकालदिये गये—आगे को यकलख्त बढ़ आवेंगे—जिस्से हमेशा खतरे का अंदेशा है—क्योंकि हनोज़ घोड़े को बमों से निकालने भी न पाये हैं—कि घोड़ा सामने को उछल पड़ेगा—इसी सबब से पुश्तंग पट्टी हमेशा जोत खोलने से पहले खोलना चाहिये॥

बमों में से यकलख्त निकलने से घोड़े को रोकना.

ऐसे ऐबदार घोड़े को दुरुस्त करने की यह बहुत उमदा तरकीब है—कि उसको दीवार या कोने के पास जहां वह आगे को न बढ़ सके-लेजाकर जोत खोले और गाड़ी को पीछे हटा लेवे॥

अपसअलमें बेलन का महावरा करना.

जो घोड़ा चोकड़ी में अगल में चलाने को है उसको किसी क़दर बेलन का महावरा होना चाहिये—एक बेलन को इस तरह बांधो कि बेलन उसके

फ़ीचों पर लटकता रहे-जिस वक़्त वह अस्तबल में खड़ा रहता है॥

आख़ीर में मुबतदी को यह मसला याद दिलाता हूं—अहतियात इलाज से बेहतर है—और गाड़ी में घोड़ा निकालते वक़्त शुरू से बहुत अहतियात रखना चाहिये—क्योंकि जब नया घोड़ा एक मर्तबा चमक गया—या चोट लग गई हो—तो उसको दूसरी मर्तबा उस हरकत से बाज़ रखना बहुत मुशकिल है—सिर्फ़ शुरू की दो तीन मर्तबे की व अहतियाती और लापरवाई से घोड़े गाड़ी के काम से ख़ारिज होगये हैं—या तमाम उमर के लिये चमक पड़ गई है॥

मैं भरोसा करता हूं कि उस मुब-तदी को जो इस किताब पर हावी हो गया है—मालूम होगा कि हांकने की असलियत और उसूल उसके बख़ूबी

ज़हन-नशीन होगये हैं—और मुझ को उम्मेद है—कि उसका इश्तियाक़ यहां तक बढ़ेगा—कि कुल उसूलों को महावरे में डालकर आख़िरकार अव्वल दर्जे का कोचवान होगा॥

॥ इति श्री ॥